Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

## श्रीरावणकृत–शिवताण्डव–स्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्यलम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादमड्डमर्वयं
चकारचण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥१

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी–
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर–
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा–
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं विभर्तुभूतभर्तरि ॥४

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर–
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥५

ललाटचत्वरज्ज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा–
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालिसम्पदे शिरोजटालमस्तु नः ॥६

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल–
द्धनञ्जयाधरीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक–
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने मतिर्मम ॥७

नवीनमेघमण्डली निरुद्धदुर्धरस्फुर–
त्कुहू निशीथिनीतमः प्रबन्धबन्धुकन्धरः ।

( शेषांश कवर पृष्ठ ३ पर देखें )

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

# नित्यकर्म विधि
## तथा
# देवपूजा पद्धति

( संक्षिप्त विवाह-पद्धति युक्त )

प्रकाशक
राजकुमार सुरेका

ठाकुरदास सुरेका चैरिटी फंड
सलकिया, हवड़ा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आदि संग्रहीता : स्व० पं० मायाप्रसादजी शास्त्री
प्रथम से षोडश संस्करण तक : ३,४५,००० प्रतियाँ
वर्तमान सप्तदशम संस्करण : २०,००० प्रतियाँ

विक्रम संवत् २०५२

पुनर्मुद्रणाधिकार प्रकाशकाधीन

मुद्रक
**दी इउरेका प्रिंटिंग वर्क्स प्रा० लि०**
१५/ गोदौलिया, वाराणसी-१

लेज़र कंपोजिंग
**सहित प्रकाशन**
दुर्गाकुंड, वाराणसी-५

प्राप्ति-स्थान
**ठाकुरदास सुरेका चैरिटी फंड**

प्रधान कार्यालय :
सेठ हरदयाल सुरेका लेन
सलकिया, (हवड़ा)
दूरभाष : ६६५५४८०

शाखा कार्यालय :
श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मंदिर
दुर्गाकुंड, वाराणसी-५
दूरभाष : ३१०७२०

**विशेष** : डाक द्वारा पुस्तक केवल वाराणसी कार्यालय से ही सुलभ हो सकती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

# सम्पादकीय

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।
लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि ।।

—भगवान् श्रीकृष्ण

मानव चरमोत्कर्ष प्राप्ति के लिये सदा-सर्वदा प्रयत्नशील रहा है । उत्तमोत्तम कर्म से ही प्राणी मनुष्य से देवता एवम् अधमातिधम कर्मों से दानव रूप धारण करता चला आ रहा है । विश्वसभ्यता में भारत कर्म-प्रताप से ही सदा अग्रणी रहा है । लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण ने भी कर्म को सर्वोपरि सिद्ध करते हुए अर्जुन को महाभारत के लिये उद्यत किया था। इतना ही नही, परमवीतराग अमलात्मा परमहंस विदेहराज जनक आदि महात्मा भी आसक्ति रहित कर्म द्वारा ही परम सिद्धि को प्राप्त हुए थे ।

सलकिया (हवड़ा) का सुरेका परिवार सेठ श्रीविष्णुदयाल सुरेका के समय से आज तक सत्कर्म मे सदा तत्पर रहा है । इसी वंश में उत्पन्न परम भागवत सत्कर्मनिष्ठ सेठ श्रीठाकुरदास सुरेका ने अनुभव किया कि कलिजनित क्लेशों के निवारणार्थ एक उचित शास्त्रविधि युक्त कर्म-निर्देशिका का निर्माण होना चाहिये, जिससे अल्पज्ञ भी समुचित लाभ उठा सकें । ऐसी स्थिति में उन्होंने अपने पूज्य गुरुवर्य परम वीतराग महात्मा आचार्य मायाप्रसादजी महाराज (जामनगर-सौराष्ट्र) से आग्रह किया कि वे एक ऐसा लघुग्रन्थ तैयार करने की कृपा करें जिसके अनुसार कर्म कर के मानवमात्र ऐहलौकिक एवम् पारलौकिक कल्याण को प्राप्त कर सके ।

महाराजश्री के निर्देश एवम् भारत के गणमान्य विद्वानों के सहयोग से, श्रुति-स्मृति-पुराण-गृहसूत्रों का सारसर्वस्व यह लघु संग्रह सर्वसाधारण के लाभार्थ प्रकाशित होने लगा तथा आज तक लाखों-लाखों आस्तिक सज्जनों ने इससे लाभ उठाया ।

पूज्य प्रपितामह सेठ श्रीठाकुरदास सुरेका एवम् पिता श्रीरतनलाल सुरेका के स्वर्गवास के पश्चात् वर्तमान प्रकाशक सेठ श्रीराजकुमार सुरेका भी उक्त कार्य में तन-मन-धन से तत्पर हैं । अब तक इस पुस्तक के संस्करणों की लगभग साढ़े तीन लाख प्रतियाँ प्रकाशित हो धर्मार्थ वितरित हो चुकी हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


प्रभुकृपा से अब सप्तदशम् संस्करण आप के हाथों में है। दुरूह स्थलों को लोकोपयोगी एवम् सरल बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है। इतना ही नही, आप श्रद्धालुजनों से प्राप्त स्तुत्याग्रह से प्रेरित हो यथासंभव स्थलों में परिवर्तन तथा वृद्धि के साथ विवाह पद्धति का भी समावेश किया गया है।

भारतीय धर्म एवम् संस्कृति के आधारस्तम्भ, यतिचक्रचूडामणि, पूज्य गुरुवर्य अनन्तश्रीविभूषित ब्रह्मस्वरूप स्वामी करपात्रीजी महाराज ने कृपा कर जो भूमिका रूप में आशीर्वाद प्रदान किया था, उससे इस महान संग्रह के गौरव की वृद्धि हुई है। इसके लिये हम उनकी अहैतुकी कृपा के लिये सदा आभारी हैं।

मानव शिक्षण संस्थान, वाराणसी के संस्थापक, पंडितराज आचार्य श्रीलालबिहारी शास्त्रीजी ने अपने अमूल्य एवम् व्यस्त समय में भी वर्तमान संस्करण की सफलता के लिये अनेक स्थलों पर जो शास्त्रीय सुझाव दिये हैं, उनके लिये हम सदा आभारी हैं।

सर्वाधिक साधुवाद के पात्र सेठ राजकुमार सुरेका हैं। जिन्होंने इस धर्मकार्य में उदारतापूर्वक सहयोग प्रदान कर आस्तिकों को लाभान्वित किया।

अन्त में, कृपालु पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वर्तमान संस्करण के प्रूफ-संशोधन का कार्य श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मन्दिर के मानस पुस्तकालयाध्यक्ष चि. त्रिलोचनप्रसाद शर्मा ने किया है। मानवीय उन्माद के फलस्वरूप जो भी त्रुटियाँ रह गई हों, उन्हे सुधार कर हमें सूचित करने की कृपा करें, जिससे आगामी संस्करण को और भी उत्तमरूप में प्रकाशित किया जा सके।

इत्यलम्

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

*बटुकप्रसाद शर्मा शास्त्री*

वैक्रमाब्द २०५२

अधीक्षक

श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मंदिर

वाराणसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीहरिः ॥

# ब्रह्मस्वरूप परमपूज्य स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज की सुभाशंसा

## स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः

वर्णाश्रमानुसारी वैदिक सनातन धर्मशास्त्र-सम्मत स्वधर्मानुष्ठान ही सर्वेश्वर सर्वशक्तिमान् भगवान् की महती सपर्या है। इन्ही श्रौत-स्मार्त कर्मों का समावेश अष्टचत्वारिंशत् संस्कारों में भी होता है। जैसे हीरक आदि रत्न निघर्षणादि संस्कारों द्वारा मलापनयन पूर्वक संस्कृत होकर चमत्कृत होते हैं, वैसे ही जन्मना ब्राह्मणादि चातुर्वर्ण्य संस्कारों से ही प्रसीद (तेजस्वी) होते हैं।

गर्भाधानादि संस्कारों से भी मलापनयन, अतिशयाधानादि द्वारा आत्मशुद्धि विधान में ही तात्पर्य है—

**गार्भैर्होमैजतीकर्म चौड मौंजी निबन्धनै।**
**बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपभृज्यते॥**
**स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैः त्रैविधेनेज्यया सुतैः।**
**महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः॥**

—मनुस्मृति, २/२७-२८

अर्थात् गर्भाधानादि संस्कारों द्वारा बीजादि निहित पैतृक दोष और गर्भवासादि प्राप्त अशुचिप्राय मातृक दोष दूर होते हैं तथा स्वाध्याय-व्रतादि द्वारा शरीरावच्छिन्न आत्मा में ब्रह्मप्राप्ति की योग्यता आती है। यह भगवान् मनु का कहना है।

भगवदाराधन-बुद्धि से अनुष्ठित नित्य-नैमित्तिक कर्मों का अन्तःकरणादि कार्यकरण संघात की शुद्धि होती है तथा अन्तःकरण शुद्धि से ही—(१) नित्यानित्यवस्तु विवेक, (२) इहामुत्रार्थफलभोग विराग, (३) शमदमादि षट्साधन सम्पत्ति और (४) मुमुक्षत्व—यह साधनचतुष्टय प्राप्त होते हैं। तभी प्राणी भगवत्तत्त्व विज्ञान एवम् भगवद्भक्ति में परिनिष्ठित होकर कृतार्थ होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



नित्य-नैमित्तिक कर्मों के अनुष्ठान बिना भक्ति अथवा तत्त्वज्ञान की प्राप्ति नही होती, अतः जीवन की सफलता के लिये नित्य-नैमित्तिक कर्मों का अनुष्ठान अनिवार्य है।

**सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु।**

अर्थात् सन्ध्यादि नित्यकर्मों के अनुष्ठान बिना द्विज सर्वथा अशुचि (अपवित्र) एवम् सभी कर्मों के अयोग्य रहता है।

जन्मना वर्णव्यवस्था होने पर भी उसमें सत्कर्मों से उत्कर्ष एवम् दुष्कर्मों से अपकर्ष होता है। इसलिये आचार्य सर्वप्रथम द्विज का उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार कर के उसे शौचाचार की शिक्षा देकर अग्रिम सर्वकर्मों एवम् पुरुषार्थों के योग्य बनाता है।

यद्यपि धर्मशास्त्रों में सांगोपांग सभी विधानों का वर्णन है ही, तथापि अधिकारी जनों की सुविधा के लिये ऐसी नित्यकर्म पद्धति का संकलन आवश्यक था जिससे कि अधिकारी लोग अधिकाधिक लाभ उठा सकें।

श्रीरतनलालजी सुरेका द्वारा प्रकाशित 'नित्यकर्म विधि तथा देवपूजा पद्धति' से यह कार्य अच्छे ढंग से सम्पन्न हो सकता है। इसमें प्रातःस्मरण, शौच, दन्तधावन, स्नान, सन्ध्या, तर्पण, बलिवैश्वदेव एवम् विविध देवों की पूजा का सरल तथा प्रामाणिक वर्णन है, और उसके साथ ही संक्षेप में अनेक ज्ञातव्य बातें लिखी गई हैं। इस एक पुस्तक के द्वारा संक्षेप में सनातन धर्म की आवश्यक ज्ञातव्य वस्तुओं का अनुष्ठानोपयोगी ज्ञान हो सकता है।

श्रीगंगादशहरा
२०३७ वै० करपात्री स्वामी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

# प्रकाशक वंश परिचय

'ठाकुरदास सुरेका चैरिटी फंड', उसके संस्थापक स्व. सेठ ठाकुरदास सुरेका, स्व. सेठ रतनलाल सुरेका एवं उनकी वंश-परम्परा के विषय में जिज्ञासायुक्त पत्र आते रहते हैं। पृथक्-पृथक् व्यक्तिगत रूप से उन सभी का उत्तर देना संभव नही हो पाता। अतः समष्टिरूप में तत्सम्बन्धी संक्षिप्त परिचय 'नित्यकर्म विधि तथा देवपूजा पद्धति' के इस सत्रहवें संस्करण में प्रकाशित किया जा रहा है।

सेठ ठाकुरदास सुरेका के पितामह सेठ विष्णूदयाल सुरेका का जन्म राजस्थान स्थित रामगढ़ के एक सम्मान्य अग्रवाल वैश्य परिवार में हुआ था। उस समय राजस्थान में शिक्षा का विशेष प्रचार न होने से वे व्यापारिक शिक्षा मात्र प्राप्त कर सके। किशोरावस्था में ही व्यापार के लिये घर से निकल पड़े और मथुरा में अपना कारोबार फैलाया, जिसमें उन्हे पर्याप्त सफलता मिली। इससे प्रोत्साहित होकर वे मथुरा छोड़ कर वाणिज्य के प्रमुख केन्द्र कलकत्ता नगर में आ बसे। यहां पहुंचने पर उनके सुपुत्र सेठ हरदयाल सुरेका ने व्यापार का सम्पूर्ण भार अपने ऊपर ओढ़ लिया अपनी योग्यता एवं कार्यक्षमता के बल पर उन्होंने व्यापार को बहुत बढ़ाया और भारत के प्रमुख बड़े नगरों में अनेक शाखाएं स्थापित कीं। उनका प्रधान व्यापार किरासन तेल था और उस समय उस पर उनका एकाधिपत्य था। सेठ विष्णूदयाल सुरेका ने दो बार सम्पूर्ण तीर्थों की पद-यात्रा पूर्ण की और अपने सुयोग्य पुत्र सेठ हरदयाल सुरेका द्वारा वाणिज्य तथा गृहस्थी दोनों का कार्यभार सुचारु रूप से सम्भाल लेने पर निश्चिन्त होकर काशी रहने लगे। यहां उन्होंने मणिकर्णिका के समीप ब्रह्मनाल मुहल्ले में श्रीविष्णुदयालेश्वर नाम से शिव-मन्दिर प्रतिष्ठित किया और भगवान् शंकर की आराधना करते हुए शिवलोकवासी हुए। उनके दिवंगत होने पर सेठ हरदयाल सुरेका ने सलकिया, हवड़ा में श्रीसत्यनारायण मन्दिर एवं धर्मशाला का निर्माण तथा उनके संचालन हेतु श्रीसत्यनारायण ट्रस्ट की स्थापना कर महान यश अर्जित किया और अन्यान्य स्थानों पर भी बहुतेरे धर्मकार्य करके स्वर्गवासी हुए। उनके बाद मन्दिर तथा न्यास की सुव्यवस्था उनके सातों पुत्रों क्रमशः सेठ दुर्गाप्रसाद सुरेका, सेठ मथुराप्रसाद सुरेका, सेठ रामप्रसाद सुरेका, सेठ मुरलीधर सुरेका, सेठ नन्दराम सुरेका, सेठ लक्ष्मीनारायण सुरेका और सेठ ठाकुरदास सुरेका की देख-रेख में सुचारु रूप से चलती रही। सम्प्रति इन्हीं सातों भाइयों के पौत्र-प्रपौत्र उनका सफल संचालन कर रहे हैं। यों तो श्रीसत्यनारायण मन्दिर में वर्ष भर के सभी उत्सवादि का आयोजन शास्त्रोक्त विधि-विधान पूर्वक होता ही रहता है, किन्तु श्रावण मास में भूलनोत्सव विशेष समारोह पूर्वक सम्पन्न होता है जिसके वैशिष्ठ्य एवं अपूर्वता से स्थानीय भलीभांति परिचित हैं। इसी न्यास के द्वारा यात्रियों के निवास की सुख-सुविधा हेतु मथुरा, वाराणसी, रानीगंज, फतेहपुर, रामगढ़, लोहानी आदि स्थानों में धर्मशालाओं का निर्माण कराया गया है।

**स्व. सेठ ठाकुरदास सुरेका**—सेठ हरदयाल सुरेका के आत्मज सेठ ठाकुरदास सुरेका का जन्म हवड़ा जिलांतर्गत बांदाघाट, सलकिया में संवत् १९३३ वै. में हुआ। कनिष्ठ पुत्र होने के कारण वे विशेष लाड़-प्यार में पले। इनका विवाह किशोरावस्था में ही हो गया था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


सौभाग्य से इनको इतनी सुशील एवं विदुषी धर्मपत्नी मिलीं, जिनके सुविचार, सुव्यवस्था तथा सत्परामर्श के कारण इन्हे जीवन में बहुत बड़ा सहारा मिला।

यौवनावस्था में प्रवेश करते ही इन्हें पितृ-वियोग सहन करना पड़ा। प्रतिदिन प्रातःकाल आगत भिक्षुओं को अपने हाथों से भिक्षा अर्पित करना तथा अतिथियों को स्वयं भोजन कराना इनकी दैनिक परिचर्या थी। यौवनकाल से प्रौढावस्था तक अपने आत्मज सेठ गोविन्दराम सुरेका के साथ सेठजी ने अनेक बार व्यापार में परिवर्तन किया, फिर भी सफलता ने साथ नही दिया। संवत् १९७७ की विजयादशमी के शुभ मुहूर्त में ढलाई कारखाने की स्थापना के दिन से इनकी सफलता का श्रीगणेश होता है। उक्त कारखाने की उन्नति के लिये सेठ गोविन्दराम ने अपना पूर्ण योगदान दिया। कारखाने की उत्तरोत्तर उन्नति के साथ-साथ उनका स्वास्थ्य क्रमशः गिरता गया। व्यापार में अत्यधिक व्यस्त होते हुए भी सेठ गोविन्दराम सुरेका ने दान, धर्म और देवार्चन की अवहेलना नही की । वे परम भावुक, भक्त और धार्मिक मनोवृत्ति के व्यक्ति थे। रोगग्रस्त होने पर वे प्रायः काशी में ही रहने लगे, जहां ३५ वर्ष की अल्पायु में ही उनका देहावसान हो गया।

सेठ ठाकुरदास सुरेका ज्ञानी होने के कारण पुत्र-शोक के भीषण वज्रपात को ईश्वरेच्छा समझ कर सहन कर गए। उनकी विधवा पुत्रवधू भागीरथी देवी ने पति-वियोग के पश्चात् अपना शेष जीवन देवार्चन करते हुए काशी में ही व्यतीत किया। सेठ ठाकुरदास सुरेका अपने पौत्र सेठ रतनलाल सुरेका पर ध्यान केन्द्रित कर व्यापार में प्रवृत्त हुए और इन्हें बराबर सफलेता मिलती गई। इस सफलता का सदुपयोग उन्होंने सर्वप्रथम ठाकुरदास सुरेका चैरिटी फंड की स्थापना कर किया। इस न्यास के माध्यम से उन्होंने लोकहितकारी अगणित कार्य किये, जिनमें वाराणसी के मणिकर्णिका घाट के समीप ब्रह्मनाल मुहल्ले की तथा विलासपुर, अमरकंटक की धर्मशालाएं, जयपुर के वनस्थली विद्यापीठ के अन्तर्गत निर्मित गृह-शिक्षा भवन, सलकिया हवड़ा के नन्दीबगान मुहल्ले में स्थित ठाकुरदास सुरेका फ्री प्राइमरी स्कूल, बेलूर के दीन-दुखी लालबाबा आश्रम में स्थित यज्ञशाला और छात्रावास, सलकिया की स्मशानभूमि का विश्रामगृह तथा सलकिया के बांदाघाट का प्याऊ विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। वाराणसी के हरिहरक्षेत्र में आज भी पूर्ववत् चल रहा अन्नक्षेत्र, रामगढ़ (राजस्थान) में वैवाहिक कार्यों की विधिवत् सम्पन्नता के हेतु निर्मित नौहरें एवं विभिन्न तीर्थस्थानों के जीर्णोद्धार किये गए अनेकानेक देवालय सेठ ठाकुरदास सुरेका की महती उदारता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। उनके द्वारा स्थापित न्यास से ही प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन एवं धर्मार्थ वितरण अनेक वर्षों से निरन्तर हो रहा है।

महाप्रस्थान का समय निकट देख ठाकुरदास सुरेका ने गायत्री-पुरश्चरण महायज्ञ आयोजित किया, जिसमें दूर-दूर से उक्त विषय के विशेषज्ञ शास्त्रविद् आमन्त्रित होकर पधारे थे। स्वरुचि का कार्य होने से इस महायज्ञ में उन्होंने मुक्तहस्त से अर्जित धनराशि का सदुपयोग किया। संवत् २००५ वि. की मार्गशीर्ष चतुर्थी को अर्धरात्रि के समय चिकित्सकों ने सेठजी के शरीर को जीवात्मारहित घोषित कर दिया। अतः भूमि-शय्या के निमित्त उनका शरीर भवन के प्रांगण में उतारा गया। उस समय उपस्थित सभी व्यक्तियों ने साश्चर्य उन्हें अपने पौत्र सेठ रतनलाल सुरेका को सम्बोधित कर यह कहते हुए सुना कि 'तुमने बड़ी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रधान पितरः प्रोक्ता श्राद्धतर्पणकर्मणः ॥

प्रकाशक के पूज्य प्रपितामह

स्वर्गीय सेठ श्रीठाकुरदासजी सुरेका

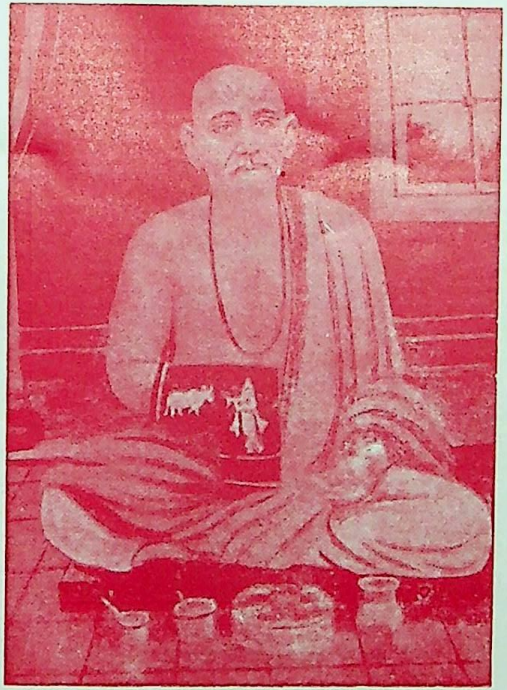

प्रकाशक के पूज्य वृद्धप्रपितामह

स्वर्गीय सेठ श्रीहरदयालजी सुरेका

पिता पितामहश्चैव प्रपितामह एव च ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक के पूज्य पितामह
स्वर्गीय सेठ श्रीगोविन्दरामजी सुरेका

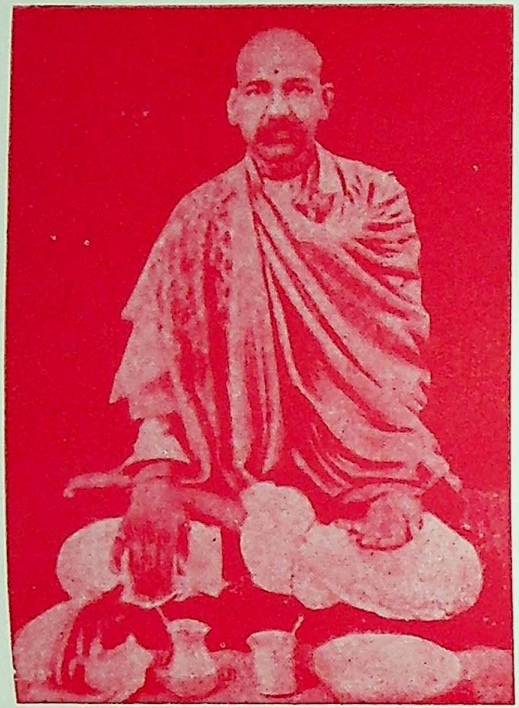

पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परमं तपः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक के पूज्यपिता
स्वर्गीय सेठ श्रीरतनलालजी सुरेका

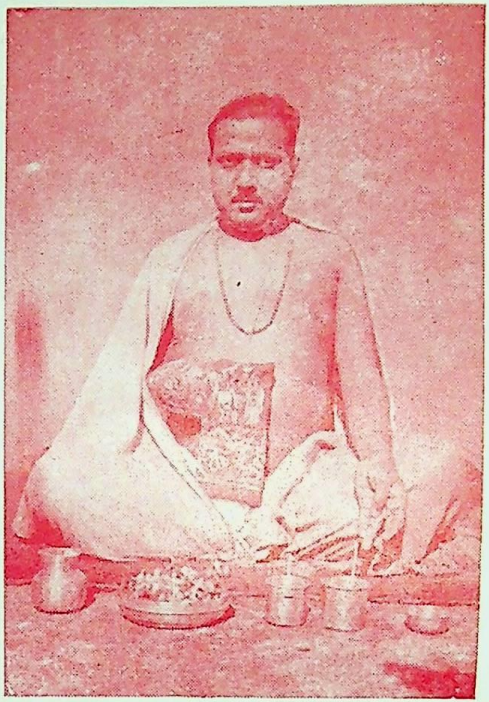

पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्व-देवताः ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



शीघ्रता की। इष्टदेव (भगवान् श्रीसत्यनारायणजी) के दर्शन किये बिना मै कैसे जा सकता हूं ? उनके पट तो ५ बजे खुलेंगे'। सचमुच ही भगवान् के पट खुलते ही उनका अनन्य सेवक अन्यों को स्वकर्म का सत्य-मार्ग प्रदर्शित कराता हुआ अनन्त में विलीन हो गया।

**स्वर्गीया श्रीमती भागीरथीदेवी सुरेका**—सेठ गोविन्दराम सुरेका की धर्मपत्नी श्रीमती भागीरथीदेवी धर्मनिष्ठ महिला थीं। उनका समय अहर्निश पूजार्चन में ही व्यतीत होता था। उन्होंने ब्रह्मनाल, वाराणसी स्थित भागीरथीश्वर के मन्दिर का जीर्णोद्धार तथा दीन-दुखी लालबाबा के बेलूर स्थित आश्रम में रामायण-भवन का निर्माण कराया। इनके अतरिक्त अनेक स्थानों पर धर्मशालाएं तथा कक्ष भी बनवाए। काशीधाम में एक ऐसे अद्वितीय मन्दिर का निर्माण उनकी प्रबल आकांक्षा थी, जो इस देवालयपुरी के दर्शनीय स्थानों में परिगणित हो। अनेक बार प्रयत्न करने पर भी अपने जीवनकाल में मनःकामना की पूर्ति होते न देख उन्होंने सेठ रतनलाल सुरेका को उसके लिये वचनबद्ध किया, क्यों कि वे पूर्णरूप से आस्वस्थ थीं कि उनका पुत्र बात का धनी है, जो प्राणों की परवाह न कर अपने प्रण का पालन करता है। पुत्र के प्रतिज्ञाबद्ध होने पर उनके मन को बड़ी शान्ति मिली और वे निश्चिन्त होकर संवत् २०१० वै. कार्तिक कृष्ण ३० को सदैव के लिये शान्त हो गईं।

पूजनीया माता श्रीमती भागीरथीदेवी के स्वर्गारोहण के पश्चात् सेठ रतनलाल सुरेका ने उनकी पावन स्मृति में श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मन्दिर को प्रतिष्ठित कर उनकी मनोकामना को साकार रूप प्रदान किया। यह देवालय वाराणसी के सुप्रसिद्ध मन्दिरद्वय श्रीदुर्गाजी तथा श्रीसंकटमोचन हनुमानजी के मध्य में स्थित है और आधुनिक युग की एक दर्शनीय अनुपम कलाकृति है। इसके निर्माण में सेठजी ने अपने तन-मन-धन तीनों का समन्वय कर भारत को एक अमूल्य निधि भेंट की है। इसमें देव विग्रहों के तीन मन्दिर हैं, जो एक-दूसरे से संयुक्त हैं। मध्य के मन्दिर में श्रीहनुमान सेवित श्रीराम-लक्ष्मण-जानकी, उनके दक्षिण के मन्दिर में माता अन्नपूर्णा के समक्ष खप्पर फैलाए भगवान् भोलेनाथ तथा बांए मन्दिर में भगवान् सत्यनारायण श्रीलक्ष्मी सहित विराजमान हैं। 'राम तें अधिक रामकर दासा' के अनुसार सेठजी ने इस मन्दिर में रामभक्त गोस्वामी तुलसीदास की प्रतिमा भी श्रद्धापूर्वक प्रतिष्ठित की । जिसके समक्ष अहर्निश उनकी अद्वितीय विश्वश्रुत श्रीरामचरितमानस का अखण्ड पाठ नियमित रूप से होता है। साथ ही सम्पूर्ण श्रीरामचरितमानस को मन्दिर की संगे-मरमर की भित्तियों पर उत्कीर्ण कराकर सेठजी ने उस अमूल्य राष्ट्र-निधि की स्थायी सुरक्षा की है। मन्दिर के चतुर्दिक् निकुंज-वाटिकाएं सर और सागर के साथ-साथ मन्दिर, ऋषि-कुटीर आदि से सुशोभित हिमालय की धवल चोटी पर विराजमान भगवान् सदाशिव की जटा से निरन्तर प्रवाहमान जटाशंकरी की कल-कल ध्वनि मन को बरबस मोह लेती है और दक्षिण के रामेश्वर-मन्दिर में भक्तों द्वारा उच्चरित स्तोत्र-पाठ एवं वैदिक विद्वानों का सस्वर वेद-गान दर्शकों को त्रेतायुग का स्मरण दिलाता है।

**सेठ रतनलाल सुरेका**—ये वह व्यक्ति थे, जिनकी धवलकीर्ति से सुरेका वंशाकाश चिरन्तनकाल तक आलोकित होता रहेगा। इनका नाम स्वयं ही इनके परिचय के लिये पर्याप्त है। 'रतनलाल सुरेका' नाम लेने मात्र से सुरेका वंश के वर्तमान ही नहीं, गत और आगत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



पीढ़ियों के महानुभावों का भी परिचय सहज ही मिल जाएगा। अपने पितामह स्व. सेठ ठाकुरदास सुरेका के जीवनकाल में ही इन्होंने वाणिज्य के साथ-साथ उनके समस्त धार्मिक कार्यों का महद् भार भी सम्भाल लिया था। उनके विशिष्ट गुण दया-धर्म और श्रद्धा-विश्वास की प्रतिच्छाया पूर्णरूप से इन पर पड़ी थी। वे उनके सद् उद्देश्यों को अग्रसर करने में सदा तत्पर रहे थे।

प्रातःस्मरणीय सन्त गोस्वामी तुलसीदासजी पर अटूट श्रद्धा होने के कारण वे सुनाम और सदुपदेशों के प्रचार-प्रसार के लिये सदा तत्पर रहते थे। श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मंदिर, श्री सत्यनारायण तुलसी मानस सेवा संस्थान, तुलसी मानस अन्ध विद्यालय, तुलसी शोध संस्थान, मानस पुस्तकालय एवं वाचनालय, 'मानस-मयूख' शोध पत्रिका, मोहन मानस पुरस्कार आदि इस तथ्य की वास्तविकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। धर्म या सम्प्रदाय, जाति या वर्ण, उच्च या नीच, किसी भी प्रकार की भेदबुद्धि से सर्वथा निलिप्त होकर, यहां तक कि पात्र या अपात्र का भी विचार किये बिना, इनके दान की अक्षुण्ण-धारा निरन्तर प्रवाहमान थी। धोखे में कहीं सुपात्र को भी वंचित न रह जाना पढ़े और 'ना जाने किस भेष में नारायण मिल जाएं'–ये तथ्य बराबर इनकी दृष्टि में रहते थे।

ये अति विनम्र स्वभाव के संकोची व्यक्ति थे। धोखे में ही सही, यदि किसी की बांह पकड़ ली हो; स्वयं तो उसे निभाते ही थे, दूसरों से भी उसकी संस्तुति कर देते थे। अहं का रंचमात्र भी इनमें लवलेश नहीं था। आत्म-प्रशंसा सुनने के ये एकदम अभ्यस्त नहीं थे।

अपने पितामह द्वारा स्थापित 'ठाकुरदास सुरेका चैरिटी फंड' के माध्यम से इन्होंने बहुत-सी लोकोपयोगी सेवाएं की थीं। जिनमें मोहनलाल सुरेका हॉस्पिटल, रामगढ़ (राजस्थान), ठाकुरदास सुरेका बाल उद्यान तथा मोहनलाल सुरेका कमर्शियल एंड टैक्निकल स्कूल, सलकिया (हवड़ा), विशुद्धानन्द सरस्वती दातव्य औषधालय, कलकत्ता का ऑपरेशन रूम, ब्रज-सेवा-समिति टी वी सैनेटोरियम के भवन-निर्माण में योगदान, बृन्दावन के परिक्रमा-मार्ग में पुल आदि के निर्माण में योगदान उल्लेखनीय हैं। ये तो प्रत्यक्षदान के संक्षिप्त विवरण थे, गुप्तदान तो इससे कहीं अधिक हैं, जिनका लेखा-जोखा स्वयं उनके पास नहीं था।

नित्यकर्म विधि तथा देवपूजा पद्धति के प्रकाशन में इनकी विशेष अभिरुचि थी, जिसके परिणाम स्वरूप उसके प्रस्तुत संस्करण में पर्याप्त संशोधन-परिवर्तन एवं परिवर्धन हो सका। पूर्व की अपेक्षा उसकी उपयोगिता में महती अभिवृद्धि हुई है। वे बराबर कहते रहते थे कि **ऋषि-प्रोक्त धर्म एवं उनके द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का अवलम्बन करने से ही हमारा और सभी का कल्याण होना संभव है। इस पुस्तक के अनुसार नित्य-नियमित रूप से कर्म करता हुआ प्राणी एक दिन अवश्य अपने ठीक लक्ष्य तक पहुंच जाएगा। यदि इससे कुछ लोग भी प्रेरणा प्राप्त कर लाभान्वित हुए तो इसका प्रकाशन सार्थक होगा।**

गृहस्थ और व्यवसायी होते हुए भी सेठ रतनलाल सुरेका की प्रवृत्ति विरक्तों जैसी थी। दुर्दिन की प्रचंड वर्षा भी आप के धैर्य को विगलित या विचलित नहीं कर पाई। कोई भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



परिस्थिति इन्हें धर्म-पथ से विरत करने में असमर्थ थी। ऐसे ही उच्चादर्श वाले महान् पुरुषों से समस्त मानव का कल्याण होता है।

जीवन के अन्तिम वर्षों में वे काशीवास करते हुए मन्दिर की चतुर्दिक श्री-वृद्धि के लिये अधिक प्रयत्नशील रहे। मानस-प्रदर्शनी को स्थायित्व प्रदान करने के साथ-साथ उन्होंने राम-काव्य के अध्येताओं के लिये श्रीराम काव्य संग्रहालय एवं मुमुक्षुओं के लिये श्रीशिवराम सखा-बैंक का निर्माण कराया जो कि विश्व में अपने ढंग का अद्वितीय प्रयास था। भारतीय संस्कृति के महान गायक गो. तुलसीदासजी के जीवन से सर्वसाधारण को परिचित कराने की दृष्टि से तुलसी दृश्यावली का भी निर्माण आरंभ कराया।

और कार्तिक कृष्ण षष्टी, २०३९ वि., शनिवार इस महासन्त के महाप्रयाण का दिन बनकर उपस्थित हुआ। मध्याह्न में नाममात्र का प्रसाद ग्रहण करने के पश्चात् विश्राम-कक्ष में पद्मासन लगाकर बैठ गए। अर्द्धांगिनी ने विनोद में पूछा, क्या बात है, आज संन्यासी बनने की ईच्छा है? (क्यों कि उन्होने जीवन में कभी भी श्रीरतनलाल सुरेका को पद्मासनस्थ नहीं देखा था) उत्तर में मात्र एक मधुर मुस्कान थी। लगभग ३ घंटे वे ध्यानस्थ बैठे रहे। मैंने कहा, सेठजी! सत्यदेव भगवान् का स्मरण किया जाय। उत्तर था, उन्ही का स्मरण कर रहा हूं। आज तक उनसे भिन्न तो मैंनें किसी को ध्याया ही नहीं। और लगभग ३ घंटे एक आसन पर बैठै-बैठै वह ध्यानमग्न दिव्यात्मा परमात्मा में लीन हो काशी में शिवसायुज्यत्व को प्राप्त हो गया। इनका आदर्श वाक्य था—*सीय राम मय सब जग जानी। करौं प्रनाम जोरि जुग पानी।।*

**श्रीमोहनलाल सुरेका**—प्रकाशक के ज्येष्ठ भ्राता श्रीमोहनलालजी सुरेका भी अपने पितामह श्रीगोविन्दराम सुरेका की भांति ही पूर्वजन्म के शेष ऋणानुबन्ध से मुक्त होने पृथ्वी पर आए थे। १६-१७ वर्ष की आयु में वाणिज्य में स्नातक हो अपने पिता श्रीरतनलाल सुरेका के व्यापार में पूर्ण सहयोग प्रदान करने लग गए थे। मात्र दो वर्ष के प्रयत्न से पिताश्री को कोट्याधीश बनाकर १९ वर्ष की अवस्था में गीता की उक्ति—**शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते**—को चरितार्थ करते हुए, इस असार-संसार को त्याग, अनन्तपथ में विलीन हो गए।

**श्रीराजकुमार सुरेका**—वस्तुतः श्रीराजकुमार सुरेका श्रीरतनलाल सुरेका की प्रतिमूर्ति हैं। वही पिता का-सा सरल स्वभाव, अभिमान रहित आचरण तथा निष्काम कर्म-भावना। आपने अपने पिताश्री के सभी कार्यों में विगत २६ वर्षों से पूर्ण सहयोग देना प्रारंभ कर दिया था। इनके कार्य-कलापों से संतुष्ट हो श्रीरतनलालजी सुरेका, सम्पूर्ण व्यापार-भार इन पर सौंप, वाराणसी में ही विशेष समय व्यतीत करने लग गए थे। यद्यपि श्रीराजकुमार सुरेका धीर एवं प्रत्युत्पन्न प्रतिभा सम्पन्न सफल व्यक्तित्ववान् पुरुष हैं, तथापि पूज्य पिता श्रीरतनलाल सुरेका एवम् पूज्यनीया माता श्रीमती कृष्णादेवी सुरेका द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलने का व्रत लेकर कार्य-क्षेत्र में संलग्न हैं।

***बटुकप्रसाद शर्मा शास्त्री***

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

# श्रीगणेशाथर्वशीर्ष

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् ॥१॥ ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि ॥२॥ अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधस्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् ॥३॥ त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ॥४॥ सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि ॥५॥ त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रस्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥६॥ गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरोऽर्द्धेन्दुलसितं तारेण रुद्धम् एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता संधिः सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः, निचृद् गायत्रीछन्दः, गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः ॥७॥ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥८॥

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्॥
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात् परम्॥
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः॥९॥
नमो व्रातपतये, नमो गणपतये, नमः प्रमथपतये, नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः॥१०॥ एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वतः सुखमेधते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वमहापापात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षम् अशिष्याय न देयम्। यदि मोहाद् दास्यति, स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद् यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्॥११॥ अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यवान् भवति। इत्यथर्ववाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न विभेति कदाचनेति॥१२॥ यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति, स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात्प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति। य एवं वेद। इत्युपनिषद्॥१३॥

*॥ गणपत्याथर्वशीर्षं सम्पूर्णम्॥*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

# मंगलाचरण

श्रीगणेश इह विश्रुतनामा । रामनाम महिमांचित धामा।
भक्तचित्तवांछितकृतपूर्तिः । मङ्गलायतनमङ्गलमूर्तिः ।।
स जयति सिन्दूरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम् ।।
खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम्।
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोल गण्डस्थलम्।
दन्ताघात-विदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरम्।
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कर्मसु ।।
विघ्नध्वान्तनिवारणैकतरणिर्विघ्नाटवीहव्यवाट् ।
विघ्नव्याल-कुलाभिमानगरुडो विघ्नेशपञ्चाननः।
विघ्नोत्तुङ्गगिरिप्रभेदसपविर्विघ्नाम्बुदेर्बाडवः ।
विघ्नाद्योद्यधनप्रचण्डपवनो विघ्नेश्वरः पातु नः ।।
दधानं भृङ्गालीमनिषममबे गंडयुगले।
ददानं सर्वार्थान्निजचरणसेवासुकृतिने।
दयाधारं सारं निखिलनिगमानागनुदितम्।
गजास्यं स्मेरास्यं तमिहकलये चित्तनिलये ।।
मुदाकरात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधनं,
कलाधरावतंसकं विलासि लोकरक्षणम्।
अनासकैकनायकं विनाशितैभदैत्यकं,
नताशुभाशुनायकं नमामि तं विनायकम् ।।
यजामो गणेशं भजामो गणेशं जपामो गणेशं वदामो गणेशम्।
स्मरामो गणेशं स्मरामो गणेशं नमामो गणेशं नमामो गणेशम् ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


मदनदहन के पुत्र को सुमरूँ बारंबार।
विघ्न मिटै संकट कटै मंगल होय अपार ।।
लंबोदर भुज चार हैं, नेत्र तीन रंग लाल।
नाना वर्ण सुवेश हैं, मुख प्रसन्न शशिभाल ।।
विघ्न निवारण सब सुख कारण भक्त उधारण ज्ञानघनम्।
दैत्य विदारण परशू धारण रिद्धी कारण देववरम् ।।
गिरिजा माता षण्मुख भ्राता शंकर ताता सौख्यकरम्।
भूसुर रक्षक मोदक भक्षक ज्ञानी रक्षक कीर्तिकरम् ।।
काटत बन्धन सब दुख खंडन गिरिजा नन्दन पाशधरम्।
दुःख विदारण मंगल कारण कविवर धारण शीशवरम् ।।
शुंडादंडं तेजप्रचंडं इंदूखंडं भालधरम्।
मंगल कारण दुर्जन मारण विपति विदारण ऋद्धिकरम् ।।
करिवदन विमंडित ओज अखंडित पूरण पंडित ज्ञानपरम्।
गिरिनदि नन्दन असुर निकंदन सुर उर चंदन कीर्तिकरम् ।।
भूषण मृग लक्षण वीर विचक्षण जनप्रण रक्षण पाशधरम्।
जय जय गणनायक खलगण घालक दास सहायक विघ्नहरम् ।।

मनाऊँ एकदंत महाराज, सुधारो सभी हमारो काज।
रूप थारो कनक वरण राजै, देखकर महाकाल भाजै ।।
मूरति अति सुंदर साजै, दुख सब दर्शन से भाजै।
बिनती सुण लीजो गणराज, सुधारो सभी हमारे काज ।।
विघ्न हरण गणनाथजी, कृपा करो महाराज।
तुम्हारो अब लियो आसरो, रखियो मेरी लाज ।।

।। शुभम् ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

## श्रीसत्यनारायणजी की स्तुति

सत्यदेव भगवान की सरन सदा सुखखान।
सकल मनोरथ देत प्रभु जो नर कर गुनगान।। १
दीनबन्धु श्रीनाथजी निज जन तारक ईश।
द्रवहु सदा इस दास पै करुनामय जगदीश।। २
परम पिता परमेस हे मैं पतितन सिरताज।
बेगि उबारहु जानि निज करहु सकल सुभकाज।। ३
तुम सम हे करुनानिधे करत कौन उपकार।
अगनित गनिकादिक तरे साखि बेद हैं चार।। ४
दयासिंधु नहि देखते भक्तन के दुखभार।
त्रिविध ताप दुख दूर कर भव से करते पार।। ५
सत्यदेव भगवान की कथा जगत में सार।
सरन तेहि की जो लहै ताहि होत उद्धार।। ६
द्विजवर लकड़ीहार अरु साधु वैश्य परिवार।
चंद्रकेतु अरु तुंगध्वज पाँच कथा जग सार।। ७
इन भक्तों के काज प्रभु प्रगटे बारंबार।
सकल मनोरथ सिद्ध करि दिये पदारथ चार।। ८
जन्म जन्म बिनती यही श्रीचरनों में ध्यान।
सज्जन संगति, हरि भजन, दान, धर्म दृढ़ज्ञान।। ९
स्तुति प्रभु की जो प्रेम से पढ़े कपट तजि नित्त।
चार पदारथ देत तेहि प्रभु मनचाहा बित्त।।१०
बार बार बिनती यही सत्यदेव भगवान।
पार करो भवसिंधु से सेवक अपना जान।।११

इति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो पितु मातु बचन अनुरागी ।

प्रकाशक
श्री राजकुमारजी सुरेका

सुत बनिजे घरि सुत बड़भागी ।

---

शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ।

प्रकाशक के ज्येष्ठ भ्राता
स्वर्गीय श्री मोहनलालजी सुरेका

अथ युक्तस्य तत्रैतद्यथा सम्पदं लभते ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम बाम दिसि जानकी, लषन दाहिनी ओर ।
ध्यान सकल कल्याण जिमि, सुरतरु तुलसी - तोर ॥

श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मन्दिर (वाराणसी) में प्रतिष्ठापित
श्रीरामजी, श्रीजानकीजी, श्रीलक्ष्मणजी एवम् श्रीहनुमानजी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

## श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मन्दिर, वाराणसी में प्रतिष्ठापित—

भगवान् श्रीविष्णुजी एवम् भगवती श्रीलक्ष्मीजी

तव नाम जपामि नमामि हरी, भवरोग महागदमान अरी ।

याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धः स्वान्तस्थमीश्वर ।

बाबा श्रीविश्वनाथजी एवम् माता श्रीअन्नपूर्णाजी

भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीगणेशजी

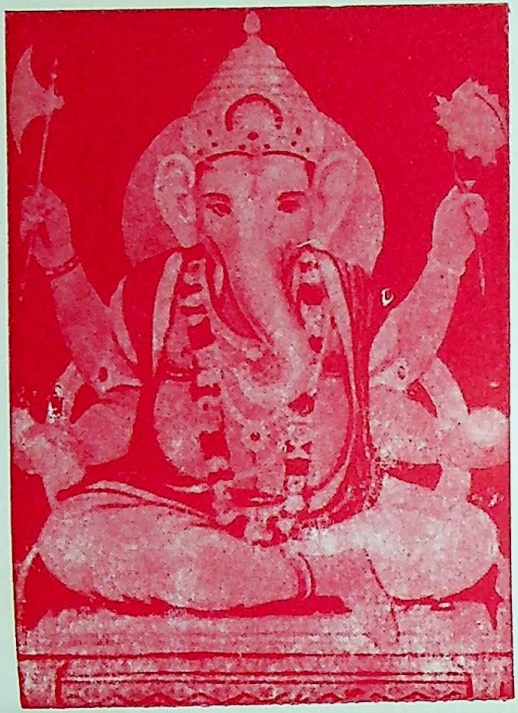

लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम् ।

उद्यद्दिवाकर-विमोज्ज्वलकान्तिकान्तं, विघ्नेश्वरं सकलविघ्नहरं नमामि ॥

श्रीसत्यनारायण मन्दिर, सलकिया (हवड़ा) में प्रतिष्ठापित
श्रीलक्ष्मीजी, श्रीसत्यनारायणजी एवम् श्रीगङ्गाजी

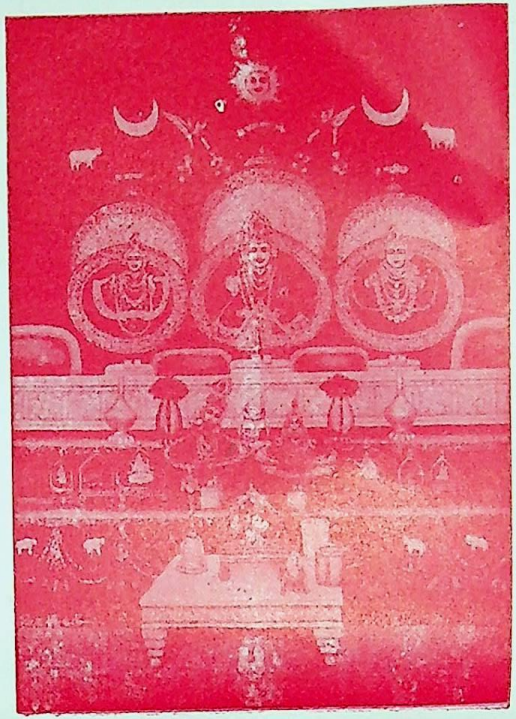

सत्यनारायणं देवं वन्देऽहं कामदं प्रभुम् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

# समर्पण

अनाद्यनन्त ऐश्वर्य-विशिष्ट !

अपरिमित-कोटिब्रह्माण्डनायक !

वेदैकप्रतिपाद्य ! अगणित-आर्तामीष्ट-फलप्रद !

दीनबन्धो ! दीनानाथ ! भक्तवत्सल ! भगवन् !

श्री श्री सत्यनारायण महाप्रभो !

यह

## नित्यकर्म-विधि तथा देवपूजा-पद्धति

रूपी-पुष्प

श्रीचरण-कमलों में सादर समर्पित है

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये

श्रीचरण-सेवक

**राजकुमार सुरेका**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

# विषय सूची


| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| प्रातःस्मरण | २ | देवमंत्र की करमाला | १४ |
| शौच विधि | ३ | आचमन विधि | १५ |
| दन्तधावन विधि | ४ | अर्घ विधि | १५ |
| दतुअन प्रार्थना | ४ | संध्या विधि | १९ |
| मौन विधि | ५ | **प्रातःसंध्या** | १७ |
| उवासी, छींक, थूकना | ५ | पवित्रकरण मंत्र | १८ |
| क्षौर विधि | ५ | आसन पवित्रकरण | १८ |
| तैलाभ्यंग विधि | ५ | आचमन मंत्र | १८ |
| संकल्प | ६ | प्राणायाम विधि | १९ |
| स्नान विधि | ७ | पूरक आदि प्राणायाम | २० |
| तीर्थावाहन | ८ | प्राणायाम मंत्र | २० |
| भागीरथी-प्रार्थना | ८ | आचमन | २० |
| स्नानांग तर्पण | ९ | अर्घ | २२ |
| वस्त्र धारण विधि | ९ | उपस्थान | २२ |
| आसन | १० | षडंगन्यास | २३ |
| शिखा बन्धन | १० | गायत्री ध्यान | २४ |
| तिलक | १० | आवाहन मंत्र | २४ |
| चन्दन धारण विधि | १० | उपस्थान मंत्र | २४ |
| तिलक धारण विधि | १० | गायत्री शाप विमोचन | २४ |
| भस्म धारण विधि | ११ | ब्रह्म शाप विमोचन | २५ |
| भस्म धारण मंत्र | ११ | वशिष्ठ शाप विमोचन | २५ |
| यज्ञोपवीत धारण विधि | ११ | विश्वामित्र शाप विमोचन | २५ |
| यज्ञोपवीत धारण मंत्र | ११ | ब्रह्मस्वरूपा गायत्री ध्यान | २६ |
| जीर्ण यज्ञोवपीत त्याग मंत्र | १२ | गायत्री हृदय | २६ |
| कुशा ग्रहण विधि | १२ | जप के पूर्व की २४ मुद्राएँ | २७ |
| कुशा ग्रहण मंत्र | १२ | २४ मुद्राएँ करने की विधि | २७ |
| त्याग योग्य कुशा | १२ | गायत्री मंत्र | ३० |
| जप विधि | १२ | शक्तिमंत्र जपने की करमाला | ३० |
| माला विधि | १३ | जप के बाद की ८ मुद्राएँ | ३० |
| माला प्रार्थना | १४ | ८ मुद्राएँ करने की विधि | ३० |


Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| गायत्री कवच | ३२ |
| गायत्री तर्पण | ३३ |
| प्रदक्षिणा | ३३ |
| क्षमा-प्रार्थना | ३३ |
| विसर्जन | ३३ |
| **मध्याह्न संध्या** | ३४ |
| **सायं सन्ध्या** | ३४ |
| पंच महायज्ञ | ३५ |
| तर्पण विधि | ३५ |
| **तर्पण** | ३६ |
| देव तर्पण | ३६ |
| ऋषि तर्पण | ३७ |
| पितृ तर्पण | ३८ |
| ब्रह्मयज्ञ | ४२ |
| नित्य होम | ४३ |
| **देवपूजा विधि** | ४५ |
| बृक्ष से तुलसी ग्रहण मंत्र | ४६ |
| दीपक पूजन | ४६ |
| घण्टा पूजन | ४६ |
| शंख पूजन | ४६ |
| स्वस्तिवाचन | ४७ |
| पुण्याहवाचन | ४८ |
| अंगन्यास | ५१ |
| **गणपति तथा अम्बिका पूजन** | ५१ |
| कलश पूजन | ५६ |
| नवग्रह पूजन | ५८ |
| पंचलोकपाल पूजन | ६० |
| दशदिक्पाल पूजन | ६० |
| षोडशमात्रिका पूजन | ६२ |
| चतु:षष्टियोगिनी पूजन | ६२ |
| रक्षा विधान | ६२ |
| ब्राह्मण रक्षाबन्धन मंत्र | ६३ |
| ब्राह्मण तिलक मंत्र | ६३ |
| यजमान रक्षाबन्धन मंत्र | ६४ |
| यजमान तिलक मंत्र | ६४ |
| **शालिग्राम पूजन** | ६४ |
| सत्यनारायणजी की आरती | ६८ |
| विष्णुस्तुति | ६९ |
| पुष्पांजलि | ७१ |
| प्रदक्षिणा | ७१ |
| क्षमा प्रार्थना | ७१ |
| विसर्जन | ७१ |
| चरणामृत ग्रहण विधि | ७२ |
| तुलसी ग्रहण मंत्र | ७२ |
| चरणामृत ग्रहण मंत्र | ७२ |
| पंचामृत ग्रहण मंत्र | ७२ |
| नैवेद्य ग्रहण मंत्र | ७२ |
| **शिव पूजन** | ७२ |
| गणपति पूजन | ७२ |
| पार्वति पूजन | ७३ |
| नंदीश्वर पूजन | ७३ |
| वीरभद्र पूजन | ७३ |
| स्वामी कार्तिक पूजन | ७३ |
| कुबेर पूजन | ७३ |
| कीर्तिमुख पूजन | ७४ |
| अभिषेक | ७५ |
| शिवजी की आरती | ७८ |
| शिवस्तुति | ७९ |
| प्रदक्षिणा | ८० |
| क्षमा प्रार्थना | ८० |
| **पार्थिव शिव पूजन** | ८० |
| **दुर्गा पूजन** | ८२ |


Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| भैरव पूजन | ८२ | हनुमान चालिसा | १२३ |
| देवी ध्यान | ८२ | संकटमोचन हनुमानाष्टक | १२५ |
| पुस्तक पूजन | ८५ | सप्तश्लोकी गीता | १२६ |
| कुमारी पूजन | ८५ | चतुःश्लोकी भागवत | १२७ |
| दुर्गाजी की आरती | ८५ | एकश्लोकी रामायण | १२७ |
| महालक्ष्मी पूजन | ८६ | गरुड स्तुति | १२७ |
| महाकाली पूजन | ९० | हनुमान स्तुति | १२७ |
| लेखनी पूजन | ९० | अन्नपूर्णा स्तुति | १२८ |
| कुबेर पूजन | ९१ | काली स्तुति | १२८ |
| तुला तथा मान पूजन | ९१ | शीतला स्तुति | १२८ |
| दीपावली पूजन | ९१ | पीपल स्तुति | १२८ |
| श्रीमहालक्ष्मीजी की आरती | ९१ | तुलसी स्तुति | १२८ |
| संकटनाशन गणेश स्तोत्र | ९२ | **बलिवैश्वदेव** | **१२८** |
| श्रीसत्यनारायणाष्टक | ९२ | पंचबलि | १३० |
| श्रीमहालक्ष्म्याष्टक | ९३ | **श्राद्ध विधि** | **१३०** |
| कनकधारा स्तोत्र | ९४ | पितृ श्राद्ध | १३१ |
| कृष्णयजुर्वेदीय चाक्षुषोपनिषद् | ९५ | मातृ श्राद्ध | १३४ |
| श्रीगंगाष्टक | ९६ | भोजन विधि | १३७ |
| श्रीराधाकृष्णयुगल स्तोत्र | ९७ | आपोशान विधि | १३८ |
| देव्यापराधक्षमापन स्तोत्र | ९८ | सायं दीप स्तुति | १४९ |
| श्रीशीतलाष्टक | ९९ | शयन विधि | १४९ |
| श्रीविष्णुसहस्रनाम स्तोत्र | १०० | **विवाह पद्धति** | **१४०** |
| श्रीशिवमहिम्न स्तोत्र | ११० | संक्षिप्त व्रत-तिथि निर्णय | १६५ |
| श्रीशिवमानसपूजा स्तोत्र | ११३ | **कुछ मुख्य व्रतों के संक्षिप्त निर्णय :** | |
| श्रीशिवरामाष्टक | ११४ | एकादशी निर्णय, एकादशी व्रत नि., | |
| आदित्यहृदय स्तोत्र | ११५ | श्रावणी नि., श्रीकृष्णजन्माष्टमी, होलिका | |
| अन्नपूर्णा स्तोत्र | ११६ | दहन, मन्वादि तिथि-जयंती निर्णय | १६६ |
| श्रीसूक्त | ११७ | **सामग्री संग्रह :** | |
| नवग्रह स्तोत्र | ११९ | देवपूजा सामग्री, वसना पूजन सा., | |
| गजेन्द्रमोक्ष स्तोत्र | १२० | सांकल्पिक श्राद्ध सा., नित्य हवन सा., | |
| श्रीमच्छंकराचार्यकृत दशश्लोकी | १२२ | विवाह सा., उपनयन सामग्री | १७१ |


Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

# नित्यकर्म-विधि

## तथा

# देवपूजा-पद्धति

*॥ श्रीगणेशाय नमः ॥*

**अथोच्यते गृहस्थस्य नित्यकर्म यथाविधि।**
**यत्कृत्वाऽऽनृण्यमाप्नोति दैवात् पैत्र्याच्च मानुषात् ॥**

गृहस्थ का नित्यकर्म यथाविधि लिखा जाता है जिसके करने से देव, पितृ तथा मनुष्य-ऋण से छुटकारा होता है। इसलिये नित्यकर्म अवश्य करें। (आश्वलायन)

सन्ध्या स्नानं जपश्चैव देवतानाञ्च पूजनम्।
वैश्वदेवं तथातिथ्यं षट् कर्माणि दिने दिने ॥

स्नान, सन्ध्या, जप, देवताओं का पूजन, वैश्वदेव और अतिथि- सत्कार, ये छः कर्म नित्य करने चाहिये। (बृ. पा. स्मृति)

सूर्योदय से एक घंटा पहले ब्राह्ममुहूर्त होता है। इस समय सोना निषिद्ध है। इस कारण ब्राह्ममुहूर्त में उठकर नीचे लिखा मन्त्र बोलते हुए अपने हाथ देखें। (आचारप्रदीप)

**कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।**
**करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ॥**

हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी, मध्य में सरस्वती और मूल में ब्रह्मा का निवास है। अतः सुबह (उठते ही) हाथों का दर्शन करें। पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना कर पृथ्वी पर पैर रखें। (आचारप्रदीप)

**समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डले।**
**विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥**

हे विष्णुपत्नि ! हे समुद्ररूपी वस्त्रों को धारण करनेवाली ! तथा पर्वतरूप स्तनों से युक्त पृथ्वी देवि ! तुम्हें नमस्कार है, मेरे पादस्पर्श को क्षमा करो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh (म.पारि.)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



पश्चात् मुख धोकर कुल्ला करके नीचे लिखे प्रातः-स्मरण तथा भजनादि करके गणेशजी, लक्ष्मीजी, सूर्य, तुलसी, गौ, गुरु, माता-पिता और वृद्धों को प्रणाम करें।

**प्रातःस्मरण**

**प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं सिन्दूरपूरपरिशोभितगण्डयुग्मम्। उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्डमाखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम्॥ गणपतिर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः। द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः। विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः। द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। विश्वं तस्य भवेद्वश्यं न च विघ्नं भवेत् क्वचित्॥ सत्यरूपं सत्यसन्धं सत्यनारायणं हरिम्। यत्सत्यत्वेन जगतस्तं सत्यं त्वां नमाम्यहम्॥ त्रैलोक्यचैतन्यमयादिदेव श्रीनाथ-विष्णो भवदाज्ञयैव। प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रा-मनुवर्तयिष्ये॥ सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्। उज्जयिन्यां महाकालमोंकारे ममलेश्वरम्। केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशङ्करम्। वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमीतटे। वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकावने। सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं च शिवालये। द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। सर्वपाप-विनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिफलं लभेत्॥ आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयन्तु दिवाकरः। तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं च प्रभाकरः। पञ्चमं च सहस्रांशुः षष्ठं चैव त्रिलोचनः। सप्तमं हरिदश्वश्च अष्टमं च विभावसुः। नवमं दिनकृत्प्रोक्तं दशमं द्वादशात्मकः। एकादशं त्रयीमूर्तिर्द्वादशं सूर्य एव च। द्वादशैतानि नामानि प्रातःकाले पठेन्नरः। दुःस्वप्ननाशनं सद्यः सर्वसिद्धिः प्रजायते॥ ब्रह्मा मुरारि-स्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनि-राहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥ भृगुर्वसिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः। रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥ सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्या-सुरिपिङ्गलौ च। सप्तस्वराः सप्तरसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥ सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त। भूरादि कृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमाँश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥ सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः॥ पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः। पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः॥ हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम्। पञ्चकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसङ्कटनाशनम्॥ महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे॥ उमा उषा च वैदेही रमा गङ्गेति पञ्चकम्। प्रातरेव स्मरेन्नित्यं सौभाग्यं वर्द्धते सदा। सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा। पञ्च कन्याः* स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्॥ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः॥ कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्याः नलस्य च। ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम्॥ अनिरुद्धं गजं ग्राहं वासुदेवं महाद्युतिम्। सङ्कर्षणं महात्मानं प्रद्युम्नं च तथैव च। मत्स्यं कूर्मं च वाराहं वामनं तार्क्ष्यमेव च। नारसिंहञ्च नागेन्द्रं सृष्टिसंहारकारकम्। विश्वरूपं हृषीकेशं गोविन्दं मधुसूदनम्। त्रिदशैर्वन्दितं देवं दृढभक्तिमनूपमम्। एतानि प्रातरुत्थाय संस्मरिष्यन्ति ये नराः। सर्वपापैः प्रमुच्यन्ते स्वर्गलोकमवाप्नुयुः॥ श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितिं तथा। प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स विमुच्यते॥ हे जिह्वे रससारज्ञे सर्वदा मधुरप्रिये। नारायणाख्यपीयूषं पिब जिह्वे निरन्तरम्॥

## शौच-विधि

यज्ञोपवीत कंठी कर दाहिने कान में लपेट, वस्त्र या आधी धोती से सिर ढकें। वस्त्र के अभाव में जनेऊ को सिर के ऊपर से लेकर बायें कान के पीछे करें। जलपात्र बायें रख दिन में उत्तर तथा रात्रि में दक्षिण की ओर मुख कर नीचे लिखा मन्त्र बोलकर, मौन हो मलत्याग करें।(नारद पुराण)

**गच्छन्तु ऋषयो देवाः पिशाचाः ये च गुह्यकाः।**
**पितृभूतगणाः सर्वे करिष्ये मलमोचनम्॥**

पात्र से जल ले, बायें हाथ से लिंग धोकर, उसमें एक बार, पश्चात्

* पञ्चकन्या - पाठान्तरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



गुदा धोकर, उसमें तीन बार मिट्टी लगा जल से शुद्ध करें। बायें हाथ को अलग रखते हुए दाहिने हाथ से लाँग (पिछटा) लगाकर उसी हाथ में पात्र लें। मिट्टी के तीन भाग करें। प्रथम से बायाँ हाथ दस बार, दूसरे से दोनों सात बार और तीसरे से पात्र तीन बार तथा बायाँ पैर पश्चात् दायाँ पैर एक-एक बार धो, पात्र शुद्ध करके बची हुई मिट्टी धो दें। सूर्योदय से पहले पूर्व, पश्चात् उत्तर की ओर मुख कर बायीं ओर बारह कुल्ले करें।

**दिवा शौचस्य निश्यर्द्धं पथि पादो विधीयते। आर्तः कुर्याद् यथाशक्ति शक्तः कुर्याद् यथोदितम्।।**

दिन से रात्रि में आधी, यात्रा में चौथाई, तथा आतुर काल में यथाशक्ति शुद्धि करनी चाहिये, किन्तु शक्ति रहते ऊपर लिखे अनुसार करें। (आ.पु.)

**पुरतः सर्वदेवाश्च दक्षिणे पितरस्तथा। ऋषयः पृष्ठतः सर्वे वामे गण्डूषमाचरेत्।।**

सामने देवता, दक्षिण में पितर और पीठ पीछे ऋषियों का निवास रहता है, इसलिये कुल्ला बायीं ओर करें। (प्रयोग पारिजात)

**कुर्याद् द्वादश गण्डूषान् पुरीषोत्सर्जने ततः। मूत्रोत्सर्गे तु चतुरो भोजनान्ते तु षोडश।।**

मलत्याग के बाद बारह, मूत्रत्याग के बाद चार और भोजन के बाद सोलह कुल्ले करें। (आश्वलायन)

## दन्त-धावन-विधि

मुखशुद्धि किये बिना मन्त्र फलदायक नहीं होते। इसलिये सूर्योदय से पहले पूर्व, पश्चात् उत्तर अथवा दोनों समय ईशान (पूर्वोत्तर कोण) की ओर मुख कर दतुअन करनी चाहिए। संक्रान्ति, व्यतिपात, व्रत, श्राद्ध, प्रतिपदा, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा और रविवार के दिन दतुअन नहीं करनी चाहिये। इन दिनों में मुखशुद्धि के लिये बारह कुल्ले अधिक करें।

**मध्यमानामिकाभ्यां च वृद्धाङ्गुष्ठेन च द्विजः। दन्तस्य धावनं कुर्यान्न तर्जन्या कदाचन।।**

मध्यमा, अनामिका अथवा अंगूठे से दाँत साफ करें किन्तु तर्जनी अंगुली से कभी न करें। (पद्मपुराण)

## दतुअन-प्रार्थना

**आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च।**
**ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते।।**

दतुअन धोकर, ऊपर लिखी प्रार्थना करके, करें। पश्चात् दतुअन चीर, जीभी कर, [illegible] फेंक दें। (वि. [illegible])

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


## मौन-विधि

**उच्चारे मैथुने चैव प्रस्रावे दन्तधावने। श्राद्धे भोजनकाले च षट्सु मौनं समाचरेत्।।**

मल, मूत्र, मैथुन, दन्तधावन, श्राद्ध और भोजन के समय मौन रहें।(हारीत)

## उवासी, छींक, थूकना

उवासी (जम्हाई) आने पर चुटकी बजाएँ। छींकने पर **शतं जीवेम शरदः** कहें। अधोवायु, थूक तथा नेत्रों में जल आने पर दाहिना कान अंगूठे से स्पर्श करें। (शांख्यायनस्मृति)

## क्षौर-विधि

एकादशी, अमावस्या, चतुर्दशी, पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतिपात, व्रत, श्राद्ध, रवि, मंगल तथा शनि के दिन क्षौर न कराएँ।

**भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्तमार्तण्डसूनुः, भौमश्चाष्टौ वितरति शुभान् बोधनः पञ्चमासान्।**
**सप्तैवेन्दुर्दश सुरगुरुः शुक्र एकादशेति, प्राहुर्गर्गप्रभृतिमुनयः क्षौरकार्येषु नूनम्।।**

गर्गादि मुनियों ने कहा है कि रविवार को क्षौर कराने से एक, मंगलवार को आठ और शनिवार को सात मास की आयु क्षीण होती है। बुधवार को पाँच, सोमवार को सात, गुरुवार को दश और शुक्रवार को ग्यारह मास की आयु बढ़ती है (वाराही संहिता)। गृहस्थ को सोमवार एवं गुरुवार को भी क्षौर नहीं कराना चाहिये।

## तैलाभ्यंग-विधि

षष्ठी, एकादशी, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा तथा रवि, मंगल, गुरु, और शुक्रवार को तेल न लगाएँ। किन्तु सुगन्धित तेल लगाया जा सकता है।

**तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः। बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम्।।**
**रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका। गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यङ्गे न दोषभाक्।।**
**नित्यमभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम् ।।**

रविवार को तेल लगाने से ताप, मंगलवार को मृत्यु, गुरुवार को हानि तथा शुक्रवार को दुःख होता है। सोमवार को शोभा, बुधवार को धन और शनिवार को सुख होता है। यदि निषिद्धवारों में तेल लगाना हो तो—रविवार को तेल में पुष्प, गुरुवार को दूर्वा, मंगलवार को मृत्तिका और शुक्रवार को गोबर डाल कर लगाएँ। इसमें दोष नहीं होता। सुगन्धित तेल तथा प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता। (ज्यो. सा.)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



***अयन*** **:** मकर संक्रान्ति से मिथुन संक्रान्ति (माघ से आषाढ़) तक **उत्तरायण सूर्य** और कर्क संक्रान्ति से धनु संक्रान्ति (श्रावण से पौष) तक **दक्षिणायन सूर्य** रहता है।

**ऋतु** : *वसन्त*—मीन और मेष की संक्रान्ति (चैत्र, वैशाख), *ग्रीष्म*—वृष और मिथुन (ज्येष्ठ, आषाढ़), *वर्षा*—कर्क और सिंह (श्रावण, भाद्रपद), *शरद्*—कन्या और तुला(आश्विन, कार्तिक), *हेमन्त*—वृश्चिक और धनु (मार्गशीर्ष, पौष), *शिशिर*—मकर और कुम्भ (माघ, फाल्गुन) इस प्रकार छः ऋतुएँ हैं।

## संकल्प

स्नान, दान, देवपूजन आदि के आरंभ में संकल्प करना चाहिये। दायें हाथ में केवल जल या जल-पुष्प आदि ले, नीचे लिखे संकल्प में **'अमुक'** के स्थान पर, उसके बाद जो शब्द है, उसका विशेष नाम पञ्चांग आदि से देख कर बोलना चाहिये। 'ब्राह्मण' नाम के अन्त में *शर्मा*, 'क्षत्रिय' *वर्मा*, 'वैश्य' *गुप्त* और 'शूद्र' *दास* कहें। श्राद्ध-तर्पण आदि में पितरों के नाम के अन्त में भी इसी प्रकार बोलें।

**ॐ तत्सदद्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वत-मन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे बौद्धावतारे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते** *(अमुक)* **देशे, पुण्य** *(अमुक)* **क्षेत्रे,** *(अमुक)* **ग्रामे, विक्रमसंवत्सरे** *(अमुक)* **सङ्ख्यके, शालिवाहनशाके** *(अमुक)* **सङ्ख्यके,** *(अमुक)* **नाम्नि संवत्सरे,** *(अमुक)* **अयने,** *(अमुक)* **ऋतौ,** *(अमुक)* **मासे,** *(अमुक)* **पक्षे,** *(अमुक)* **तिथौ,** *(अमुक)* **वासरे,** *(अमुक)* **नामाहं मम कायिक-वाचिक-मानसिक-ज्ञाताज्ञातसकलदोषपरिहारार्थं श्रुतिस्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं** *(अमुक)* **काले,** *(अमुक)* **सम्मुखे,** *(अमुक)* **कर्म करिष्ये।** (बोलकर जलादि छोड़ें)

**विशेष**—यजमान के लिये संकल्प करें तो यजमान का षष्ठ्यन्त गोत्र एवं नाम उच्चारण करें और **'मम'** के स्थान पर **मम यजमानस्य** तथा अन्त मे **'करिष्ये'** की जगह **करिष्यामि** कहें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## स्नान-विधि

मनुष्य के शरीर में प्रधान ९ छिद्र हैं। वे रात्रि में शयन करने से अपवित्र हो जाते हैं। इसलिये प्रातःस्नान अवश्य करें।

**निपानादुद्धृतं पुण्यं ततः प्रस्रवणोदकम्।**
**ततोऽपि सारसं पुण्यं ततो नादेयमुच्यते।**
**तीर्थतोयं ततः पुण्यं गङ्गातोयं ततोऽधिकम् ॥**

कुँए के जल से झरने का, झरने से सरोवर का, सरोवर से नदी का, नदी से तीर्थ का और तीर्थ से गंगाजी का जल श्रेष्ठतर है। (अग्निपुराण)

**संक्रान्त्यां रविवारे च सप्तम्यां राहुदर्शने। आरोग्ये पुत्रमित्रार्थे न स्नायादुष्णवारिणा ॥**
**मृते जन्मनि संक्रान्तौ श्राद्धे जन्मदिने तथा। अस्पृश्यस्पर्शने चैव न स्नायादुष्णवारिणा ॥**

संक्रान्ति, रविवार, सप्तमी, ग्रहण, सन्तानोत्पत्ति, मृताशौच, श्राद्ध, जन्मतिथि के दिन तथा अस्पृश्य से छुए जाने पर गरम जल से स्नान न करें। (वृद्धमनु.)

**न दन्तधावनं कुर्याद् गङ्गागर्भे विचक्षणः।**
**परिधेयाम्बराम्बूनि गङ्गास्रोतसि न त्यजेत् ॥**

गंगाजी में दतुअन न करें, स्नान के पश्चात् गंगाजी में भीगी धोती न बदलें और न ही निचोड़ें। (पद्म पुराण)

**वासांसि धावतो यत्र पतन्ति जलबिन्दवः।**
**तदपुण्यं जलस्थानं रजकस्य शिलाङ्कितम् ॥**

धोबी के कपड़े धोने का पत्थर तथा जितनी दूरी तक उस कपड़े का छींटा पड़ता है, उतना जल अपवित्र रहता है। (वृ. पा. स्मृ.)

शौचकाल का वस्त्र बदल, स्नानीय स्थान पर जाकर, सव्य हो, नीचे लिखी वरुण-प्रार्थना करें।

**अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु वसतिस्तव।**
**वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नानानुज्ञां प्रयच्छ मे ॥**

पवित्र हो, स्नानार्थ संकल्प कर, नीचे लिखे मन्त्र से दायें हाथ से कटि-पर्यन्त मृत्तिका लगाएँ। कटि के नीचे दायें हाथ से तथा मन्त्र से न लगाएँ। (पद्मपुराण)

**अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।**
**मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



### तीर्थावाहन

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
कुरुक्षेत्र-गया-गङ्गा-प्रभास-पुष्कराणि च।
एतानि पुण्यतीर्थानि स्नानकाले भवन्त्विह ॥
त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता।
याचितं देहि मे तीर्थं तीर्थराज नमोस्तुते ॥

### भागीरथी (गंगाजी) की प्रार्थना

विष्णुपादाब्जसम्भूते गङ्गे त्रिपथगामिनि।
धर्म्मद्रवेति विख्याते पापं मे हर जाह्नवि ॥
गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकञ्च गच्छति ॥

नाभिपर्यन्त जल में जाकर, प्रवाह या सूर्य की ओर मुख करें। जल के ऊपर ब्रह्महत्या रहती है, इसलिये जल हिलाकर तीन गोते लगाने चाहिए।

घर मे स्नान करें तो पूर्वाभिमुख हो पात्र में जल ले, वरुण, गंगा व तीर्थादि का आवाहन और संकल्प कर, पैर तथा मुख धोकर स्नान करें। शूद्र के हाथ से शरीर पर जल न गिरवाएँ।

यथेच्छ स्नान कर चुकने पर नीचे लिखे मन्त्र से जल के बाहर एक अंजलि दें।

यन्मया दूषितं तोयं मलैः शारीरसम्भवैः।
तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम् ॥

असमर्थ अवस्था में नीचे लिखी क्रिया करने से भी स्नान का फल होता है।

**आमणेर्बन्धनाद्धस्तौ पादौ चाजानुतः शुची। प्रक्षाल्याचमयेद्विद्वानन्तर्जानुकरो द्विजः ॥**

मणिबन्ध (पहुँचे) तक हाथ तथा घुटनों तक पैर धो एवं पवित्र होकर, दोनों घुटनों के भीतर हाथ करके, आचमन करने से स्नान के समान ही शुद्धि होती है। (वृ. पा. स्मृ.)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**स्नानांग-तर्पण** (घर में न करें)

पूर्व की ओर मुख कर तथा सव्य हो (जनेऊ को बाएँ कन्धे पर कर), देवतीर्थ से एक-एक अंजलि दें।

**ॐ ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूर्देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ भुवर्देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ स्वर्देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूर्भुवः स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् ॥**

उत्तर की ओर मुख कर तथा जनेऊ को कण्ठी (गले में माला की तरह) कर, कायतीर्थ से दो-दो अंजलि दें।

**ॐ मरीच्यादि ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ सनकादिद्वैपायनान्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ भूर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ भुवर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ स्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ भूर्भुवः स्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् २॥**

दक्षिण की ओर मुख कर तथा अपसव्य हो (जनेऊ दाहिने कन्धे पर कर), पितृतीर्थ से तीन-तीन अंजलियाँ दें।

**ॐ भूर्भुवः स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् ३। ॐ** *(अमुक)* **गोत्र अस्मत्पितृपितामह-प्रपितामहास्तृप्यन्ताम् ३। ॐ** *(अमुक)* **गोत्र अस्मन्मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकास्तृप्यन्ताम् ३। ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यताम् ३।**

नीचे लिखे मन्त्र से जल के बाहर एक अंजलि दें।

**ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम।**
**भूमौ दत्तेन तोयेन तृप्ता यान्तु परां गतिम् ॥**

नीचे लिखे मन्त्र से जल के बाहर दाहिनी ओर शिखा निचोड़ें।

**लतागुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः।**
**ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टैः शिखोदकैः ॥**

'सव्य' हो, आचमन कर, जल के बाहर एक अंजलि दें।

**यन्मया दूषितं तोयं शारीरं मलसम्भवम्।**
**तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम् ॥**

**वस्त्र-धारण-विधि**

पुण्यकर्मों में दो वस्त्र धारण करें। अभाव मे आधी धोती ओढ़ें। नया या धोबी का धोया हुआ वस्त्र धारण करें। अमावस्या, संक्रान्ति, रवि और श्राद्ध के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


दिन साबुन से वस्त्र न धोएँ तथा न ही धोबी को दें। नीचे लिखे मन्त्र से नया वस्त्र धारण करें।

**ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि।**
**शतं च जीवामि शरदः सुवर्च्चा रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये ॥** (पा.गृ.सू.)

***विशेष :*** जल में सूखे तथा स्थल पर भीगे वस्त्र से सन्ध्यादि न करें। (वृ.स्मृ.)

***आसन :*** मृगचर्म, कुशा और ऊन के आसन पवित्र होते हैं। आसन झाड़ कर, यदि कुशा का आसन हो तो ग्रन्थि उत्तर-दक्षिण करके बिछाएँ।

### शिखा-बन्धन

शिखा बाँधकर सभी कर्म करने चाहिये। नीचे लिखे मन्त्र से या गायत्रीमन्त्र से शिखा बाँधनी चाहिये। यदि शिखा न हो तो शिखा-स्थान का स्पर्श करें।

**चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजस्समन्विते।**
**तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥**

### तिलक

तिलक किये बिना सन्ध्या, पितृकर्म और देवपूजा आदि न करें। चन्दनादि के अभाव में जलादि से तिलक करें।

**अनामिका शान्तिदोक्ता मध्यमाऽयुष्करी भवेत्।**
**अङ्गुष्ठः पुष्टिदः प्रोक्तः तर्जनी मोक्षदायिनी ॥**

तिलक करने में अनामिका शान्ति देने वाली, मध्यमा आयु बढ़ाने वाली, अंगुष्ठ पुष्टि देने वाला और तर्जनी मोक्ष देने वाली है (स्कन्द पुराण)। चकले पर से चन्दन नहीं लगाना चाहिये।

### चन्दन-धारण-मन्त्र

**चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।**
**आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा ॥**

### तिलक-धारण-विधि

ललाट में केशव, कण्ठ में पुरुषोत्तम, हृदय में वैकुण्ठ, नाभि में नारायण, पीठ में पद्मनाभ, बाएँ पार्श्व में विष्णु, दाहिने में वामन, बाएँ कान में यमुना, दाहिने में गंगा, बाईं भुजा में कृष्ण, दाहिनी में हरि, मस्तक में हृषीकेश और गर्दन में दामोदर का स्मरण करते हुए इन तेरह स्थानों पर चन्दन लगाएँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


### भस्म-धारण-विधि

प्रातः जलमिश्रित, मध्याह्न में चन्दनमिश्रित और सायंकाल सूखी भस्म लगाएँ। बाएँ हाथ में भस्म ले, दाहिने हाथ से नीचे लिखे मन्त्र से अभिमन्त्रित करें।

**ॐ अग्निरिति भस्म। ॐ वायुरिति भस्म। ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म। ॐ व्योमेति भस्म। ॐ सर्वꣳह वा इदं भस्म। ॐ मनऽ एतानि चक्षूंषि भस्मानीति।**

नीचे लिखे मन्त्रों से यथा स्थान भस्म लगायें।

**ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः** ललाट में। **ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्** कण्ठ में। **ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्** भुजाओं में। **ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्** हृदय में।

## यज्ञोपवीत-धारण-विधि

श्रावणी-कर्म में पूजन किया हुआ यज्ञोपवीत न हो तो नूतन यज्ञोपवीत को जल से शुद्ध कर दस बार गायत्री-मन्त्र से अभिमन्त्रित कर नीचे लिखे मन्त्रों से प्रत्येक सूत्र एवं ग्रन्थि में देवताओं का आवाहन करें।

*प्रथमतन्तौ* **ॐ ओंकारमावाहयामि।** *द्वितीयतन्तौ* **ॐ अग्निमावाहयामि।** *तृतीयतन्तौ* **ॐ सर्पानावाहयामि।** *चतुर्थतन्तौ* **ॐ सोममावाहयामि।** *पञ्चमतन्तौ* **ॐ पितॄनावाहयामि।** *षष्ठतन्तौ* **ॐ प्रजापतिमावाहयामि।** *सप्तमतन्तौ* **ॐ अनिलमावाहयामि।** *अष्टमतन्तौ* **ॐ सूर्यमावाहयामि।** *नवमतन्तौ* **ॐ विश्वान्देवानावाहयामि ।।** ग्रन्थि में **ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि। ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि। ॐ रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि ।।** इस प्रकार आवाहन कर नीचे लिखे मन्त्र से यज्ञोपवीत धारण करें।

विनियोग : **ॐ यज्ञोपवीतमितिमन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः।**

यज्ञोपवीत धोकर प्रत्येक बार मन्त्र बोलते हुए, एक-एक धारण करें।

**ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।**
**आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।**

पुराने यज्ञोपवीत को कंठी कर निम्नलिखित मन्त्र द्वारा सिर पर से पीठ की ओर निकाल कर, यथासंख्य गायत्रीमन्त्र का जप करना चाहिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


**एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।**
**जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ।।**

### कुशा-ग्रहण-विधि

भाद्रपद मास की कुशोत्पाटिनी अमावस्या को ग्रहण की हुई कुशा बारह मास, अन्य अमावस्या की एक मास, पूर्णिमा की पन्द्रह दिन, और प्रत्येक अन्य दिन की उसी दिन तक पवित्र रहती है। सन्ध्या, पितृकार्य और देवपूजन में अग्र और मूल सहित दो कुशाओं की पवित्री दाहिने, और तीन कुशाओं की बाएँ हाँथ की अनामिका की जड़ में धारण करें।

**प्रादेशमात्रं दर्भः स्यात् द्विगुणं कुशमुच्यते। कृतरत्निर्भवेद् बर्हिस्तदूर्ध्वं तृणमुच्यते ।।**

एक प्रादेश (अंगूठा और तर्जनी फैलाना) का दर्भ, दो प्रादेश की कुशा और दाहिनी कोहनी से कनिष्ठा अंगुली की जड़ पर्यन्त बर्हि कहा जाता है, इससे लंबा तृण कहलाता है। (कर्मकाण्ड समुच्चय)

पूर्व या उत्तर मुख हो कुशा का पूजन कर नीचे लिखी प्रार्थना करें। पश्चात् प्रत्येक बार **हुं फट्** बोल कर जड़ सहित उखाड़ें। कुशा हाथ से छोटी अर्थात् उपर्युक्त श्लोकानुसार ही लें।

**विरंचिना सहोत्पन्न परमेष्ठिनिसर्जन।**
**नुद सर्वाणि पापानि दर्भ! स्वस्तिकरो भव ।।**

### त्यागयोग्य-कुशा

**ये तु पिण्डास्तृता दर्भा यैः कृतं पितृतर्पणम्।**
**अमेध्याशुचिलिप्ता ये तेषां त्यागो विधीयते ।।**

पिण्ड के नीचे तथा ऊपर की, तर्पण की तथा अपवित्र जगह पर पड़ी हुई कुशा को त्याग देना चाहिये। (गृहपरि.)

### जप-विधि

जप करते समय दाहिना हाथ गोमुखी में डालें या वस्त्र से ढक लें। सिर पर हाथ तथा वस्त्र न रखें। **वाचिक जप** धीरे-धीरे बोल कर, **उपांशु** दूसरे नहीं सुनें तथा **मानस** जिह्वा और होंठ न हिलाकर करना उत्तरोत्तर उत्तम है। जप करते समय हिलना, ऊँघना, बोलना और माला गिरना निषिद्ध है। यदि बोल लें तो भगवत्-स्मरण कर फिर से जप प्रारंभ करें।

**गृहे चैकगुणः प्रोक्तो गोष्ठे शतगुणः स्मृतः। पुण्यारण्ये तथा तीर्थे सहस्रगुणमुच्यते ।।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



अयुतं पर्वते पुण्यं नद्यां लक्षगुणो जपः। कोटिर्देवालये प्राप्ते अनन्तं शिवसन्निधौ ॥

घर में जप करने से एक गुना, गौओं के समीप सौ गुना, पवित्र वन या बगीचे और तीर्थ में हजार गुना, पर्वत पर दस हजार गुना, नदी-तट पर लाख गुना, देवालय में करोड़ गुना तथा शिव के समीप अनन्त गुना फल होता है।

प्रातर्नाभौ करं कृत्वा मध्याह्ने हृदि संस्थितम्।
सायं जपति नासाग्रे जपस्तु त्रिविधः स्मृतः ॥(धर्मप्र.)
कृत्वोत्तानौ करौ प्रातः सायं न्युब्जौ करौ तथा।
मध्याह्ने हृदयस्थौ तु कृत्वा जपमुदीरयेत् ॥
प्रातर्मध्याह्नयोस्तिष्ठन् गायत्रीजपमारभेत्।
ऊर्ध्वजानुस्तु सायाह्ने ध्यानालोकनतत्परः ॥

प्रातःकाल हाथ को सीधा तथा अंगुलियों को ऊपर की ओर कर नाभि के समीप, मध्याह्न में हृदय के समीप और सायंकाल दाहिना घुटना खड़ा कर, नासिका के समीप उल्टा हाथ कर जप करें।(आह्निक)

यस्मिन्स्थाने जपं कुर्यात् शक्रो हरति तज्जपम्।
तन्मृदा लक्ष्म कुर्वीत ललाटे तिलकाकृतिः ॥

जिस आसन पर बैठ कर जप किया हो, उसके नीचे की मृत्तिका मस्तक में लगाएँ। ऐसा न करने पर जप का फल इन्द्र ले लेता है।

(व्यास-स्मृति)

## माला-विधि

प्रत्येक मणि के बीच में ग्रन्थि दी हुई, सुमेरु को छोड़ कर १०८ मणियों की माला सबसे उत्तम है। माला को अनामिका पर रख कर अंगूठे से स्पर्श करते हुए मध्यमा से फेरें। सुमेरु का उल्लंघन न करें। दुबारा फेरते समय सुमेरु के पास से माला घुमा कर जप करें। माला का पूजन तथा प्रार्थना करके फेरने से विशेष फल होता है।

प्रार्थना—**ॐ महामाये महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणी।**
**चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥**
**अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।**
**जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## देवमन्त्र की कर-माला

(शक्ति-मन्त्र की करमाला सन्ध्याविधि में देखें)

दाहिने हाथ की अंगुलियों को मिला कर हथेली की ओर कुछ टेढ़ी करें। अलग-अलग रहने से जप का पूर्ण फल नही मिलता।

**अङ्गुल्यग्रे च यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलङ्घनात्। पर्वसन्धिषु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥**

अंगुली के अग्रभाग (नख के पास) तथा पर्व की लकीर पर और सुमेरु का उल्लंघन किया हुआ जप निष्फल हो जाता है।

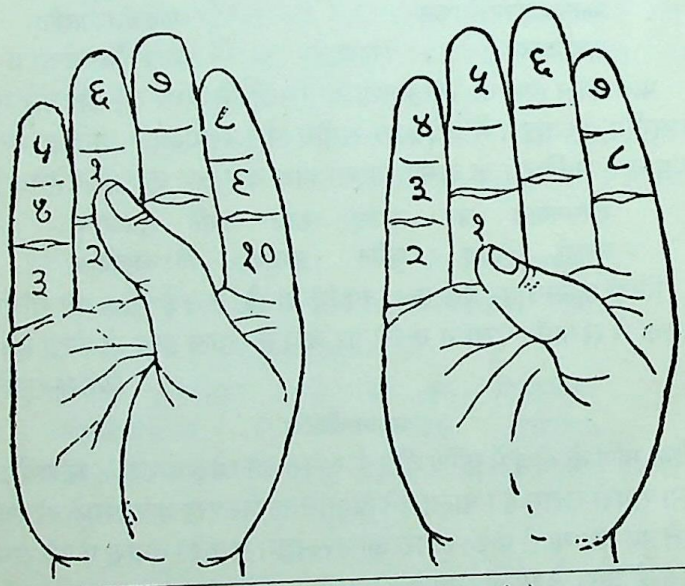


(क) (ख)

चित्र 'क' के अनुसार अंक १ से आरंभ करके १० अंक तक अंगूठे से जप करने से एक करमाला होती है। इसी प्रकार दस करमाला जप करके चित्र 'ख' के अनुसार अंक एक से आरंभ कर ८ अंक तक जप करने से १०८ संख्या की माला होती है।

**आरभ्यानामिकामध्यं पर्वाण्युक्तान्यनुक्रमात्। तर्जनीमूलपर्यन्तं जपेद्दशसु पर्वसु ॥**
**मध्यमाङ्गुलिमूले तु यत्पर्वं द्वितयं भवेत्। तद् वै मेरुं विजानीयाजपे तं नातिलङ्घयेत् ॥** (गायत्रीकल्प)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## आचमन-विधि

१. **अग्नितीर्थ**–दाहिनी हथेली का मध्य
२. **ब्रह्मतीर्थ**–तर्जनी का मूल।
३. **देवतीर्थ**–अंगुलियों का अग्रभाग।
४. **कायतीर्थ**–कनिष्ठा का मूल।
५. **पितृतीर्थ**–तर्जनी का मूल।

पुण्यकर्मों के आरंभ में आचमन अवश्य करें। ब्राह्मण के हृदय, क्षत्रिय के कण्ठ तथा वैश्य के तालु में जल पहुंचने से आचमन होता है। प्रथम आचमन से आध्यात्मिक, द्वितीय से आधिभौतिक तथा तीसरे से आधिदैविक तापों की शान्ति होती है। दाहिने हाथ में जल ले, अंगूठे तथा कनिष्ठा को अलग कर, नीचे लिखे प्रत्येक मन्त्र को बोलकर, ब्रह्मतीर्थ से आचमन करने से एक आचमन होता है। किन्तु ओष्ठ का शब्द करना निषिद्ध है। **ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।** पश्चात् अंगूठे के मूल से दो बार होठों को पोंछ कर **ॐ हृषीकेशाय नमः** बोलकर हाथ धोएँ। जल के अभाव में दाहिने कान तथा नासिका को अंगूठे से स्पर्श करें। (पराशर)

## अर्घ-विधि

चित्र के अनुसार पूर्वाभिमुख खड़े हो, दोनो पैरों के अग्रभाग बराबर कर, जल तथा पुष्पादि ले, तर्जनी से अंगूठे को अलग रखते हुए नीचे लिखे प्रत्येक नामसे एक-एक अर्घ दें।

**ॐ श्रीगणेशाय नमः। ॐ श्रीसत्यनारायणाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ देव्यै नमः। ॐ नवग्रहेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ पञ्चलोकपालेभ्यो नमः। ॐ दशदिक्पालेभ्यो नमः।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**ॐ अष्टकुलनागेभ्यो नमः। ॐ अष्टवसुदेवताभ्यो नमः। ॐ पञ्चभूतेभ्यो नमः। ॐ भूरादिलोकेभ्यो नमः। ॐ साक्षीभूताय नमः। ॐ धर्मराजाय नमः। ॐ चित्राय नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः। ॐ श्रवणदेवताभ्यो नमः। ॐ मित्राय नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ कुबेराय नमः॥**

नीचे लिखे मन्त्र से सूर्यनारायण को अर्घ्य दें।

**एहि सूर्य! सहस्रांशो! तेजोराशे! जगत्पते!**
**अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर!॥**

## सन्ध्या-विधि

ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्यों को सन्ध्या अवश्य करनी चाहिये। सन्ध्या न करने से शुभ कर्मों का पूर्णफल प्राप्त नहीं होता। जल में सूखा वस्त्र और स्थल में गीला वस्त्र धारण कर सन्ध्या-तर्पण आदि न करें।

**सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु। यदन्यत्कुरुते कर्म न तस्य फलभाग् भवेत्॥**

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य यदि सन्ध्या नही करते तो वे अपवित्र हैं और उन्हे किसी पुण्यकर्म का फल नही मिलता।

**प्रातः सन्ध्यां सनक्षत्रां मध्याह्ने मध्यभास्कराम्। ससूर्यां पश्चिमां सन्ध्यां तिस्रः सन्ध्या उपासते॥**

प्रातःकाल तारों के रहते हुए, मध्याह्न में जब सूर्य आकाश के मध्य में हो और सायंकाल में सूर्यास्त के पहले ही सन्ध्या करनी चाहिये। (दे.भा.)

**जपन्नासीत सावित्रीम्प्रत्यगातारकोदयात्। सन्ध्यां प्राक् प्रातरेवं हि तिष्ठेदासूर्यदर्शनात्॥**

सायंकाल में पश्चिम की ओर मुख करके जबतक तारों का उदय न हो और प्रातःकाल में पूर्वाभिमुख हो जबतक सूर्य का दर्शन न हो, तब तक जप करता रहे।

**एकं वाहननाशाय द्वितीयं शस्त्रनाशनम्। असुराणां वधार्थाय तृतीयार्घ्यं विदुर्बुधाः॥**

पहले अर्घ से असुरों के वाहन का नाश, दूसरे से शस्त्रनाश और तीसरे से असुरों का वध होता है।(मदन पारिजात)

**गृहस्थो ब्रह्मचारी च प्रणवाद्यामिमां जपेत्। अन्ते यः प्रणवं कुर्यान्नासौ वृद्धिमवाप्नुयात्॥**

गृहस्थ तथा ब्रह्मचारी गायत्री के आदि में ॐ का उच्चारण करके जप करें किन्तु अन्त में न करें। क्योकि ऐसा करने से वृद्धि नही होती। (आह्निक)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**चतुष्षष्टिकला विद्या सकलैश्वर्यसिद्धिदा। जपारम्भे च हृदयं जपान्ते कवचं पठेत् ॥**

जप के आदि में चौंसठ कला युक्त विद्या तथा संपूर्ण ऐश्वर्यों की सिद्धि देने वाले **गायत्रीहृदय** का तथा अन्त मे **गायत्रीकवच** का पाठ करें। (विश्वामित्र कल्प)

**गृहेषु प्राकृती सन्ध्या गोष्ठे शतगुणा स्मृता। नदीषु शतसाहस्री अनन्ता शिवसन्निधौ ॥**

घर में सन्ध्या-वन्दन करने से एक, गोस्थान में सौ, नदी-किनारे लाख तथा शिव के समीप में अनन्त गुना फल प्राप्त होता है।

**पादशेषं पीतशेषं सन्ध्याशेषं तथैव च। शुनो मूत्रसमं तोयं पीत्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥**

पैर धोने से, पीने से और सन्ध्या करने से बचा हुआ जल श्वानमूत्र के तुल्य हो जाता है, उसके पीने पर चान्द्रायणव्रत करने से मनुष्य पवित्र होता है। इसलिये बचे हुए जल को फेंक दें।

## प्रातःसन्ध्या

आसन की ग्रंथि उत्तर तथा दक्षिण की ओर कर के बिछाएँ। गमछा आदि दूसरा वस्त्र ले, पूर्वाभिमुख बैठ शिखा बाँध, तिलक करके, नीचे दिये चित्र के अनुसार पात्र आदि रखें।

पूर्व

**लोटा** प्रधान जलपात्र–अन्य कृत्य के लिए, **घंटी** सन्ध्या का विशेष जलपात्र, **छन्नी** चंदन–पुष्प आदि के लिए, **पञ्चपात्र** विनियोग आदि के लिए, **छोटा पञ्चपात्र** आचमन के लिए, **अर्घा** अर्घ तथा तर्पण के लिए।

दाहिनी अनामिका की जड़ में दो कुशाओं की और बाईं में तीन की पवित्री धारण कर, बाएँ हाथ में बहुत सी कुशाओं की, तथा दाहिने में तीन की गुच्छी ले ईशान-मुख हो आचमन करें।

**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।**

अंगूठे के मूल से दो बार होठों को पोंछ कर **ॐ हृषीकेशाय नमः** बोल कर हाथ धोएँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**विनियोग**

(पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ें)

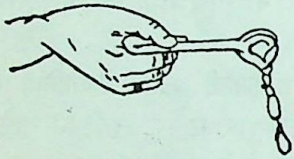

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः विष्णुर्देवता गायत्रीछन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।**

**पवित्र-करण-मन्त्र**

नीचे लिखे मंत्र से शरीर पर जल छिड़कें।

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।**
**यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥**

**विनियोग**

**ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।**

**आसन-पवित्र-करण-मन्त्र**

नीचे लिखे मन्त्र से आसन पर जल के छींटे दें।

**ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।**
**त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥**

**संकल्प**

दाहिने हाथ में जल आदि ले संकल्प (पृ॰ ६ के अनुसार) कर, अंत में **प्रातःसन्ध्योपासन-कर्म करिष्ये** कह कर जल छोड़ें।

**विनियोग**

**ॐ ऋतं चेत्यघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता आचमने विनियोगः।**

नीचे लिखे मन्त्र से आचमन करें।

**ॐऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥**

**(ततो वारिणात्मानं वेष्टयित्वा सप्रणवगायत्र्या रक्षां कुर्यात्।)**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



अपनी रक्षा के लिये दाहिने हाथ में जल ले कर, बाएँ हाथ से ढक, तीन बार गायत्रीमन्त्र से अभिमन्त्रित कर, उस जल को दाहिने तरफ से अपने चारों ओर छोड़ें।

**विनियोग**

**ॐ ओंकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।**

**ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्र-जमदग्नि-भरद्वाज-गौतमाऽत्रि-वसिष्ठ-कश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्य-श्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवादेवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।**

**ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सवितादेवताऽग्निर्मुखमुप-नयने प्राणायामे विनियोगः।**

**ॐ शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्यादेवताः प्राणायामे विनियोगः।**

**प्राणायाम-विधि**

इति ऋष्यादिकं स्मृत्वा बद्धासनः सम्मीलितनयनो मौनी प्राणायामत्रयं कुर्यात्। तत्र वायोरादानकाले पूरकनामा प्राणायामस्तत्र नीलोत्पलदल-श्यामं चतुर्भुजं विष्णुं नाभौ ध्यायेत्। धारणकाले कुम्भकस्तत्र कमलासनं रक्तवर्णं चतुर्मुखं ब्रह्माणं हृदि ध्यायेत्। त्यागकाले रेचकस्तत्र श्वेतवर्णं त्रिनयनं शिवं ललाटे ध्यायेत् त्रिष्वप्येतेषु प्रत्येकं त्रिर्मन्त्राभ्यासः। प्रत्येकमोङ्कारादि सप्तव्याहृतयः ओंकारादि सावित्री ओंकारद्वयमध्यस्थः शिरश्चेतिमन्त्रस्य स्वरूपम्॥

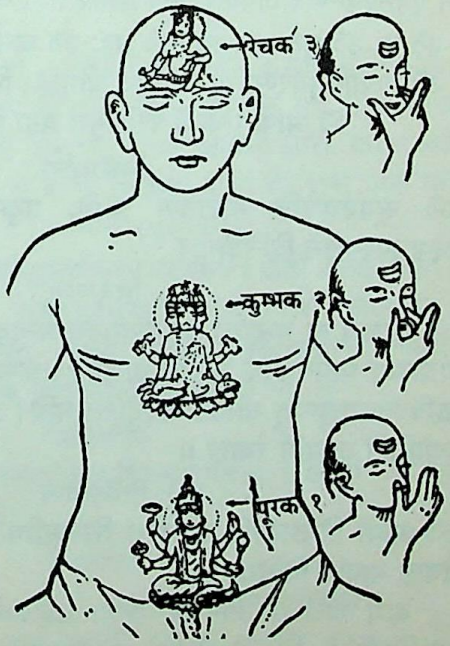


Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



पद्मासन करके, ऋषियों का स्मरण कर, मौन हो, नेत्रों को बंद कर, तीनों प्राणायाम करें।

**१. पूरक-प्राणायाम**—नासिका के दाहिने छिद्र को अंगूठे से दबा कर बाएँ छिद्र से श्वास खींचते हुए नीलकमल के सदृश श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णु का अपनी नाभि में ध्यान करें।

**२. कुम्भक-प्राणायाम**—उपर्युक्त छिद्र को दबाते हुए नासिका के बाएँ छिद्र को भी कनिष्ठा और अनामिका से दबा कर श्वास को रोक, कमल के आसन पर बैठे हुए रक्तवर्ण चतुर्मुख ब्रह्मा का अपने हृदय में ध्यान करें।

**३. रेचक-प्राणायाम**—श्वेतवर्ण, त्रिनेत्र शिवजी का अपने ललाट में ध्यान करते हुए नासिका के दाहिने छिद्र को खोल कर धीरे-धीरे श्वास छोड़ें।

### प्राणायाम-मन्त्र

चित्र के अनुसार ध्यान करते हुए नीचे लिखे मंत्र को प्रत्येक प्राणायाम में तीन-तीन बार एक साथ जपें अथवा प्रत्येक प्राणायाम में एक-एक बार जपकर, इस प्रकार तीन बार करें।

**ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।**
**ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥**
**ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥**

### विनियोग

**ॐ सूर्यश्चमेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।**

### आचमन

**ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि। इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥**

### विनियोग

**ॐ आपो हिष्ठेत्यादि त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्रीछन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।**

बायें हाथ में जल ले, कुशा या दाहिने हाथ की तीन बड़ी अंगुलियों से नीचे लिखे मन्त्र बोलते हुए, एक से सात तक अपने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



शरीर पर, आठवें से पृथ्वी पर और नौवें से मस्तक पर जल छोड़ें।

**ॐ आपो हिष्ठामयो भुवः १। ॐ ता नऽ ऊर्ज्जे दधातन २। ॐ महेरणाय चक्षसे ३। ॐ यो वः शिवतमो रसः४। ॐ तस्य भाजयते ह नः ५। ॐ उशतीरिव मातरः ६। ॐ तस्माऽ अरङ्गमाम वः ७। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ ८। ॐ आपो जनयथा च नः ९॥**

**विनियोग**

**ॐ द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः।**

नीचे लिखे मन्त्र से तीन या एक बार मस्तक पर जल छिड़कें।

**ॐ द्रुपदादिव मुमूचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव।**
**पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्ध्यन्तु मैनसः ॥**

**विनियोग**

**ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः।**

दाहिने हाथ में जल ले, नासिका के समीप करके नीचे लिखा मन्त्र एक बार या तीन बार पढ़ें और ध्यान करें कि यह जल श्वास के साथ नासिका के बाएँ छिद्र से भीतर जाकर अन्तः करण को शुद्ध करके दाहिने छिद्र से बाहर निकल आया है। उस जल को बिना देखे बाईं ओर फेंक दें। पश्चात् हाथ धोएँ।

**ॐ ऋतञ्चसत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥**

**विनियोग**

**ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीनऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।**

**आचमन**

**ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः।**
**त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम् ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**विनियोग**

**ॐ ओंकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः अग्निवायुसूर्या देवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः, अर्घ्यदाने विनियोगः।**

**अर्घ-विधि** (चित्र पृ० १५ पर देखिये)

जलाक्षत-पुष्पादि ले, खड़े हो, चित्र के अनुसार पैरों के अग्रभाग बराबर कर तथा तर्जनी से हाथों के अंगूठों को अलग कर नीचे लिखा मन्त्र प्रत्येक बार बोलते हुए थोड़ा झुक कर सूर्य की ओर उछालते हुए तीन अर्घ दें।

**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।**
**धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ॐ ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः ॥**

प्रातः सूर्योदय से तथा सायं सूर्यास्त से ३ घड़ी बाद सन्ध्या करें तो प्रायश्चित्त के निमित्त नीचे लिखे मन्त्र से एक अर्घ और दें।

**ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।**
**हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥**

**उपस्थान**

प्रातःकाल में दाहिना पैर या एड़ी उठाकर दोनो हाथों को सीधा रखते हुए, मध्याह्न में दोनो हाथों को ऊपर करके और सांयकाल में बैठे हुए दोनो हाथों को बंद कमल के समान जोड़कर उपस्थान करें। उपर्युक्त विधि से प्रत्येक विनियोग के साथ एक-एक मन्त्र बोलकर भी उपस्थान कर सकते हैं।

विनियोग : **ॐ उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, ॐ उदुत्यमिति प्रष्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता, ॐ चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्गाथर्वण ऋषि-रक्षरातीतपुर उष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता, सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



मन्त्र : **ॐ उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽ उत्तरम्। देवन्देवत्रा सूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम् ॥१॥ ॐ उदुत्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥ ॐ चित्रन्देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावापृथिवीऽ अन्तरिक्षꣳ सूर्यऽ आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥३॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥**

### षडंगन्यास

बैठकर नीचे लिखे मन्त्र बोलते हुए चित्र के अनुसार दाहिने हाथ से अंगों का स्पर्श करें। **१. ॐ हृदयाय नमः** हृदय में हथेली। **२. ॐ भूः शिरसे स्वाहा** मस्तक मे चारों अंगुलियों का अगला पर्व। **३. ॐ भुवः शिखायै वषट्** शिखा में अंगूठा। **४. ॐ स्वः कवचाय हुम्** हाथों को कुछ ऊँचा कर दाहिनी कनिष्ठा के मूल से बाईं तथा बाईं कनिष्ठा के मूल से दाहिनी भुजा का स्पर्श। **५. ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट्** मध्यमा तथा तर्जनी से नेत्रों का स्पर्श। **६. ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्** बाएँ हाथ की हथेली पर दाएँ हाथ की मध्यमा तथा तर्जनी से ताली बजाएँ। इस प्रकार तीन बार कर पश्चात् अपने चारों ओर चुटकी बजाएँ। पुनः आगे लिखे मन्त्र से अंगों का स्पर्श करें अथवा केवल मन्त्र बोलें।

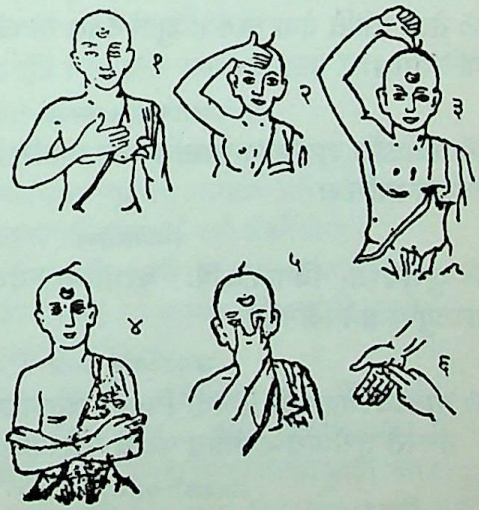


Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



ॐ तत्पदं पातु मे पादौ जङ्घे मे सवितुः पदम्।
वरेण्यं कटिदेशं तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥
देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा।
धियो मे पातु जिह्वायां तत्पदं पातु लोचने ॥
ललाटे नः पदं पातु मूर्द्धानं मे प्रचोदयात् ॥

### विनियोग

ॐ ओंकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता, ॐ त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्या देवता, ॐ गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः॥

### ध्यान

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता ॥
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ॥

### विनियोग

ॐ तेजोऽसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्री छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः।

### आवाहन-मन्त्र

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि। प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥

### विनियोग

ॐ तुरीयस्य विमलऋषिः परमात्मा देवता गायत्री छन्दः गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।

### उपस्थान-मन्त्र

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि। न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत् ॥

### गायत्री-शापविमोचन

ब्रह्मा, वसिष्ठ और विश्वामित्र ने गायत्री मन्त्र को शाप दे रखा है, अतः शाप-निवृत्ति के लिये शाप-विमोचन करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



### ब्रह्म-शापविमोचन

विनियोग : ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः।

मन्त्र : ॐ गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः।
तां पश्यन्ति धीराः सुमनसो वाच मग्रतः ॥

ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्।

ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव।

### वसिष्ठ-शापविमोचन

विनियोग : ॐ अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्त्ता वसिष्ठ ऋषिः वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

मन्त्र : ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम् ॥

योनिमुद्रा दिखाकर तीन बार गायत्री जपें।

ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव।

### विश्वामित्र-शापविमोचन

विनियोग : ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्त्ता विश्वामित्र ऋषिः विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

मन्त्र : ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विष्वगर्भां यदुद्भवाः।
देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये।
यन्मुखान्निःसृतोखिलवेदगर्भः ॥
शापयुक्ता तु गायत्री सफला न कदाचन।
शापादुत्तारिता सा तु भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥
ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव।

प्रार्थना : ॐ अहोदेवि ! महादेवि ! सन्ध्ये ! विद्ये ! सरस्वति !
अजरे ! अमरे ! चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तु ते ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव,**
**वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव, विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ॥**

**प्रातःकाले ब्रह्मरूपा-गायत्री-ध्यानम्**

**बालां विद्यां तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम्।**
**रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरां तथा ॥**
**कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम्।**
**ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम् ॥**
**मन्त्रेणावाहयेद्देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात् ॥**

ब्रह्मलोक में रहने वाली, ब्रह्माणी, कन्या रूप, हंस पर बैठी हुई, लाल रंग, चार भुजाओं तथा चार मुखों वाली, दो लाल वस्त्र धारण की हुई, हाथों में रुद्राक्ष की माला, दण्ड, कमण्डलु तथा ऋग्वेद लिये हुए सूर्यमण्डल से आती हुई भगवती गायत्री का ध्यान करें।

**गायत्री-हृदय**

**ॐ अस्य श्रीगायत्रीहृदयस्य नारायण ऋषिर्गायत्री छन्दः परमेश्वरी गायत्री देवता गायत्रीहृदयजपे विनियोगः।**

*अथाङ्गन्यासः* ॥ **द्यौर्मूर्ध्नि दैवतम्। दन्तपङ्क्तावश्विनौ। उभे सन्ध्ये चोष्ठौ। मुखमग्निः। जिह्वा सरस्वती। ग्रीवायां तु बृहस्पतिः। स्तनयोर्वसवोऽष्ठौ। वाह्वोर्मरुतः। हृदये पर्जन्यः। आकाशमुदरम्। नाभावन्तरिक्षम्। कट्योरिन्द्राग्नी। जघने विज्ञानघनः प्रजापतिः। कैलाशमलये उरः। विश्वेदेवा जान्वोः। जङ्घायां कौशिकः। गुह्यमयने। उरू पितरः। पादौ पृथ्वी। वनस्पतयोऽङ्गुलीषु। ऋषयो रोमाणि। नखानि मुहूर्तानि। अस्थिषु ग्रहाः। असृङ्मासं ऋतवः। संवत्सरा वै निमिषम्। अहोरात्रावादित्यश्चन्द्रमाः। प्रवरां दिव्यां गायत्रीं सहस्रनेत्रां शरणमहं प्रपद्ये। ॐ तत्सवितुर्वरेण्याय नमः। ॐ तत्पूर्वा जयाय नमः। ॐ तत्प्रातरादित्याय नमः। ॐ तत्प्रातरादित्य-प्रतिष्ठायै नमः। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातरधीयानोऽपापो भवति। सर्वतीर्थेषु स्नातो भवति। सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति। अवाच्य-वचनात्पूतो भवति। अभक्ष्यभक्षणात्पूतो भवति। अभोज्यभोजनात्पूतो भवति। अचोष्यचोषणात्पूतो भवति। असाध्यसाधनात्पूतो भवति। दुष्प्रतिग्रहशतसहस्रात्पूतो भवति। सर्वप्रतिग्रहात्पूतो भवति।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



पङ्क्तिदूषणात्पूतो भवति। अनृतवचनात्पूतो भवति। अथाऽब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति। अनेन हृदयेनाधीतेन क्रतुसहस्रेणेष्टं भवति। षष्ठिशतसहस्रगायत्र्या जप्यानि फलानि भवन्ति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयेत्। तस्य सिद्धिर्भवति। य इदं नित्यमधीयानो ब्राह्मणः प्रातः शुचिः सर्वपापैः प्रमुच्यत इति। ब्रह्मलोके महीयते। इत्याह भगवान् श्रीनारायणः ॥ *(देवी भागवत)*

### जप के पूर्व की चौबीस मुद्राएं

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा ॥
षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशं च ग्रन्थितं चोन्मुखोन्मुखम् ॥
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥
एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः ॥

### जप के पूर्व की चौबीस मुद्राएं करने की विधि

आकुंचिताङ्गुलिकरौ संयुतौ सुमुखं भवेत् १॥ कोषाकारं सम्पुटं स्याद्विततं विस्त्रितं भवेत् २-३॥ विस्तीर्णौ विततौ हस्तावन्यो न्याङ्गुलि संयुतौ ४॥ कनिष्ठानामिकायुक्तौ हस्तौ द्वौ द्विमुखं भवेत् ५॥ तदेव मध्यमायुक्तं त्रिमुखं परिकीर्तितम् ६॥ तदेव तर्जनीयुक्तं चतुर्मुखमुदीरितम् ७॥ तदेव स्यात् पञ्चमुखं मिलिताङ्गुष्ठकं यदि ८॥ तदेव षण्मुखं प्रोक्तं यद्यश्लिष्टकनिष्ठकम् ९॥ आकुंचिताग्रौ संयुक्तौ न्युब्जौ हस्तावधोमुखम् १०॥ उत्तानौ तादृशावेव व्यापकांजलिकः करः ११॥ अङ्गुष्ठद्वयसंयुक्तं मुष्टिद्वयमधोमुखम्। सम्प्रसार्य च तर्जन्यौ शकटं मुनिसत्तमाः १२॥ मुष्टिं कृत्वा करौ योज्यौ तर्जन्यौ सम्प्रसार्य च। आकुंचिताग्रौ संयोज्य यमपाशं विदुर्बुधाः १३॥ अन्यान्यायतसंश्लिष्ट दशाङ्गुलिकरावुभौ। अन्योन्यमभिबध्नीयात् ग्रन्थितं परिकीर्तितम् १४॥ कृत्वा करौ संपुटकौ पूर्वं वामकरं सुधिः। अधोमुखेन दक्षेण योजयेत् चोन्मुखोन्मुखम् १५॥ अधः कोषाकृतिकरौ प्रलम्बं कोविदो विदुः १६॥ युतं मुष्टिद्वयं चैव सम्यक् मुष्टिकमीरितम् १७॥ दक्षपाणिं पृष्ठदेशे वामपाणितलं न्यसेत्। अङ्गुष्ठौ चालयेत् सम्यक् मुद्रेयं मत्स्यरूपिणी १८॥ वामहस्ते च तर्जन्यां दक्षिणस्य कनिष्ठिका। तथा दक्षिणतर्जन्यां वामाङ्गुष्ठं नियोजयेत्॥ उन्नतं दक्षिणाङ्गुष्ठं वामस्य मध्यमादिकाः। अङ्गुलीर्योजयेत् पृष्ठे दक्षिणस्य करस्य च॥ वामस्य पितृतीर्थेन मध्यमानामिके तथा। अधोमुखे च ते कुर्याद्दक्षिणस्य करस्य च॥ कूर्मपृष्ठसमं कुर्याद्दक्ष-पाणिं च सर्वतः। कूर्ममुद्रेयमाख्याता देवताध्यानकर्मणि १९॥ तर्जनी दक्षहस्तस्य वामाङ्गुष्ठे निवेश्य च। हस्तेन हस्तं बध्नीयात् कोलमुद्रा समीरिता २०॥ प्रसारिताङ्गुलिकरौ समीपं कर्णयोर्नयेत्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



सिंहाक्रान्तं समुदितं गायत्रीजपतत्परैः २१।। दर्शयेत्छ्रोत्रयोर्मध्ये हस्तावङ्गुलिपञ्चकौ। महाक्रान्ता भवेन्मुद्रा गायत्रीहृदयं गता २२।। मुष्टिं कृत्वा करं दक्षं वामे करतले न्यसेत्। उच्छ्रितं च करं कृत्वा मुद्गरं समुदाहृतम् २३।। दक्षिणेन करेणैव चलिताङ्गुलिना करः। वदनाभिमुखं चैव पल्लवं मुनिभिः स्मृतम् २४ ॥

निम्न वर्णनानुसार चित्र देखकर मुद्रा बनाएँ।

**सुमुखम्** दोनों हाथों की अंगुलियां मोड़कर परस्पर मिलाएँ। **सम्पुटम्** दोनो हाथों को फुलाकर मिलाएँ। **विततम्** दोनों हाथों की हथेलियां परस्पर सामने करें। **विस्तृतम्** अंगुलियां खोलकर दोनों हाथों को कुछ अधिक अलग करें। **द्विमुखम्** दोनों हाथों की कनिष्ठा से कनिष्ठा तथा अनामिका से अनामिका मिलाएँ। **त्रिमुखम्** दोनों मध्यमाओं को भी मिलाएँ। **चतुर्मुखम्** दोनों तर्जनियां और मिलाएँ। **पञ्चमुखम्** दोनों अंगूठे और मिलाएँ। **षण्मुखम्** हाथ वैसे ही रखते हुए दोनों कनिष्ठा खोलें। **अधोमुखम्** उलटे हाथों की अंगुलियाँ मोड़कर तथा मिलाकर नीचे की ओर करें। **व्यापकांजलिकम्** वैसे ही मिले हुए हाथों को शरीर की तरफ से घुमाकर सीधा करें। **शकटम्** दोनो हाथों को उलटाकर, अंगूठे से अंगूठा मिला, तर्जनियाँ सीधी रखते हुए मुट्ठी बांधें। **यमपाशम्** तर्जनी से तर्जनी बांधकर दोनो मुट्ठियां बांधें। **ग्रन्थितम्** दोनों हाथों की अंगुलियाँ परस्पर गूंथें। **उन्मुखोन्मुखम्** हाथों की पाँचों अंगुलियों को मिला कर पहले बाएँ पर दाहिना फिर दाहिने पर बायां हाथ रखें। **प्रलम्बम्** अंगुलियाँ कुछ मोड़, दोनों हाथों को उल्टाकर नीचे की ओर करें। **मुष्टिकम्** दोनों अंगूठे ऊपर रखते हुए दोनों मुट्ठियां बांधकर मिलाएँ। **मत्स्यः** दाहिने हाथ की पीठ पर बायां हाथ उल्टा रखकर दोनों अंगूठे हिलाएँ। **कूर्मः** सीधे बाएँ हाथ की मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठा को मोड़कर उल्टे दाहिने हाथ की मध्यमा,.अनामिका को उन तीनो अंगुलियों के नीचे रखकर तर्जनी पर दाहिनी कनिष्ठा और बाएँ अंगूठे पर दाहिनी तर्जनी रखें। **वराहकम्** दाहिनी तर्जनी को बाएँ अंगूठे से मिला, दोनों हाथों की अंगुलियाँ परस्पर बांधें। **सिंहाक्रान्तम्** दोनों हाथ कानों के समीप करें। **महाक्रान्तम्** दोनों हाथों की अंगुलियाँ कानों के समीप करें। **मुद्गरम्** मुट्ठी बांध, दाहिनी कुहनी बाईं हथेली पर रखें। **पल्लवम्** दाहिने हाथ की अंगुलियाँ मुख के सामने हिलाएँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुमुखम्

सम्पुटम्

विततम्

विस्तृतम्

द्विमुखम्

त्रिमुखम्

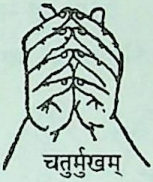
चतुर्मुखम्

पंचमुखम्

खण्मुखम्

अधोमुखम्

व्यापकांजलिकम्

शकटम्

यमपाशम्

ग्रन्थितम्

उन्मुखोन्मुखम्

प्रलम्बम्

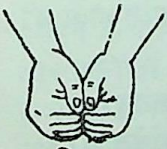
मुष्टिकम्

मत्स्यः

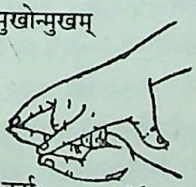
कूर्मः

वराहकम्

सिंहाक्रान्तम्

महाक्रान्तम्

मुद्गरम्

पल्लवम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



### गायत्री-मन्त्र

नीचे लिखे गायत्री मन्त्र का करमाला पर भी जप कर सकते हैं। गायत्री मन्त्र का २४ लक्ष जप करने से एक पुरश्चरण होता है। अतः स्वयं करें अथवा ब्राह्मण से जप कराएँ।

**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।**
**धियो यो नः प्रचोदयात् ॥**

### शक्तिमन्त्र जपने की करमाला

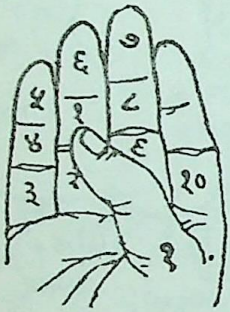


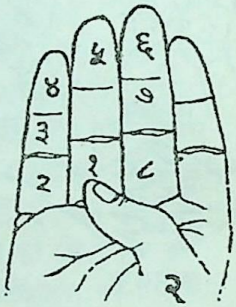


चित्र सं. १ के अनुसार अंक १ से आरम्भ कर १० अंक तक अंगूठे से जप करने से एक करमाला होती है। तर्जनी का मध्य तथा अग्र पर्व सुमेरु है। इसी प्रकार दस करमाला जपते समय बाएँ हाथ की कनिष्ठा की जड़ की लकीर से प्रारम्भ कर, तर्जनी की जड़ की लकीर तक दस गिन कर पश्चात् चित्र सं. २ के अनुसार अंक १ से आरंभ कर अंक ८ तक जप करने से १०८ की एक माला होती है।

### जप के बाद की आठ मुद्राएं

**सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिः शङ्खोऽथ पङ्कजम्।**
**लिङ्गं निर्वाणमुद्रा च जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत् ॥**

### जप के बाद की आठ मुद्राएं करने की विधि

अन्योन्याभिमुखी श्लिष्टा कनिष्ठानामिका पुनः। तथैव तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा समीरिता १॥ तर्जन्यंङ्गुष्ठकौ सक्तावग्रतो हृदि विन्यसेत्। वामहस्ताम्बुजं वामे जानु मूर्द्धनि विन्यसेत्। ज्ञानमुद्रा भवेदेषा रामचन्द्रस्य प्रेयसी २॥ तर्जन्यङ्गुष्ठकौ सक्तौ जान्वन्ते च विनिर्दिशेत्। वैराग्या ह्यस्ति मुद्रा च मुक्तिसाधनकारिका ३॥ मिथः कनिष्ठिके बद्ध्वा तर्जनीभ्यामनामिके। अनामिकोर्द्ध्वसंश्लिष्टे दीर्घमध्यमयोरथ। अङ्गुष्ठाग्रद्वये न्यस्य योनिमुद्रेयमीरिता ४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


वामाङ्गुष्ठं तु सङ्गृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना। कृत्वोत्तानां ततो मुष्टिमङ्गुष्ठन्तु प्रसारयेत् ॥ वामाङ्गुल्यस्तथा श्लिष्टाः संयुक्ताः स्युः प्रसारिताः। दक्षिणाङ्गुष्ठसंस्पृष्टा मुद्रैषा शङ्खमुद्रिका ५॥ हस्तौ तु सम्मुखं कृत्वा संहतप्रोन्नताङ्गुली। तलान्तमिलिताङ्गुष्ठौ कृत्वैषा पद्ममुद्रिका ६॥ उच्छ्रितं दक्षिणाङ्गुष्ठं वामाङ्गुष्ठेन बध्नयेत्। वामाङ्गुलीर्दक्षिणाभिरङ्गुलीभिश्च बध्नयेत्। लिङ्गमुद्रेयमाख्याता शिवसान्निध्यकारिणी ७॥ अधोमुखं वामकरं तदूर्द्ध्वं दक्षिणन्तथा। उत्तानं स्थापयित्वा च संयुक्ताङ्गुलिकौ तदा ॥ हस्तौ तु मुष्टिकौ कृत्वा श्रोत्रपार्श्वे च कारयेत्। तर्जन्यौ दर्शयेदूर्द्ध्वमेषा निर्वाणसंस्मृता ८॥

निम्न वर्णनानुसार चित्र देख कर मुद्रा बनाएँ :

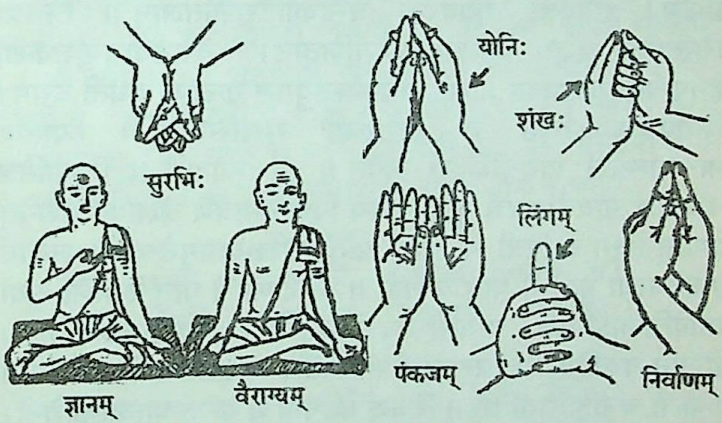


**सुरभिः** दोनों हाथों की अंगुलियां गूंथ, बाएँ हाथ की तर्जनी से दाहिने हाथ की मध्यमा, मध्यमा से तर्जनी, अनामिका से कनिष्ठा और कनिष्ठा से अनामिका को मिलाएँ। **ज्ञानम्** दाहिने हाथ तर्जनी से अंगूठा मिलाकर हृदय में तथा इसी प्रकार बायां हाथ घुटने पर रखें। **वैराज्ञम्** दोनों तर्जनियों से अंगूठे मिलाकर घुटनों पर सीधे रखें। **योनिः** दोनों मध्यमाओं के नीचे से बाईं तर्जनी के ऊपर दाहिनी अनामिका और दाहिनी तर्जनी पर बाईं अनामिका रख दोनों तर्जनियों से बांध, दोनों मध्यमाओं को ऊपर रखें। **शङ्खः** बाएँ अंगूठे को दाहिनी मुट्ठी में बांध, दाहिने अंगूठे से बाईं अंगुलियाँ मिलाएँ। **पङ्कजम्** दोनो हाथों के अंगूठे तथा अंगुलियाँ मिलाकर ऊपर की ओर करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


**लिङ्गम्** दाहिने अंगूठे को सीधा रखते हुए दोनो हाथों की अंगुलियाँ गूंथ, बायां अंगूठा दाहिने अंगूठे की जड़ के ऊपर रखें। **निर्वाणम्** उलटे बाएँ हाथपर दाहिना हाथ सीधा रख, अंगुलियाँ परस्पर गूंथ, दोनों हाथ अपनी तरफ से घुमा, दोनों तर्जनिया सीधी कान के समीप करें।

## गायत्री-कवच

**ॐ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो गायत्री देवता ॐ भूः बीजम्, भुवः शक्तिः, स्वः कीलकम्, गायत्री प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥** अथ ध्यानम् **॥ पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्यकोटिसम-प्रभाम्। सावित्रीं ब्रह्मवरदां चन्द्रकोटिसुशीतलाम् ॥ त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहारविराजिताम्। वराभयाङ्कुशकशा हेमपात्राक्षमालिकाम् ॥ शङ्खचक्राब्जयुगलं कराभ्यां दधतीं वराम्। सितपङ्कजसंस्थां च हंसारूढां सुखस्मिताम् ॥ ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गायत्रीकवचं जपेत् ॥** ॐ ब्रह्मोवाच **॥ विश्वामित्र महाप्राज्ञ गायत्रीकवचं श्रृणु। यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत् क्षणात् ॥१॥ सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी। ललाटं ब्रह्मदैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी ॥२॥ कर्णौ मे पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बिके। गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ ॥३॥ द्विजान् यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती। साङ्ख्यायनी नासिका मे कपोलौ चन्द्रहासिनी ॥४॥ चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघनाशिनी। स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवादिनी ॥५॥ उदरं विश्वभोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया। जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी ॥६॥ पार्श्वौ मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गोगोप्त्रिकाऽवतु। ऊर्वोरोङ्काररूपा च जान्वोः सन्ध्यात्मिकाऽवतु ॥७॥ जङ्घयोः पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका। सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रा पादाङ्गुलीषु च ॥८॥ सर्वाङ्गं वेदजननी पातु मे सर्वदाऽनघा। इत्येतत्कवचं ब्रह्मन् गायत्र्याः सर्वपावनम्। पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्वरोगनिवारणम् ॥९॥ त्रिसन्ध्यं यः पठेद्विद्वान् सर्वान् कामानवाप्नुयात्। सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स भवेद्वेदवित्तमः ॥१०॥ सर्वयज्ञफलं प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात्। प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थांश्चतुर्विधान् ॥११॥**

॥ श्रीविश्वामित्रसंहितोक्तं गायत्रीकवचं सम्पूर्णम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


## गायत्री-तर्पण

(केवल प्रातःसन्ध्या में करें)

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः गायत्री तर्पणे विनियोगः ॥

ॐ भूः ऋग्वेदपुरुषं तर्पयामि। ॐ भुवः यजुर्वेदपुरुषं तर्पयामि। ॐ स्वः सामवेदपुरुषं तर्पयामि।ॐ महः अथर्ववेदपुरुषं तर्पयामि। ॐ जनः इतिहासपुराणपुरुषं तर्पयामि। ॐ तपः सर्वागमपुरुषं त॰। ॐ सत्यं सत्यलोकपुरुषं त॰। ॐ भूः भूर्लोकपुरुषं त॰। ॐ भुवः भुवर्लोकपुरुषं त॰। ॐ स्वः स्वर्लोकपुरुषं त॰। ॐ भूः एकपदां गायत्रीं त॰। ॐ भुवः द्विपदां गायत्रीं त॰। ॐ स्वः त्रिपदां गायत्रीं त॰। ॐ भूर्भुवः स्वः चतुष्पदां गायत्रीं त॰। ॐ उषसीं त.। ॐ गायत्रीं त॰। ॐ सावित्रीं त॰। ॐ सरस्वतीं त॰। ॐ वेदमातरं त॰। ॐ पृथिवीं त॰। ॐ अजां त॰। ॐ कौशिकीं त॰। ॐ सांस्कृतिं त॰। ॐ सार्वजितीं त॰। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ *(देवी भागवत)*

### प्रदक्षिणा-मन्त्र

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे ॥

### क्षमा-प्रार्थना

यदक्षर-पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ! ॥

### विनियोग

ॐ उत्तमे शिखरे इत्यस्य वामदेव ऋषिः गायत्री देवता अनुष्टुप्छन्दः गायत्री-विसर्जने विनियोगः ॥

### विसर्जन

ॐ उत्तमे शिखरे देवि ! भूम्यां पर्वतमूर्द्धनि !
ब्राह्मणेभ्यो मनुज्ञाता गच्छ देवि ! यथासुखम् ॥

सन्ध्या समाप्त होने पर पात्रों में बचा हुआ जल अपवित्र हो जाता है, इसलिये उसे फेंक देना चाहिये। जंपादि समाप्त होने के पश्चात् आसन के नीचे जल छोड़ कर मस्तक में लगाएँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


## मध्याह्न-सन्ध्या

(प्रातःसन्ध्या के अनुसार करें)

प्राणायाम के बाद **ॐ सूर्यश्चमेति** के विनियोग तथा आचमन-मन्त्र के स्थान पर नीचे लिखा विनियोग तथा मन्त्र पढ़ें।

विनियोग : **ॐ आपः पुनन्त्विति ब्रह्मा ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥**

आचमन : **ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहꣳ स्वाहा॥**

उपस्थान : चित्र के अनुसार दोनों हाथ ऊपर करें।

अर्घ : सीधे खड़े हो सूर्य को एक अर्घ दें।

### विष्णुरूपा-गायत्री-ध्यानम्

(प्रातःसन्ध्या में चित्र देखें)

**ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससाम्।**
**युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डलसंस्थिताम् ॥**

सूर्यमण्डल में स्थित, युवावस्था वाली, पीला वस्त्र, शंख-चक्र-गदा तथा पद्म धारण कर गरुड़ पर बैठी हुई यजुर्वेद से युक्त गायत्री का ध्यान करें।

## सायं-सन्ध्या

(प्रातःसन्ध्या के अनुसार करें)

पश्चिमाभिमुख हो सूर्य रहते करना उत्तम है। प्राणायाम के बाद **ॐ सूर्यश्चमेति** के विनियोग तथा आचमनमन्त्र के स्थान पर नीचे लिखे विनियोग तथा मन्त्र पढ़ें।

विनियोग : **ॐ अग्निश्च मेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी ।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चैह च पावनम् ॥

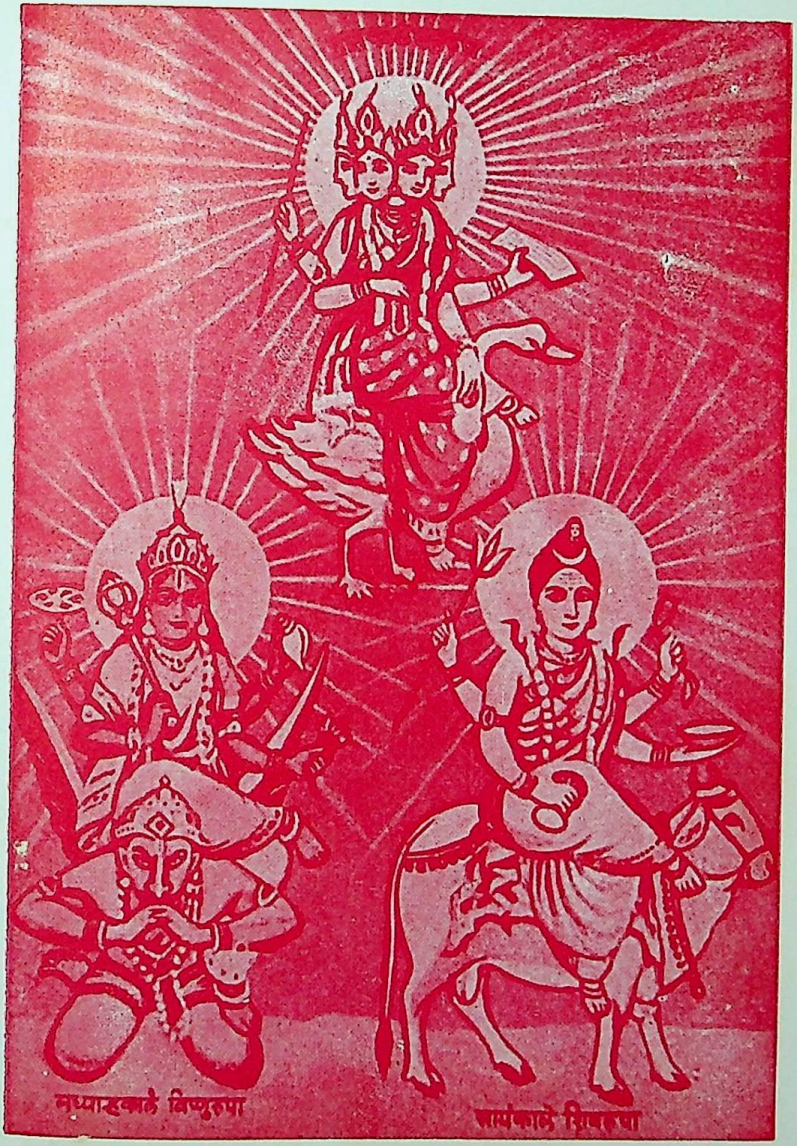


Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आचमन : **ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद् दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥**

**अर्घ :** बैठे हुए तीन अर्घ दें।

**उपस्थान :** चित्र के अनुसार दोनों हाथ बन्द कर कमल के सदृश करें।

## शिवरूपा-गायत्री-ध्यानम्

(प्रातःसन्ध्या में चित्र देखें)

**ॐ सायाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम्।**
**सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम् ॥**

सूर्यमण्डल में स्थित, वृद्धारूपा, त्रिशूल-डमरू-पाश तथा पात्र लिये बैल पर बैठी हुई सामवेद से युक्त गायत्री का ध्यान करें।

## पञ्च-महायज्ञ

**पञ्च सूना गृहस्थस्य चुल्ली-पेषण्युपस्करः। कण्डनी चोदकुम्भश्च बध्यते यास्तु वाहयन् ॥**
**तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः। पञ्च क्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम् ॥**
**अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्। होमो दैवो बलिर्भूतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥**

चूल्हा (अग्नि जलाने से), चक्की (पीसने में), बुहारी (बुहारने से), ओखली (कूटने से), और जल के स्थान में (जलपात्र के नीचे जीवों के दबने से) जो पाप होते हैं, उन पापों के लिये **ब्रह्मयज्ञ**—वेद, वेदांग तथा पुराणादि पढ़ना और पढ़ाना, **पितृयज्ञ**—श्राद्ध तथा तर्पण, **देवयज्ञ**--देवताओं का पूजन और हवन, **भूतयज्ञ**—बलि वैश्वदेव, **मनुष्ययज्ञ**—अतिथि-सत्कार, इन पांच यज्ञों को नित्यप्रति करना चाहिये। (मनु.)

## तर्पण-विधि

आचारादर्शादि ग्रन्थों में लिखा है कि घर में अमावस्या, पितृपक्ष, विशेष तिथि तथा श्राद्ध के दिन तिल से तर्पण करें। किन्तु अन्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


दिन घर में तिल से तर्पण न करें।

तर्पण का जल सूर्योदय से आधे प्रहर तक अमृत, एक प्रहर तक मधु, डेढ़ प्रहर तक दूध और साढ़े तीन प्रहर तक जलरूप में पितरों को प्राप्त होता है। इसके उपरान्त का दिया हुआ जल राक्षसों को प्राप्त होता है।

**अग्रैस्तु तर्पयेद्देवान् मनुष्यान् कुशमध्यतः। पितॄंस्तु कुशमूलाग्रैर्विधिः कौशो यथाक्रमम् ॥**

कुशा के अग्रभाग से देवताओं का, मध्य से मनुष्यों का और मूल तथा अग्रभाग से पितरों का तर्पण करें।

### तर्पण

पूर्वाभिमुख बैठ, दूसरा वस्त्र ले, आचमन कर, दो कुशाओं की पवित्री दाहिने तथा तीन की बाएँ हाथ की अनामिका की जड़ में धारण करें। तीन कुशाओं को सीधा बट कर ग्रन्थि लगा, कुशाओं का अग्र भाग पूर्व की ओर रखते हुए दाहिने हाथ में जलादि लेकर, संकल्प में नाम पर्यन्त बोल कर **श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं देवर्षि-मनुष्य-पितृतर्पणं करिष्ये** कह कर जलादि छोड़ें।

### आवाहन (तीर्थ में न करें)

**ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः।**
**आगच्छन्तु महाभागाः ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः ॥**

### देव-तर्पण

देवतीर्थ (चित्र पृष्ठ १५ पर देखें) अर्थात् अंगुलियों के अग्रभाग तथा कुशाओं के अग्रभाग से चावल सहित प्रत्येक को एक-एक अंजलि दें।

**ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृ०। ॐ ऋषयस्तृ०। ॐ पुराणाचार्यास्तृ०। ॐ गन्धर्वास्तृ०। ॐ इतराचार्यास्तृ०। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृ०। ॐ देवानुगास्तृ०। ॐ नागास्तृ०। ॐ सागरास्तृ०। ॐ पर्वतास्तृ०। ॐ सरितस्तृ०। ॐ मनुष्यास्तृ०। ॐ यक्षास्तृ०। ॐ रक्षांसि तृ०। ॐ पिशाचास्तृ०। ॐ सुपर्णास्तृ०। ॐ भूतानि तृ०। ॐ पशवस्तृ०। ॐ वनस्पतयस्तृ०। ॐ ओषधयस्तृ०। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम् ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



### ऋषि-तर्पण

(ऋषियों को भी उसी प्रकार दें)

**ॐ मरीचिरस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिरस्तृ०। ॐ अङ्गिरारस्तृ०। ॐ पुलस्त्यरस्तृ०। ॐ पुलहरस्तृ०। ॐ क्रतुरस्तृ०। ॐ वसिष्ठरस्तृ०। ॐ प्रचेतारस्तृ०। ॐ भृगुरस्तृ०। ॐ नारदरस्तृ०॥**

*(ततः उत्तराभिमुखः कण्ठीकृत्वा)*

### दिव्य-मनुष्य-तर्पण

उत्तराभिमुख हो, जनेऊ तथा गमछे को कण्ठीकर कायतीर्थ–कनिष्ठा का मूल (चित्रानुसार) तथा कुशाओं के मध्य से जौ सहित प्रत्येक को दो-दो अंजलि दें।

**ॐ सनकरस्तृप्यताम् २। ॐ सनन्दनरस्तृ० २। ॐ सनातनरस्तृ० २। ॐ कपिलरस्तृ० २ । ॐ आसुरिस्तृ० २। ॐ वोढुरस्तृ० २। ॐ पञ्चशिखरस्तृ० २॥** *(ततोऽपसव्यं दक्षिणाभिमुखः पतितवामजानुः)*

### दिव्य-पितृ-तर्पण

दक्षिणाभिमुख हो, बायां घुटना मोड़ अपसव्य हो (जनेऊ तथा अंगोछे को दाहिने कन्धे पर कर) पितृतीर्थ (चित्र पृष्ठ १५ पर देखें) तर्जनी मूल तथा कुशा के अग्रभाग और मूल से तिल सहित प्रत्येक नाम से तीन-तीन अंजलियां दक्षिण में दें।

**ॐ कव्यवाडनलरस्तृप्यताम् इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा। ॐ सोमरस्तृप्यताम् इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३। ॐ यमरस्तृप्यताम् इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३। ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३। ॐ अग्निष्वात्तारस्तृप्यन्ताम् इदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३। ॐ सोमपारस्तृप्यन्ताम् इदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३। ॐ बर्हिषदस्तृप्यन्ताम् इदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३।**

### यम-तर्पण

चौदह यमों को भी उसी प्रकार तीन-तीन अंजलियां दें।

**ॐ यमाय नमः ३। ॐ धर्मराजाय नमः ३। ॐ मृत्यवे नमः ३। ॐ अन्तकाय नमः ३। ॐ वैवस्वताय नमः ३। ॐ कालाय नमः ३।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ३। ॐ औदुम्बराय नमः ३। ॐ दध्नाय नमः३। ॐ नीलाय नमः ३। ॐ परमेष्ठिने नमः ३। ॐ वृकोदराय नमः ३। ॐ चित्राय नमः ३। ॐ चित्रगुप्ताय नमः ३ ॥**

### पितृ-तर्पण

पितृ आवाहन के लिये नीचे लिखे वाक्य से एक अंजलि दें।

**ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्त्वपोऽञ्जलिम् ॥**

नीचे लिखे वेद-मन्त्रों का यदि शुद्ध उच्चारण न कर सकें, तो केवल **ॐ अद्य अमुक गोत्रः** से बोल कर प्रत्येक को तीन-तीन अंजलियां दें। **अमुक** शब्द तथा पितरों की उपाधि के लिये संकल्प (पृ० ६) देखें।

**ॐ उदीरतामवरऽ उत्परासऽ उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं यऽ ईयुरवृकाऽ ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्रः अस्मत्पिता** *अमुकः* **वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा** (पिता को पहली अंजलि दें) **॥ ॐ अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वाऽ अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वयꣳ यज्ञियाना-मपि भद्रे सौमनसे स्याम॥ ॐ अद्य** अमुक **गोत्रः अस्मत्पिता** अमुकः **वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा** (दूसरी अंजलि दें)**॥ ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिः ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्रः अस्मत्पिता** *अमुकः* **वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा** (तीसरी अंजलि दें) **॥**

**ॐ ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन् ॥ ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्रः अस्मत्पितामह** *अमुकः* **रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा** ( दादा को पहली अंजलि दें) **॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरो मीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्रः अस्मत्पितामह** *अमुकः* **रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा** (दूसरी अंजलि दें) **॥ ॐ ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**याँऽ उ च न प्रविद्म। त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञꣳ सुकृतं जुषस्व ॥ ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्रः अस्मत्पितामह** *अमुकः* **रुद्र स्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा** (तीसरी अंजलि दें) ॥

**ॐ मधु वाताऽ ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्रः अस्मत्प्रपितामह** *अमुकः* **आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा** (परदादा को पहली अंजलि दें)। **ॐ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्रः अस्मत्प्रपितामह** *अमुकः* **आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा** (दूसरी अंजलि दें)॥ **ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः** *अमुकः* **आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा** (तीसरी अंजलि दें) ॥

नीचे लिखे वाक्य बोल कर एक-एक अंजलि दें।

**ॐ तृप्यध्वम्। ॐ तृप्यध्वम्। ॐ तृप्यध्वम्।**

माता, दादी और परदादी को तीन-तीन अंजलियां दें।

**ॐ अद्य अमुक गोत्राऽस्मन्माता** *अमुकी* **देवी गायत्रीस्वरूपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥** (माता)

**ॐ अद्य अमुक गोत्राऽस्मत्पितामही** *अमुकी* **देवी सावित्री-स्वरूपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥** (दादी)

**ॐ अद्य अमुक गोत्राऽस्मत्प्रपितामही** *अमुकी* **देवी सरस्वती-स्वरूपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥** (परदादी)

**ॐ अद्य अस्मत्सापत्नमाता अमुक गोत्रा** *अमुकी* **देवी गायत्री-स्वरूपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥**(सौतेलीमाता)

नीचे लिखा मन्त्र प्रत्येक बार बोलकर नाना को तीन अंजलियाँ दें।

**ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो द्वेष्मैतद्वः पितरो वासऽ आधत्त ॥ ॐ अद्य** *अमुक*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**गोत्रोऽस्मन्मातामहः** *अमुकः* **अग्निस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३ ।।** (नाना)

आगे लिखा मन्त्र प्रत्येक बार बोलकर परनाना को तीन अंजलियां दें।

**ॐ नमो वः पितरो० ।। ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्रोऽस्मत्प्रमातामहः** *अमुकः* **वरुणस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा३।।** (परनाना)

नीचे लिखा मन्त्र प्रत्येक बार बोलकर वृद्धपरनाना को तीन अंजलियां दें।

**ॐ नमो वः पितरो० ।। ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्रोऽस्मद्वृद्ध-प्रमातामहः** *अमुकः* **प्रजापतिस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा३।।** (वृद्ध परनाना)

नानी, परनानी और वृद्धपरनानी को तीन-तीन अंजलि दें।

**ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्राऽस्मन्मातामही** *अमुकी* **देवी गङ्गारूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ।।** (नानी)

**ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्राऽस्मत्प्रमातामही** *अमुकी* **देवी यमुनारूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ।।** (परनानी)

**ॐ अद्य** *अमुक* **गोत्राऽस्मद्वृद्धप्रमातामही** *अमुकी* **देवी सरस्वतीरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ।।** (वृद्ध परनानी)

नीचे लिखे स्वर्गीय संबन्धियों का गोत्र, संबन्ध तथा नाम उच्चारण कर प्रत्येक को तीन-तीन अंजलि दें। गुरु, दादा, परदादा, ताऊ, चाचा, भाई, पुत्र, श्वसुर, मामा और फूफा आदि तथा उन लोगों की पत्नियां, अपनी पत्नी, बहन और पुत्री आदि को अंजलियां दें। पश्चात् पूर्वाभिमुख हो जनेऊ और अंगोछे को बाएँ कन्धे पर रखकर देवतीर्थ से नीचे लिखे मन्त्र से जलधारा छोड़ें।

**ॐ देवाऽसुरास्तथा यक्षा-नागा-गन्धर्व-राक्षसाः।**
**पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः ।।**
**जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः।**
**तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः ।।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



दक्षिणाभिमुख हो, जनेऊ एवम् अंगोछे को दाहिने कन्धे पर रखकर पितृतीर्थ से नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़कर जलधारा छोड़ें।

**नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः।**
**तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया ।।**
**येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।**
**ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति ।।**
**ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः।**
**तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम् ।।**
**आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः।**
**तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ।।**
**अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्।**
**आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ।।**

अंगोछे की चार तह कर, उसमें तिल तथा जल छोड़ कर नीचे लिखे मन्त्र से जल के बाहर बाईं ओर पृथ्वी पर निचोड़ें।

**ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।**
**ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ।।**

हाथ में बंटी हुई जो कुशाएँ हैं, उन्हे खोलकर त्याग दें किन्तु पवित्री न त्यागें। पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से भीष्मपितामह को एक अंजलि दें।

**भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।**
**आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम् ।।**

पूर्वाभिमुख तथा सव्य हो, आचमन करें तथा नीचे लिखे प्रत्येक नाम से एक-एक अंजलि दें।

**ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ दिग्भ्यो नमः। ॐ दिग्देवताभ्यो नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ मित्राय नमः। ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।।**

नीचे लिखे मन्त्र से सूर्य को अर्घ दें, पश्चात् जल को नेत्रों पर लगाएँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने ॥
ॐ देवागातु विदोगातुं वित्त्वा गातुमित।
मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः ॥
*कृतेनानेन तर्पणेन पितृरूपी जनार्दनः प्रीयताम्।*

क्षमाप्रार्थना प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥

## ब्रह्म-यज्ञ

मण्डल-ब्राह्मण तथा उपनिषद् आदि श्रुतियों का पाठ करें या नीचे लिखा पाठ करें।

"अनुवाकम्"– ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यम्मध्वायुर्दधद्यज्ञ-पतावविहुतम्। वातजूतो योऽ अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति ॥ "पुरुषसूक्तम्"– ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमिꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ "शिवसङ्कल्पः"– ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्प-मस्तु॥ "मण्डलब्राह्मणम्"– ॐ यदेतन्मण्डलं तपति तन्महदुक्थन्ताऽ ऋचः सऽ ऋचां लोकोऽथ यदेतदर्चिर्दीप्यते तन्महाव्रतं तानि समानि स साम्नां लोकोऽथ यऽ एषऽ एतस्मिन् मण्डले पुरुषः सोऽग्निस्तानि यजूꣳषि स यजुषां लोकः। "यजुर्वेदः"– ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मा व स्तेनऽ ईशत माघशꣳ सो ध्रुवाऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात् वह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥ "ऋग्वेदः"– ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥ "सामवेदः"– ॐ अग्नऽ आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि ॥ "अथर्ववेदः"– ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥
अनेन ब्रह्मयज्ञाख्येन कर्मणा श्रीभगवान् परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



# नित्य-होम

तिल से आधे चावल, चावलों से आधे जौ, जौं से आधी चीनी, और यथेष्ट घृत तथा मेवा मिलाकर साकल्य बनाएँ। संकल्पवाक्य के अन्त में **श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं नित्यहोमं करिष्ये** कहें। वेदी पर पञ्चभू संस्कार करें। १. कुशाओं से वेदी साफ कर उन्हें ईशानकोण में फेंकें। २. गोबर और जल लेपन करें। ३. स्रुवा के मूल से पूर्व की ओर उत्तरोत्तर प्रादेशमात्र की तीन लकीरें खीचें। ४. अनामिका और अंगूठे से उन लकीरों में से किंचित् मिट्टी निकालें। ५. वेदी पर जल छिड़कें। ६. अग्निकोण से अग्नि लाकर नीचे लिखे मन्त्र से नैर्ऋत्यकोण में किंचित् अग्नि छोड़ें।

### विनियोग

**ॐ क्रव्यादमग्निमिति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवताऽग्निसंस्कारे विनियोगः।**

### मन्त्र

**ॐ क्रव्यादमग्निं प्रहिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतु रिप्रवाहः। इहैवायमितरो जातवेदो देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥**

विनियोग : **ॐ अयन्ते योनिरिति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता अग्निस्थापने विनियोगः ॥**

मन्त्र : **ॐ अयन्ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातोऽ अरोचथाः। तञ्जानन्नग्नऽ आरोहाथा नो बर्द्धया रयिम् ॥**

नीचे लिखे मन्त्र से वेदी के पूर्व में उत्तराग्र कुशा रखें।

**ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥**

नीचे लिखे मन्त्र से वेदी के दक्षिण में पूर्वाग्र कुशा रखें।

**ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमध्न्याऽ इन्द्राय भागम्प्रजावती रनमीवाऽ अयक्षमा मावस्तेनऽ ईशतमाघशꣳ सो ध्रुवाऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात् वह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥**

नीचे लिखे मन्त्र से वेदी के पश्चिम में उत्तराग्र कुशा रखें।

**ॐ अग्नऽ आयाहि वीतये गृहाणो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



नीचे लिखे मन्त्र से वेदी के उत्तर में पूर्वाग्र कुशा रखें।

**ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः ॥**

अग्नि प्रज्वलित कर नीचे लिखे मन्त्र से अग्नि का ध्यान करें।

**ॐ चत्वारि शृङ्गाः त्रयोऽ अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्ता सोऽ अस्य। त्रिधा बद्धो बृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँऽ२ आविवेश ॥**

**मुखं यः सर्वदेवानां हव्यभुक् कव्यभुक् तथा।**
**पितृणां च नमस्तुभ्यं विष्णवे पावकात्मने ॥**

प्रार्थना : **ॐ अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषध्वज ! मम सम्मुखो भव ॥**

**ॐ पावकाग्नये नमः** इस मन्त्र से अग्नि का पूजन करें और कनिष्ठा को अलग रखते हुए सीधे हाथ से आहुति दें।

**ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम १ ॥ ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम २ ॥ ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ३ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम ४ ॥ ॐ धन्वन्तरये स्वाहा। इदं धन्वन्तरये न मम ५ ॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम ६ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम ७ ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ८ ॥ ॐ देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम ९ ॥ ॐ मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम १० ॥ ॐ पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम ११ ॥ ॐ आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम १२ ॥ ॐ एनसऽ एनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम १३ ॥ ॐ यच्चाहमेनो विद्वाँश्चकार यच्चाविद्वाँस्तस्य सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम १४ ॥**

प्रार्थना : **ॐ सप्त तेऽ अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्रः सप्तधा त्वा जयन्ति सप्त योनिरापृणस्व घृतेन स्वाहा। इदमग्नये न मम १५ ॥ अनेन होमेन श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥**

स्रुवा से भस्म ले 'भस्म-धारण मन्त्र से' लगाएं, वेदी की कुशाओं को अग्नि में डालें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



# देवपूजा-विधि

पूजन-सामग्री को शुद्ध करके यथास्थान रखकर विधिपूर्वक पूजन करें।

**नाङ्गुष्ठैर्मर्दयेद्देवं नाधःपुष्पैः समर्चयेत्। कुशाग्रैर्न क्षिपेत्तोयं वज्रपातसमं भवेत् ॥**

देवताओं को अंगूठे से न मलें और पुष्प अधोमुख करके न चढ़ाएँ तथा कुशा के अग्रभाग से देवताओं पर जल न छिड़कें। ऐसा करना वज्रपात के तुल्य है (आचार मयूख)।

**त्रिर्देवेभ्यः प्रक्षालयेत् सकृत् पितृभ्यः ॥**

देवताओं को तीन बार और पितरों को एक बार धो कर अक्षत चढ़ाएँ (आपस्तम्ब)।

**नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम्। न दूर्वया यजेद् दुर्गां विल्वपत्रैश्च भास्करम् ॥**
**दिवाकरं वृन्तहीनैर्विल्वपत्रैः समर्चयेत् ॥**

विष्णु को चावल, गणेश को तुलसी, दुर्गा को दूर्वा, और सूर्यनारायण को विल्वपत्र न चढ़ाएँ। किन्तु डंडी तोड़ कर विल्वपत्र सूर्यनारायण को चढ़ा सकते हैं।

**अधोवस्त्रधृतं चैव जलेऽन्तःक्षालितं च यत्। देवतास्तत्र गृह्णन्ति पुष्पं निर्माल्यतां गतम् ॥**

धोती में रखा हुआ और जल में डुबोया हुआ पुष्प निर्माल्य हो जाता है। इसलिये देवता उसे ग्रहण नही करते (आह्निक)।

**शिवे विवर्जयेत् कुन्दमुन्मत्तं च तथा हरौ। देवीनामर्कमन्दारौ सूर्यस्य तगरं तथा ॥**

शिव को कुन्द, विष्णु को धतूरा, देवी को आक तथा मदार और सूर्य को तगर का पुष्प न चढ़ाएँ।

**तुलसी-मंजरीभिर्यः कुर्यात् हरिहरार्चनम्। न स गर्भगृहं याति मुक्तिभागी न संशयः ॥**

तुलसी की मंजरी से जो विष्णु भगवान् तथा शिव की पूजा करता है उसको गर्भ में वास नही करना पड़ता। वह अवश्य मुक्ति पाता है।

**पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम्। यथोत्पन्नं तथा देयं विल्वपत्रमधोमुखम् ॥**

पत्र, पुष्प तथा फल का मुख नीचे करके न चढ़ाएँ। वे जैसे उत्पन्न होते हैं उन्हे वैसे ही चढ़ाना चाहिये। किन्तु विल्वपत्र उलटा करके चढ़ाएँ (आह्निक)।

**पर्णमूले भवेद् व्याधिः पर्णाग्रे पापसम्भवः। जीर्णपत्रं हरत्यायुः शिरा बुद्धिविनाशिनी ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



पान की डंडी से व्याधि और अग्रभाग से पाप होता है। सड़ा पान आयु और शिरा बुद्धि को नष्ट करती है। इसलिये डंडी, अग्रभाग और शिरा निकाल दें (आचारार्क)।

### वृक्ष से तुलसीग्रहण-मन्त्र

**तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया।**
**केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने! ॥**

संक्रान्ति, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, रविवार और सन्ध्या के समय तुलसी तोड़ना निषिद्ध है। यदि विशेष आवश्यकता हो तो नीचे लिखे मन्त्र से तोड़ सकते हैं।

**त्वदङ्गसम्भवेन त्वां पूजयामि यथा हरिम्।**
**तथा नाशय विघ्नं मे ततो यान्ति परां गतिम् ॥**

पूर्वाभिमुख बैठकर बाईं ओर घंटा, धूप तथा दाहिनी ओर शंख, जलपात्र तथा पूजन की सामग्री रख, आचमन, प्राणायाम करके संकल्पवाक्य के अन्त में **शालग्रामपूजनं तदङ्गत्वेन गणपत्यादि-देवानां मण्डले स्थापनं पूजनं च करिष्ये** कहकर जलादि छोड़ें।

### दीपक-पूजन

तैल का दीपक अपनी बाईं तथा धृत का दाहिनी ओर पूर्व या उत्तर मुख करके चावल आदि पर रख प्रज्वलित कर हाथ धो, नीचे लिखी प्रार्थना करें।

**भो दीप! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।**
**यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ॥**

### घण्टा-पूजन

आवाहन के लिये घंटा बजा कर पश्चात् घंटे का पूजन करें।

**आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु राक्षसाम्। घण्टा-नादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टां प्रपूजयेत् ॥**

### शंख-पूजन

शंख में जल भरकर शंखमुद्रा दिखा पूजाकर आगे लिखी प्रार्थना करें।

**त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।**
**निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य! नमोऽस्तुते ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## स्वस्तिवाचन

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। अविघ्नमस्तु ॥ ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥ ॐ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽ अवसा गमन्निह ॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ ॐ शतमिन्नु शरदोऽ अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥ ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवाऽ अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ ॐ यतो यतः समीहसे ततो नोऽ अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ ॐ विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्नऽ आसुव ॥ ॐ एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव ॥ ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वे देवासऽ इह मादयन्तामोम्ऽ३ प्रतिष्ठ ॥ एष वै

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रै तेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति ॥ ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

## पुण्याहवाचन

*तत्रादौ युग्मब्राह्मणानां हस्तेषु।* (यजमानः) शिवा आपः सन्तु। (ब्राह्मणाः) सन्तु शिवा आपः। *इति जलम् ॥* (यजमानः) सुगन्धाः पान्तु। (ब्राह्मणाः) सौमङ्गल्यं चास्तु। *इति गन्धम् ॥* (यजमानः) सौमनस्यमस्तु। (ब्राह्मणाः) अस्तु सौमनस्यम्। *इति पुष्पम् ॥* (यजमानः) अक्षतं चारिष्टं चास्तु। (ब्राह्मणाः) अस्त्वक्षतमरिष्टं च। *इत्यक्षतान् ॥* (यजमानः) सफलताम्बूलानि पान्तु। (ब्राह्मणाः) ऐश्वर्यमस्तु। *इति सफलताम्बूलम् ॥* (यजमानः) दक्षिणाः पान्तु। (ब्राह्मणाः) बहुदेयं चास्तु। *इति दक्षिणा ॥* (यजमानः) ॐ स्वर्चितमस्तु। (ब्राह्मणाः) अस्त्वर्चितं मङ्गलं च। *इति जलम् ॥* दीर्घायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो बहुपुत्रं बहुधनं चास्तु। यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वणाशीर्वचनं वह्रृषिसमनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। वाच्यताम् (इति ब्राह्मणवचनम्) (पुनः यजमानो ब्रूयात्) व्रतजपनियमतपस्वाध्यायक्रतुदमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् ॥ (ब्राह्मणाः) समाहितमनसः स्म। (यजमानो ब्रूयात्) प्रसीदन्तु भवन्तः॥ (ब्राह्मणाः) प्रसन्नाः स्म ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



*ततो यजमानः अवनीकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना जलपूर्णं (सुवर्णयुक्तं) कलशं धारयित्वा भूमौ स्थापिते पात्रद्वये प्रथमपात्रे किंचिदुदकं पातयेत्।*

(ततः ब्राह्मणाः वदेयुः) ॐ शान्तिररस्तु। पुष्टिररस्तु। वृद्धिररस्तु। ऋद्धिररस्तु। अविघ्नमरस्तु। आयुष्यमरस्तु। आरोग्यमरस्तु। शिवमरस्तु। शिवं कर्मास्तु। कर्मसमृद्धिररस्तु। पुत्रसमृद्धिररस्तु। वेदसमृद्धिररस्तु। शास्त्रसमृद्धिररस्तु। धनधान्यसमृद्धिररस्तु। इष्टसम्पदरस्तु। अरिष्टनिरसनमरस्तु। यच्छ्रेयस्तदरस्तु। *ततो द्वितीय पात्रे पातयेत्।* यत्पापमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु। *पुनः प्रथमपात्रे पातयेत्।* उत्तरोत्तरे कर्मण्यविघ्नमरस्तु। उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिररस्तु। उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम् ॥ तिथिकरणमुहूर्त-नक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। तिथिकरणे सुमुहूर्ते सुनक्षत्रे सुग्रहे सुदैवते प्रीयेताम्। अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। माहेश्वरीपुरोगा मातरः प्रीयन्ताम्। वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ऋषयश्छन्दाँस्याचार्याः वेदाः देवाः यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। अम्बिकासरस्वत्यौ प्रीयेताम्। श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। *पुनः द्वितीयपात्रे पातयेत्।* हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्च परिपन्थिनः। हताश्च विघ्नकर्तारः। शत्रवः पराभवं यान्तु। शाम्यन्तु घोराणि। शाम्यन्तु पापानि। शाम्यन्त्वीतयः। *पुनः प्रथमपात्रे पातयेत्।* शुभानि वर्द्धन्ताम्। शिवा आपः सन्तु। शिवा ऋतवः सन्तु। शिवा अग्नयः सन्तु। शिवा आहुतयः सन्तु। शिवा वनस्पतयः सन्तु। शिवा अतिथयः सन्तु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्। योगक्षेमो नः कल्पताम्। शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमादित्यरूपाः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। भगवान्नारायणः प्रीयताम्। भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारे यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु ॥

*ततो यजमानः सुवर्णकलशं भूमौ निधाय प्रथमपात्रपातितजलेन शिरः सम्मृज्य सपरिवारगृहांश्चाभिषेचयेत्। द्वितीयपात्रजलमेकान्ते पातयेत्।*

(यजमानो ब्रूयात्) ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्। वेदवृक्षोद्भवं पुण्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणाः! मम सपरिवारस्य गृहे पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ (ब्राह्मणाः) ॐ पुण्याहम् ३। ॐ पुनन्तु मा देवजनः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ (यजमानः) पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत् कल्याणं पुराकृतम्। ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणाः! मम सपरिवारस्य गृहे कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मणाः) ॐ कल्याणम् ३। ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्याꣳ शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुपमादो नमतु ॥ (यजमानः) सागरस्य च या लक्ष्मीर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता। सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणाः! मम सपरिवारस्य गृहे ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मणाः) ॐ ऋद्ध्यताम् ३। ॐ सत्रस्यऽ ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृताऽ अभूम। दिवं पृथिव्याऽ अध्याऽरुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः ॥ (यजमानः) स्वस्त्यस्तु ह्यविनाशाख्या नित्यं मङ्गलदायिनि। विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणाः! मम सपरिवारस्य गृहे स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ (ब्राह्मणाः) ॐ स्वस्ति ३। ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ (यजमानः) समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्द कारिका। हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणाः! मम सपरिवारस्य गृहे श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मणाः) ॐ अस्तु श्रीः ३। ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं मऽ इषाण सर्व

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**लोकं मऽ इषाण ॥** *ततस्तिलकाशीर्वादः। अथ दक्षिणा दानम्।* **ॐ अद्य पुण्याहवाचनसांगतासिद्ध्यर्थं पुण्याहवाचकेभ्यो नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां यथाशक्ति हिरण्यमूल्यद्रव्यदक्षिणां सम्प्रददे ॥**

**॥ इति पुण्याहवाचनम् ॥**

**अंगन्यास** (पूरे मन्त्र शालग्राम पूजन में लिखे हैं)

**ॐ सहस्रशीर्षा॰**—*वामकरे।* **ॐ पुरुषऽ एवेदꣳ सर्वम्॰**—*दक्षिणकरे।* **ॐ एतावानस्य महिमा॰**—*वामपादे।* **ॐ त्रिपादूर्ध्व॰**—*दक्षिणपादे।* **ॐ ततो विराडजायत॰**—*वामजानुनि।* **ॐ तस्माद्यज्ञात्॰**—*दक्षिणजानुनि।* **ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽ ऋचः॰**—*वामकट्याम्।* **ॐ तस्मादश्वा॰**—*दक्षिणकट्याम्।* **ॐ तं यज्ञम्॰**—*नाभौ।* **ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः॰**—*हृदि।* **ॐ ब्राह्मणोऽस्य॰**—*कण्ठे।* **ॐ चन्द्रमा मनसो॰**—*वामबाहौ।* **ॐ नाभ्याऽ आसीत्॰**—*दक्षिणबाहौ।* **ॐ यत्पुरुषेण॰**—*मुखे।* **ॐ सप्तास्या॰**—*अक्ष्णोः।* **ॐ यज्ञेन यज्ञम्॰**—*मूर्ध्नि ॥*

**पञ्चांगन्यास**

**ॐ अद्भ्यः सम्भृतः॰**—*हृदये।* **ॐ वेदाहमेतम्॰**—*शिरसि।* **ॐ प्रजापतिश्च॰**—*शिखायाम्।* **ॐ यो देवेभ्यऽ आतपति॰**—*कवचाय हुम्।* **ॐ रुचं ब्राह्मम्॰**—*अस्त्राय फट् ॥*

**करन्यास**

**ॐ ब्राह्मणोऽस्य॰**—*अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।* **ॐ चन्द्रमा॰**—*तर्जनीभ्यां नमः।* **ॐ नाभ्याऽ आसीत्॰**—*मध्यमाभ्यां नमः।* **ॐ यत्पुरुषेण॰**—*अनामिकाभ्यां नमः।* **ॐ सप्तास्यासन्॰**—*कनिष्ठिकाभ्यां नमः।* **ॐ यज्ञेन यज्ञम्॰**—*करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः ॥*

## गणपति तथा अम्बिका-पूजन

सुपारी पर मौली लपेट कर चावलों कर स्थापित पर नीचे लिखा ध्यान करके आवाहनं मन्त्र से अक्षत छोड़ें। मूर्ति हो तो पुष्प छोड़ें।

**गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।**
**उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥**
**ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।**
**ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



*आवाहन* आगच्छ भगवन् देव ! स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधो भव ।।
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आवाहयामि।*

*प्रतिष्ठा* अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।।
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रतिष्ठापयामि।*

*आसन* रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ।।
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि।*

*पाद्य* उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ।।
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पाद्यं समर्पयामि।*

*अर्घ्य* अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह।
करुणां कुरु मे देव ! गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ।।
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।*

*आचमन* सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ।।
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयं जलं समः।*

*स्नान* गङ्गा - सरस्वती - रेवा - पयोष्णी - नर्मदाजलैः।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे ।।
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।*

*दुग्धस्नान* कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ।।
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पयस्नानं समर्पयामि।*

*दधिस्नान* पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दधिस्नानं समर्पयामि।*

*घृतस्नान* नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृतस्नानं समर्पयामि।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



*मधुस्नान* तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुस्नानं समर्पयामि।*

*शर्करास्नान* इक्षुसारसमुद्भूता शर्करापुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।*

*पञ्चामृत* पयोदधिघृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।*

*शुद्धोदक* मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।*

*वस्त्र* सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि।*

*उपवस्त्र* ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमा सदत्सवः।
वासोऽ अग्ने विश्वरूपꣳ सं व्ययस्व विभावसो ॥
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।*

*यज्ञोपवीत* नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।*

*मधुपर्क* कांस्ये कांस्येन पिहितो दधिमध्वाज्यसंयुतः।
मधुपर्को मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।*

*गन्ध* श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।*

*रक्तचन्दन* रक्तचन्दनसम्मिश्रं पारिजातसमुद्भवम्।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम् ॥
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, रक्तचन्दनं समर्पयामि।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



*रोली* **कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामनाकामसम्भवम्।**
**कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कुंकुमं समर्पयामि।*

*सिन्दूर* **सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्।**
**शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।*

*अक्षत* **अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।**
**मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतं समर्पयामि।*

*पुष्प* **पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः।**
**पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पं समर्पयामि।*

*माला* **माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।**
**मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमाल्यां समर्पयामि।*

*बिल्वपत्र* **त्रिशाखैर्विल्वपत्रैश्च अछिद्रैः कोमलैः शुभैः।**
**तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विल्वपत्रं समर्पयामि।*

*दूर्वा* **त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरैरपि।**
**सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकार्यकरी भव ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वां समर्पयामि।*

*दूर्वांकुर* **दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।**
**आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वांकुरान् समर्पयामि।*

*शमीपत्र* **शमी शमय मे पापं शमी लोहितकण्टका।**
**धारण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शमीपत्रं समर्पयामि।*

*आभूषण* **अलङ्कारान् महादिव्यान्नानारत्नविनिर्मितान्।**
**गृहाण देवदेवेश! प्रसीद परमेश्वर! ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आभूषणं समर्पयामि।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



*अबीरगुलाल* **अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।**
**अबीरेणार्चितो देव! अतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अबीरं समर्पयामि।*

*सुगन्धतैल* **चम्पकाशोकवकुल - मालती - मोगरादिभिः।**
**वासितं स्निग्धताहेतुं तैलं चारु प्रगृह्यताम् ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धिततैलं समर्पयामि।*

*धूप* **वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।**
**आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।*

*दीप* **आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।**
**दीपं गृहाण देवेश ! त्रैलोक्यमितिरापहम् ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि।*

*नैवेद्य* **शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम्।**
**उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।*

*पानीयजल* **अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धिं च पिबेच्छया।**
**त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यतृप्ते महात्मनि ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मध्येपानीयं जलं समर्पयामि।*

*ऋतुफल* **नारिकेलफलं जम्बूफलं नारङ्गमुत्तमम्।**
**कूष्माण्डं पुरतो भक्त्या कल्पितं प्रतिगृह्यताम् ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलं समर्पयामि।*

*आचमन* **गङ्गाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्।**
**आचम्यतां सुरश्रेष्ठ ! शुद्धमाचमनीयकम् ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनं समर्पयामि।*

*अ॰ऋतुफल* **इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।**
**तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अखण्डऋतुफलं समर्पयामि।*

*ताम्बूलपू॰ फ॰* **पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।**
**एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ताम्बूलं पूगीफलं च समर्पया॰।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



*दक्षिणा* **हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।**
**अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।*

*आरती* **चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्नि तथैव च।**
**त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आरार्तिक्यं समर्पयामि।*

*पुष्पांजलि* **नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।**
**पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ! ॥**
*श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि।*

*प्रार्थना* **रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष ! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।**
**भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥**
*अनया पूजया गणेशाम्बिकें प्रीयेतां न मम।*

## कलश-पूजन

अष्टदल-कमल बना, धान्य रख उसपर कलश-स्थापना करें।

*भूमिस्पर्श* **ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीन्दृꣳ ह पृथिवीम्मा हिꣳ सीः॥**

*धान्य* **ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वोदानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वामहीनाम्पयोऽसि ॥**

*सप्तधान्य पर कलश स्थापन* **ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वाविशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः ॥**

*कलश में जल* **ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमासीद ॥**

(निम्न सभी वस्तुएँ कलश में छोड़ें)

*गन्ध* **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥** *गन्धं समर्पयामि।*

*सर्वौषधि* **ॐ याऽ ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**बभ्रुणा महꣳ शतन्धामानि सप्त च ॥** *सर्वौ. समर्प० ।*

*दूर्वा* **ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥** *दूर्वां समर्पयामि ।*

*पञ्चपल्लव* **ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृतः। गोभाजऽ इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥** *पञ्चपल्लवं समर्पयामि ।*

*सप्तमृत्तिका* **ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथा ॥** *सप्तमृत्तिकां समर्पयामि ।*

*पूगीफल* **ॐ याः फलिनीर्याऽ अफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः ॥** *पूगीफलं समर्प० ।*

*पञ्चरत्न* **ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे ॥** *पञ्चरत्नानि समर्पयामि ।*

*सुवर्ण या द्रव्य* **ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेकऽ आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम ॥** *द्रव्यं समर्पयामि ।*

*वस्त्र* **ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥** *वस्त्रं समर्पयामि ।*

*पूर्णपात्र* **ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहाऽ इषमूर्जꣳ शतक्रतो ॥** *पूर्णपात्रं समर्पयामि ।*

(पूर्णपात्र कलश पर रखें)

*श्रीफल* **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽ इषाण सर्वलोकं मऽ इषाणं ॥** *श्रीफलं समर्पयामि ।*

(नारियल पर लाल वस्त्र लपेट कर पूर्णपात्र पर रखें)

*वरुणावाहन* **ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह वोध्युरुशꣳ स मा नऽ आयुः प्र मोषीः ॥** *अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, स्थापयामि, पूजयामि।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



*आवाहन* सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ।।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ।।

*प्रतिष्ठा* ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वे देवा सऽ इह मादयन्तामोऽ३म् प्रतिष्ठ।। *कलशे वरुणाद्यावाहिता देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।।* पूजन कर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

देवदानवसंवादे मध्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि यदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैत्रिकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव ।।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।।

*प्रसन्नो भव! वरदो भव! अनया पूजया श्रीवरुणाद्या देवताः प्रीयन्तां न मम।* अक्षत छोड़ें।

## नवग्रह-पूजन

बाएँ हाथ में अक्षत ले दाहिने हाथ से प्रत्येक मन्त्र के बाद छोड़ें।

**सूर्य** – मण्डल के मध्य में (गोलाकार, लाल)

**ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।**
**हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।**

*ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य! इहागच्छ, इह तिष्ठ। सूर्याय नमः।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**चन्द्र** – अग्निकोण में (अर्धचन्द्र, श्वेत)

**ॐ इमन्देवाऽ असपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽ एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा ॥**

*ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र ! इहागच्छ, इह तिष्ठ। चन्द्राय नमः।*

**मंगल** – दक्षिण में (त्रिकोण, लाल)

**ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽ अयम्। अपाꣳ रेताꣳ सि जिन्वति ॥** *ॐ भूर्भुवः स्वः भौम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ। भौमाय नमः।*

**बुध** – ईशानकोण में (बाण, हरा)

**ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽ अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥**

*ॐ भूर्भुवः स्वः बुध ! इहागच्छ, इह तिष्ठ। बुधाय नमः।*

**बृहस्पति** – उत्तर में (अष्टदल, पीला)

**ॐ बृहस्पतेऽ अति यदर्योऽ अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥**

*ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते ! इहागच्छ, इह तिष्ठ। बृहस्पतये नमः।*

**शुक्र** – पूर्व में (पञ्चकोण, श्वेत)

**ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥**

*ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र ! इहागच्छ, इह तिष्ठ। शुक्राय नमः।*

**शनि** – पश्चिम में (मनुष्य, काला)

**ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥**

*ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चर ! इहागच्छ, इह तिष्ठ। शनैश्चराय नमः।*

**राहु** – नैर्ऋत्यकोण में (मकर, काला)

**ॐकयानश्चित्रऽ आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥**

*ॐ भूर्भुवः स्वः राहो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ। राहवे नमः।*

**केतु** – वायव्यकोण में (काली ध्वजा)

**ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्याऽ अपेशसे समुषद्भिरजायथाः ॥**

*ॐ भूर्भुवः स्वः केतो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ। केतवे नमः।*

**ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


पूजन कर आगे लिखी प्रार्थना करें।

**ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।**
**गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥**

*अनया पूजया सूर्यादि नवग्रहाः प्रीयन्तां न मम ॥* अक्षत छोड़ें।

## पञ्चलोकपाल-पूजन

बाएँ हाथ में अक्षत ले दाएँ हाथ से प्रत्येक मन्त्र के बाद छोड़ें।

*गणपति*–**ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसोमम। आहमजानिगर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥**

*ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते ! इहागच्छ, इह तिष्ठ। गणपतये नमः।*

*देवि*–**ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममाराती यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥**

*ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे ! इहागच्छ, इह तिष्ठ। दुर्गायै नमः।*

*वायु*–**ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्त्रिणीभिरूप याहियज्ञम्। वायोऽ अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदानः ॥** *ॐ भूर्भुवः स्वः वायो ! इहागच्छ, इहतिष्ठ। वायवे नमः।*

*आकाश*–**ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥**

*ॐ भूर्भुवः स्वः ! आकाश इहागच्छ, इह तिष्ठ। आकाशाय नमः।*

*अश्विनी*–**ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षताम्। उपयाम गृहीतोऽस्यश्विभ्यान्त्वैषते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ॥** *ॐ भूर्भुवः स्वरश्विना ! इहागच्छ, इह तिष्ठ। अश्विनीभ्यां नमः।* (इत्यावाह्य) **ॐ गणपत्यादिपञ्चलोकपालेभ्यो नमः** से पूजन करें पश्चात् **अनया पूजया पञ्चलोकपालाः प्रीयन्तां न मम** बोलकर अक्षत छोड़ें।

## दशदिक्पाल-पूजन

बाएँ हाथ में अक्षत ले दाहिने हाथ से प्रत्येक मन्त्र के बाद छोड़ें।

**इन्द्र** (पूर्व में) **ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


**शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥** *इन्द्राय नमः। इन्द्रं आवाहयामि, स्थापयामि।*

*अग्नि* (अग्निकोण में) **ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँऽ आसादयान्विह ॥** *अग्नये नमः। अग्निं आवाहयामि, स्थापयामि।*

*यम* (दक्षिण में) **ॐ असि यमोऽ अस्यादित्योऽ अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्तऽ आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥** *यमाय नमः। यमं आवाहयामि, स्थापयामि।*

*निर्ऋति* (नैर्ऋत्यकोण में) **ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेन स्येत्या मन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसातऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥** *निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिं आवा०, स्थाप०।*

*वरुण* (पश्चिम में) **ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचक्रे ॥** *वरुणाय नमः। वरुणं आवाह., स्थापयामि।*

*वायु* (उत्तरकोण में) **ॐ वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसायज्ञम्। शिवो नियुद्भिः शिवामि ॥** *वायवे नमः। वायुं आवाह०, स्थाप०।*

*कुबेर* (उत्तर में) **ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमऽ उक्तिं यजन्ति॥** *कुबेराय नमः। कुबेरं आवाहयामि, स्थापयामि।*

*ईशान* (ईशानकोण में) **ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियन्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।** *ईशानाय नमः। ईशानं आवाह०, स्थाप०।*

*ब्रह्मा* (ईशान-पूर्व के मध्य में) **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽ आवः। स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥** *ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणं आवाह०, स्थाप.।*

*अनन्त* (नैर्ऋत्य-पश्चिम के मध्य में) **ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽ अन्तरिक्षः तेभ्यो सर्पेभ्यो नमः ॥**

*अनन्ताय नमः। अनन्तं आवाहयामि, स्थापयामि।*

**ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः** से पूजन करें, पश्चात् **अनया पूजया दशदिक्पालदेवताः प्रीयन्तां न मम** कहकर अक्षत छोड़ें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



### षोडशमात्रिका-पूजन

बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से प्रत्येक नाम पर छोड़ें।

**गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।**
**देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ।।**
**हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः।**
**गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ।।**

*ॐ भूर्भुवः स्वः षोडशमातृकाभ्यो नमः। इहागच्छत, इह तिष्ठत।* ॐ **गौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः** पूजन कर, नीचे लिखी प्रार्थना करें।

**जयन्ती मङ्गलाकाली भद्रकाली कपालिनी।**
**दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ।।**

**अनया पूजया गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्तां न मम** बोलकर अक्षतद्व छोड़ें।

### चतुःषष्टियोगिनी पूजन

बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से नीचे लिखे मन्त्र से छोड़ें।

**आवाहयाम्यहं देवीः योगिनीः परमेश्वरीः।**
**योगाभ्यासेन सन्तुष्टाः परध्यानसमन्विताः।**
**चतुःषष्टिः समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः ।।**

*ॐ चतुःषष्टियोगिनीमातृकाभ्यो नमः। इहागच्छत, इह तिष्ठत ।।*

पूजन कर, नीचे लिखे वाक्य से अक्षत छोड़ें ।

**अनया पूजया चतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्तां न मम ।।**

### रक्षा-विधान

बाएँ हाथ में पीली सरसों अथवा चावल, द्रव्य और तीन तार की मौली लेकर दाहिने हाथ से ढक कर नीचे लिखे मन्त्र बोलें।

**गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्।**
**विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ।।**
**स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्।**
**धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ।।**
**दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्।**
**राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ।।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्चैव तपोधनान्।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ।।
वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम्।
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम् ।।
विद्याधिका ये मुनयः आचार्याश्च तपोधनाः।
तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा ।।

आगे लिखे मन्त्रों से दसों दिशाओं में पीली सरसों या चावल छोड़ें।

पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेय्यां गरुडध्वजः।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैर्ऋत्यां मधुसूदनः ।।
पश्चिमे चैव गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः।
उत्तरे श्रीपती रक्षेत् ऐशान्यां तु महेश्वरः ।।
ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु।
एवं दश दिशो रक्षेद् वासुदेवो जनार्दनः ।।
रक्षाहीनन्तु यत्स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक्।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा ।।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।
अपक्रामन्तु ते भूता ये भूता भूतले स्थिताः ।।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ।।

पश्चात् मौली गणेशजी के सम्मुख रख दें। फिर उस मौली को गणपत्यादि समस्त देवताओं पर चढ़ा कर रक्षाबन्धन करें।

ब्राह्मण के हाथ में दक्षिणा दे कर रक्षा बांधें पश्चात् तिलक करें।

### ब्राह्मण-रक्षाबन्धन-मन्त्र

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा-श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

### ब्राह्मण-तिलक-मन्त्र

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



आगे लिखे मन्त्रों से यजमान को रक्षा बाँधकर तिलक करें।

**यजमान-रक्षाबन्धन-मन्त्र**

**येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।**
**तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥**

**यजमान-तिलक-मन्त्र**

**ॐ शतमानं भवति शतायुर्वै पुरुषः।**
**शतेन्द्रिय आयुरेवेन्द्रियं वीर्यमात्मन् धत्ते ॥**

## शालग्राम-पूजन

शालग्राम तथा प्रतिष्ठित मूर्तियों में आवाहन न करें, केवल पुष्प छोड़ें।

आवाहन **ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥** *आवाहयामि।*

आसन **ॐ पुरुषऽ एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥** *आचमनं समर्पयामि।*

पाद्य **ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि ॥** *पाद्यं समर्पयामि।*

अर्घ्य **ॐ त्रिपादूर्ध्वऽ उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽ अभि ॥** *अर्घ्यं समर्पयामि।*

आचमन **ॐ ततो विराडजायत विराजोऽ अधि पूरुषः। स जातोऽ अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥** *आचमनं समर्पयामि।*

स्नान **ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥** *स्नानं समर्पयामि।*

(दुग्ध, दधि, घृत, मधु और शर्करास्नान के बाद शुद्धोदकस्नान कराएँ)

दुग्ध **ॐ पयः पृथिव्यां पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥** *दुग्धस्नानं समर्पयामि।*

दधि **ॐ दधिक्राव्णोऽ अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रणऽ आयूꣳषि तारिषत् ॥** *दधिस्नानं समर्पयामि।*

घृत **ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥** *घृतस्नानं समर्पयामि।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



मधु ॐ मधुवाताऽ ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ *मधुस्नानं समर्पयामि।*

शर्करा ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम्। अपाꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥ *शर्करास्नानं स०।*

पञ्चामृतस्नान ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥ *पञ्चामृतस्ना० सम०।*

शुद्धोदकस्नान ॐ कावेरी नर्मदा वेणी तुङ्गभद्रा सरस्वती। गङ्गा च यमुना चैव ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम् ॥ गृहाण त्वं रमाकान्त स्नानाय श्रद्धया जलम् ॥ *शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।*

वस्त्र ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ *वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।*

यज्ञोपवीत ॐ तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽ अजावयः ॥ *यज्ञोपवीतं समर्पया०।*

मधुपर्क ॐ दधि मध्वाज्य संयुक्तं पात्रयुग्म-समन्वितम्। मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदो भव शोभन ॥ *मधुपर्कं स०, आचमनीयं जलं स०।*

गन्ध ॐ तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥ *गन्धं समर्पयामि।*

अक्षत (श्वेत तिल चढ़ाएँ, चावल नहीं) ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽ अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती यो जान्विन्द्र ते हरि ॥ *अक्षतान् समर्पयामि।*

पुष्प ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा ॥ *पुष्पं समर्पयामि।*

पुष्पमाला ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽ इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥ *पुष्पमाल्यां समर्पयामि।*

तुलसीपत्र ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किम्बाहू किमूरू पादाऽ उच्येते ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां व मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ॥

ॐ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ *तुलसीपत्रं समर्पयामि।*

*बिल्वपत्र* तुलसीविल्वनिम्बैश्च जम्बीरैरामलैः शुभैः। पञ्चविल्वमितिख्यातं प्रसीद परमेश्वर ॥ *बिल्वपत्रं समर्पयामि।*

*दूर्वा* विष्ण्वादिसर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदा सदा। क्षीरसागरसम्भूते ! वंशवृद्धिकरी भव ॥ *दूर्वां समर्पयामि।*

*शमीपत्र* शमी शमयते पापं शमी शत्रुविनाशिनी। धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी ॥ *शमीपत्रं समर्पयामि।*

*आभूषण* रत्नकङ्कणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च। सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व भोः ॥ *आभूषणानि समर्पयामि।*

*अबीर-गुलाल* नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्। अबीर नामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम् ॥ *अबीरं समर्पयामि।*

*सुगन्धतैल* तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च। मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर ॥ *सुगन्धतैलं समर्पयामि।*

*धूप* ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रोऽ अजायत ॥ ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

*धूपमाघ्रापयामि।*

*दीप* ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽ अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ *दीपं दर्शयामि।*

**नैवेद्य**

तुलसीदल डालकर आगे लिखी पाँच ग्रास-मुद्राएँ दिखाएँ।

**प्राणय स्वाहा**—*कनिष्ठा, अनामिका और अंगूठा मिलाएँ।*

**अपानाय स्वाहा**-*अनामिका, मध्यमा और अंगूठा मिलाएँ।*

**व्यानाय स्वाहा**—*मध्यमा, तर्जनी और अंगूठा मिलाएँ।*

**उदानाय स्वाहा**—*तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अंगूठा मिलाएँ।*

**समानाय स्वाहा**—*सभी अंगुलियां अंगूठे से मिलाएँ।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



ॐ नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँऽ२ अकल्पयन् ॥ यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽ अबध्नन् पुरुषम्पशुम् ॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥ वेदाहमेतम्पुरुषं महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥ प्रजापतिश्चरति गर्भेऽ अन्तरजायमानो बहुधा विजायते। तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥ यो देवेभ्यऽ आतपति यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥ रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवाऽ अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वै वं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽ असन्वशे ॥ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुं मऽ ईषाण सर्व लोकं मऽ ईषाण ॥ *नैवेद्यं निवेदयामि।*

पानीयजल **एलोशीरलवङ्गादि कर्पूरपरिवासितम्। प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥** *मध्येपानीयं जलं समर्पयामि।*

ऋतुफल **बीजपूराम्र-मनस-खर्जूरी-कदली-फलम्। नारिकेल फलं दिव्यं गृहाण परमेश्वर ॥** *ऋतुफलं समर्पयामि।*

आचमन **कर्पूरवासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहृतम्। आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं हि भक्तितः ॥** *आचमनीयं जलं समर्पयामि।*

नारियल **फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्। तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥** *अखण्ड ऋतुफलं सम०।*

ताम्बूल-पूगीफल **ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥** *ताम्बूलं समर्पयामि।*

दक्षिणा **पूजाफलसमृद्ध्यर्थं दक्षिणा च तवाग्रतः। स्थापिता तेन मे प्रीतः पूर्णान् कुरु मनोरथान् ॥** *दक्षिणां समर्पयामि।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## आरती

प्रथम, चरणों की चार, नाभि की दो, मुख की एक या तीन बार और समस्त अंगों की सात बार आरती करें। पश्चात् शंख-जल भक्तों पर छिड़कें।

**कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरन्तु प्रदीपितम्।**
**आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव ॥**

### श्रीसत्यनारायणजी की आरती

*जय लक्ष्मीरमणा, श्रीलक्ष्मीरमणा।*
*सत्यनारायण स्वामी जनपातक हरणा ॥ जय० ॥*
*रत्न जड़ित सिंहासन अदभुत छवि राजे।*
*नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजे ॥ जय० ॥*
*प्रगट भये कलि कारन द्विज को दरस दियो।*
*बूढ़ो ब्राह्मण बनके कञ्चन महल कियो ॥ जय० ॥*
*दुर्बल भील कठारो जिनपर कृपा करी।*
*चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी बिपति हरी ॥ जय० ॥*
*वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी।*
*सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीनी ॥ जय० ॥*
*भाव भक्ति के कारण छिन छिन रूप धर्‍या।*
*श्रद्धा धारण कीनी तिनका काज सर्‍या ॥ जय० ॥*
*ग्वालबाल संग राजा बन में भगति करी।*
*मन बांछित फल दीन्यो दीन दयाल हरी ॥ जय० ॥*
*चढ़त प्रसाद सवायो कदली फल मेवा।*
*धूप दीप तुलसी से राजी सतदेवा ॥ जय० ॥*
*श्रीसत्यनारायणजी की आरती जो कोइ नर गावे।*
*कहत शिवानन्द स्वामी सुख संपति पावे।*
*भणत शिवानन्द स्वामी मनवांछित पावे ॥ जय० ॥*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## विष्णु-स्तुति

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥
आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनम्,
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम्,
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं चैतद्धि रामायणम्॥
आदौ देवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्द्धनम्,
मायापूतनजीवितापहरणं गोवर्द्धनोद्धारणम्।
कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनम्,
एतद्भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम्॥
कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभम्,
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुं करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली,
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियम्,
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसङ्घावृतम्,
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे॥
यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः॥
आदौ पाण्डवधार्तराष्ट्रजननं लाक्षागृहे दाहनम्,
द्यूतस्त्रीहरणं वने विचरणं मत्स्यालयावेधनम्।
लीलागोहरणं रणे विचरणं सन्ध्याक्रियावर्धनम्,
पश्चाद्भीष्मसुयोधनादिहननं चैतन्महाभारतम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



श्रियः पतिर्यज्ञपतिः प्रजापतिर्धियाम्पतिर्लोकपतिर्धरापतिः।
पतिर्गतिश्चान्धकवृष्णिसात्वतां प्रसीदतां मे भगवान् सतां पतिः॥
मत्स्याश्वकच्छपनृसिंहवराहहंस राजन्यविप्रविबुधेषु कृतावतारः।
त्वं पाहि नस्त्रिभुवनञ्च यथाधुनेश भारम्भुवो हर यदूत्तम वन्दनं ते॥

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यं ऋतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः॥
नमोस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः॥
आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥
मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो भव॥
कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतःक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः॥

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरंचिनुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥
त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावन् वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

अपराधसहस्त्रभाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे।
अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात् कुरु॥
एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः।
दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## पुष्पांजलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येषश्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देवऽ एकः॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे नारायणाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वाऽनुसृतस्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥ *पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥*

### प्रदक्षिणा

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

### क्षमा-प्रार्थना

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥

### विसर्जन

यजमानंहितार्थाय पुनरागमनाय च।
गच्छन्तु च सुरश्रेष्ठाः! स्वस्थानं परमेश्वराः!॥

### यजमान-आशीर्वाद-मन्त्र

अक्षतान् विप्रहस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः।
चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयुः कीर्तिर्यशो बलम्॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**ॐ श्रीर्वर्चस्वमायुमायुष्यमारोज्ञमाविधात् पवमानं महीयते।**
**धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः॥** अक्षत दें।

### चरणामृत-ग्रहण-विधि

बाएँ हाथ पर दोहरा वस्त्र रख कर दाहिना हाथ रख दें, पश्चात् चरणामृत लेकर पान करें। जमीन पर न गिरने दें।

### तुलसी-ग्रहण-मन्त्र

**पूजनानन्तरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम्।**
**भक्षयेद्देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणशताधिकम्॥**

### चरणामृत-ग्रहण-मन्त्र

**कृष्ण! कृष्ण! महाबाहो! भक्तानामार्तिनाशनम्।**
**सर्वपापप्रशमनं पादोदकं प्रयच्छ मे॥**

पश्चात् नीचे लिखा मन्त्र बोलते हुए चरणामृत पान करें।

**अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।**
**विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥**
**दुःखदौर्भाग्यनाशाय सर्वपापक्षयाय च।**
**विष्णोः पञ्चामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥**

### नैवेद्य-ग्रहण-मन्त्र

**नैवेद्यमन्नं तुलसीविमिश्रितम् विशेषतः पादजलेन विष्णोः।**
**योऽश्नाति नित्यं पुरतो मुरारेः प्राप्नोति यज्ञायुतकोटिपुण्यम्॥**

## शिव-पूजन

पवित्र होकर आचमन-प्रणायाम करके संकल्प-वाक्य के अन्त में **श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं गणपत्यादिसकलदेवतापूजनपूर्वक श्रीभवानीशङ्करपूजनं करिष्ये** कहकर संकल्प करें। नीचे लिखे आवाहन मन्त्रों से मूर्तियों के समीप पुष्प छोड़ें। मूर्ति न हो तो आवाहन करके पूजन करें।

### गणपति-पूजन

**आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।**
**इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे॥**

पूजन करके आगे लिखी प्रार्थना करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रियम्।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

### पार्वती-पूजन

हिमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।।

### नन्दीश्वर-पूजन

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा।
भरन्नग्निम्पुरीष्यम्मा पाद्यायुषः पुरा ।।

### वीरभद्र-पूजन

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमही देवहितं यदायुः।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ भद्रो नोऽ अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रोऽ अध्वरः।
भद्राऽ उत प्रशस्तया।।

### स्वामी कार्तिक-पूजन

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽ उपस्तुत्यं महि जातं तेऽ अर्वन्।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽ इव।
तन्नऽ इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु।।

### कुबेर-पूजन

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये वर्हिषो नमऽ उक्तिं यजन्ति।।

पूजन करके आगे लिखी प्रार्थना करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**ॐ वयꣳ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमही ॥**

**कीर्तिमुख-पूजन**

**ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाऽभिभुवे स्वाहाऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतये स्वाहा॥**

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

**ॐ ओजश्च मे सहश्च मऽ आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च मऽ आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥**

जलहरी में सर्प का आकार हो तो सर्प का पूजन करें, पश्चात् शिव का पूजन करें।

पाद्य **ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽ अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥** *पाद्यं समर्पयामि।*

अर्घ्य **ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह। बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा॥** *अर्घ्यं समर्पयामि।*

आचमन **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥** *आचमनीयं जलं समर्पयामि।*

स्नान **ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमसि वरुणस्यऽ ऋतसदनमासीद ॥** *स्नानं समर्पयामि।*

दुग्ध **ॐ गोक्षीरधामन् देवेश गोक्षीरेण मयाकृतम्। स्नपनं देवदेवेश गृहाण शिवशङ्कर ॥** *दुग्धस्नानं सम०, पुनर्जलस्नानं सम०।*

दधि **ॐ दध्ना चैव मया देव स्नपनं क्रियते तव। गृहाण भक्त्या दत्तं मे सुप्रसन्नो भवाव्यय॥** *दधिस्नानं समर्प०, पुनर्जलस्नानं समर्प०।*

घृत **ॐ सर्पिषा देवदेवेश स्नपनं कृयते मया। उमाकान्त गृहाणेदं श्रद्धया सुरसत्तम॥** *घृतस्नानं समर्पयामि, पुनर्जल. समर्पयामि।*

मधु **ॐ इदं मधु मया दत्तं तव तुष्ट्यर्थमेव च। गृहाण शम्भो मे भक्त्या मम शान्तिप्रदो भव॥** *मधुस्नानं स०, पुनर्जलस्नानं स०।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



शर्करा ॐ सितया देवदेवेश स्नपनं क्रियते मया। गृहाण शम्भो मे भक्त्या मम शान्तिप्रदो भव॥ *शर्करास्नानं स., पुनर्जल. स.।*

पञ्चामृत ॐ पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधिसमन्वितम्। घृतं मधु शर्करया स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ *पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।*

शुद्धोदक स्ना. ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽ आश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥ *शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।*

**अभिषेक** (जलधारा छोड़ें)

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतोतऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः ॥१॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥२॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳ सीः पुरुषं जगत् ॥३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाऽ असत् ॥४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च जातुधान्योऽधराचीः परा सुव ॥५॥ असौ यस्ताम्रोऽ अरुणऽ उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳ रुद्राऽ अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रसोऽवैषाꣳ हेडऽ ईमहे ॥६॥ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपाऽ अदृशन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥७॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽ अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्तऽ इषवः परा ता भगवो वप ॥९॥ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाणवाँऽ२ उत। अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः ॥१०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ॥११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः। अथो यऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्मिन्नि धेहि तम् ॥१२॥ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥१३॥ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥१४॥ मा नो महान्तमुत मा नोऽ अर्भकं मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥१५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मां नो गोषु मा नोऽ अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥१६॥**

*अभिषेकं समर्पयामि।*

विजया **ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाणवाँऽ२ उत। अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषं गधिः ॥** *विजयां समर्प०।*

वस्त्र **ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्तऽ इषवः परा ता भगवो वप ॥** *वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।*

यज्ञोपवीत **ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽ आवः। स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥** यज्ञोपवीतं समर्प०, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं स०।

गन्ध **ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥** *गन्धं समर्पयामि।*

अक्षत **ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥** *अक्षतं समर्प०।*

पुष्प **ॐ नमः पार्यायचावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ॥**

*पुष्पं समर्पयामि।*

पुष्पमाला **नानापङ्कजपुष्पैश्च ग्रथितां पल्लवैरपि। विल्वपत्रयुतां मालां गृहाण सुमनोहराम्॥** *पुष्पमाल्यां समर्पयामि।*

बिल्वपत्र **ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥**

**काशीवास निवासी च कालभैरव पूजनम्।**
**प्रयागे माघमासे च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥**
**दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।**
**अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥**
**त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।**
**त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥**
**अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्च पूजयेत् शिवशङ्करम्।**
**कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वर।**
**सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रिय।।**

*बिल्वपत्राणि समर्पयामि।*

तुलसी मंजरी **ॐ शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः। मा द्यावापृथिवीऽ अभि शोचीर्मान्तरिक्षं मा वनस्पतीम् ।।**

*तुलसीपत्राणि समर्पयामि।*

दूर्वा **ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।** *दूर्वां समर्पयामि।*

शमीपत्र **ॐ अमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च। दुःस्वप्न नाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्।।** *शमीपत्रं समपयार्मि।*

आभूषण **ॐ वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्। पुष्पराग-समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।।** *आभूषणं समर्पयामि।*

सुगन्ध तैल (अतर) **ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाꣳ सं परिपातु विश्वतः।।** *सुगन्धतैलं समर्पयामि।*

धूप **ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्त्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च।।** *धूपमाघ्रापयामि।*

दीप **ॐ नमऽ आशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नमऽ ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च।।**

*दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)*

नैवेद्य **ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भ्याय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च।।**

*नैवेद्यं निवेदयामि।*

पानीय जल **ॐ नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमऽ उर्वर्जाय च खल्याय च।।** *मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि।*

ऋतुफल **ॐ फलानि यानि रम्याणि स्थापितानि तवाग्रतः। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि-जन्मनि।।** *ऋतुफलं समर्पयामि।*

अ॰ऋतुफल **ॐ कूष्माण्डं मातुलुङ्गं च नारिकेलफलानि च। रम्याणि**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**पार्वतीकान्त सोमेशं प्रतिगृह्यताम् ॥** *अखण्डऋतुफलं समर्प०।*

ताम्बूल पूगीफल **ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽ अस्मिन्ननातुरम्॥** *ताम्बूलपूगीफलं समर्पयामि।*

दक्षिणा **न्यूनातिरिक्तपूजायां सम्पूर्णफलहेतवे। दक्षिणां काञ्चनीं देव स्थापयामि तवाग्रतः॥** *द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।*

## शिवजी की आरती

**कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।**
**सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥**

*जै शिव ओंकारा, हो शिव पार्वती प्यारा, हो शिव ऊपर जल धारा।*
*ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ॥१ ॥ हर हर हर महादेव ॥*

*एकानन चतुरानन पंचानन राजै।*
*हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै ॥ २॥ हर०॥*
*दोय भुज चार चतुर भुज दस भुज ते सोहै।*
*तीनो रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहै ॥ ३॥ हर०॥*
*अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी।*
*चन्दन मृगमद चन्दा भाले सुभकारी ॥ ४॥ हर०॥*
*श्वेतांबर पीतांबर बाघांबर अंगे।*
*सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक संगे ॥ ५॥ हर०॥*
*करमध्ये कमंडलु चक्र त्रिशुल धर्ता।*
*जगकर्ता जगभर्ता जगपालनकर्ता ॥ ६॥ हर०॥*
*ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।*
*प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनो एका ॥ ७॥ हर०॥*
*त्रिगुणस्वामीजी की आरती जो कोइ नर गावै।*
*भणत शिवानन्द स्वामी वांछित फल पावै ॥ ८॥ हर०॥*

*जै शिव ओंकारा, हो मन भज शिव ओंकारा, हो मन रट शिव ओंकारा, हो शिव गल रुंडन माला, हो शिव ओढ़त मृग छाला, हो शिव पीते भंग प्याला, हो शिव रहते मतवाला, हो शिव पारवती प्यारा, हो शिव ऊपर जल धारा, ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ॥ हर हर हर महादेव॥*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**शिव-स्तुति** (पुष्पांजलि)

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे,
सुरतरुवरशाखा लेखनीपत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तवगुणानामीशपारं न याति ॥
वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्,
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निननयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥
शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्,
शूलं बज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितं साङ्कुशं वामभागे,
नानालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥
श्मशानेस्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं,
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव ॥
कालहर कण्टकहर दुःखहर दारिद्र्यहर

आगे लिखे मन्त्र से गाल बजाते हुए **बम् बम्** बोल कर जलहरी का जल नेत्रों पर लगाएँ।

**निरावलम्बस्य ममावलम्बं विपाटिताशेषविपत्कदम्बम्।**
**मदीयपापाचलपापशम्बं प्रवर्ततां वाचि सदैव बम्-बम् ॥**

पञ्चांग-प्रणाम, मन में स्मरण, नेत्रों से दर्शन और वाणी से नामोच्चार करते हुए, दोनों हाथ जोड़ कर मस्तक झुका कर प्रणाम करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**प्रदक्षिणा** (अर्धप्रदक्षिणा करें)

**यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।**
**तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।**

**क्षमा-प्रार्थना**

**प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात्।।**
**आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।**
**पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।**
**अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेकं शरणं मम।**
**तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष महेश्वर।।**

*अनेन पूजनेन श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयताम्।*

## पार्थिव-शिव-पूजन

पवित्र होकर संकल्प वाक्य के अन्त में **पार्थिवलिङ्गपूजनं करिष्ये** कहकर संकल्प का जल छोड़ें।

**भूमि-प्रार्थना**

**सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम्।**
**ग्रहिश्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे।।**
**ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः।**
**उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।**
**मृत्तिके त्वां च गृह्णामि प्रजया च धनेन च।।**

**ॐ हराय नमः** मृत्तिका ग्रहण करें। **ॐ बं अमृताय नमः** जल को अभिमन्त्रित करें। **ॐ महेश्वराय नमः** मूर्ति बनाएँ। **ॐ शूलपाणये नमः** मूर्ति स्थापित करें।

विनियोग **ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीसदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवाय कीलकं मम साम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं न्यासे पूजने जपे च विनियोगः।।**

*अङ्गन्यास* **ॐ वामदेवाय ऋषये नमः** *शिरसि*। **ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः** *मुखे*। **ॐ सदाशिवदेवतायै नमः** *हृदि*। **ॐ बीजाय नमः** *गुह्ये*। **ॐ शक्तये नमः** *पादयोः*। **ॐ शिवाय कीलकाय नमः** *सर्वांगे*। **ॐ नं**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**तत्पुरुषाय नमो** *हृदये*। **ॐ मं अघोराय नमः** *पादयोः*। **ॐ शिं सद्योजाताय नमः** *गुह्ये*। **ॐ वां वामदेवाय नमः** *मूर्ध्नि*। **ॐ यं ईशानाय नमः** *मुखे*। **ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं शिरसे स्वाहा। ॐ मं शिखायै वषट्। ॐ शिं कवचाय हुम्। ॐ वां नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ यं अस्त्राय फट् ॥**

विनियोग **ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वराः ऋषयः ऋग्यजुःसामानिच्छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता ॐ आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं देवप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥**

प्रतिष्ठा **ॐ ब्रह्म-विष्णु-रुद्र ऋषिभ्यो नमः** *शिरसि*। **ॐ ऋग्यजुः सामच्छन्देभ्यो नमो मुखे। ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः** *हृदि*। **ॐ आं बीजाय नमो** *गुह्ये*। **ॐ ह्रीं शक्तये नमः** *पादयोः*। **ॐ क्रौं कीलकाय नमः** *सर्वांगे* ॥ इति अङ्गन्यासं कृत्वा।

**ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रघ्राणजिह्वापाणिपाद-पायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥**

नीचे लिखे मन्त्र से पुष्प समर्पण करें।

**ॐ भूः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। ॐ भुवः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। ॐ स्वः पुरुषं साम्बसदाशिव-मावाहयामि ॥** इत्यावाहयेत्। **ॐ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत् पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥**

पूजन कर आगे लिखे मन्त्र से विसर्जन करें।

**ॐ हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।**
**शिवः पशुपतिश्चैव महादेव-विसर्जनम् ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## दुर्गा-पूजन

शुद्ध मृत्तिका में यव अथवा गेहूं रोपण कर उसपर कलश-स्थापन विधि से कलश स्थापन करें। आचमन, प्राणायाम करके संकल्प वाक्य के अन्त में **ममेह जन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकं दीर्घायुर्विपुलधनपुत्रपौत्राद्यविच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभ-शत्रुपराजयप्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं कलशस्थापनं दुर्गापूजनं तत्र निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं स्वस्तिवाचनं, पुण्याहवाचनं, गणपत्यादि-पूजनं च करिष्ये** कह कर संकल्प करें। पश्चात् नीचे लिखे संकल्प से ब्राह्मण का वरण करें।

**ॐ अद्य श्रीदुर्गापूजनपूर्वकं मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत दुर्गासप्त-शतीपाठकरणार्थम् एभिर्वरणद्रव्यैः अमुक गोत्रम् अमुक शर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे।।** पश्चात् ब्राह्मण **वृतोस्मि** कहें।

पूर्वोक्त विधि से स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन, गणपति-गौरीपूजन, कलश स्थापन, नवग्रह, पञ्चलोकपाल, दशदिक्पाल, षोडशमात्रिका तथा चतुःषष्टि योगिनी पूजन करके भगवती-वाहन, भैरव, क्षेत्रपाल तथा ध्वजा आदिका पूजन करें, पश्चात् नीचे लिखे ध्यान करें।

### भैरव-ध्यान

**ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-**
**स्तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती।**
**क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु-**
**र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ।।**

### देवी-ध्यान

**ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां**
**कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेवितम्।**
**हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीं**
**विभ्राणमनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ।।**

आवाहन **ॐ आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि। पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये।।** *आवाहयामि।*

आसन **ॐ अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्। कार्तस्वरमयं**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।। *आसनं समर्पयामि।*

पाद्य ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्। तोयमेतत्-सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।। *पाद्यं समर्पयामि।*

अर्घ्य ॐ गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया। गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा।। *अर्घ्यं समर्पयामि।*

आचमन ॐ आचम्यतां त्वया देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु। ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च पराङ्गतिम्।। *आचमनं समर्पयामि।*

स्नान ॐ जाह्नवीतोयमानीतं शुभं कर्पूरसंयुतम्। स्नापयामि सुरश्रेष्ठे त्वां पुत्रादिफलप्रदाम्।। *स्नानं समर्पयामि।*

पञ्चामृतस्नान ॐ पयो दधि घृतं क्षौद्रं सितया च समन्वितम्। पञ्चामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे।। *पञ्चामृतस्नानं स०।*

शुद्धोदकस्नान ॐ परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये। साङ्गो-पाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीशिते।। *शुद्धोदकस्नानं समर्प०।*

वस्त्र ॐ वस्त्रञ्च सोमदेवत्यं लज्जायास्तु निवारणम्। मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरी।। *वस्त्रं समर्पयामि।*

उपवस्त्र ॐ यामाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी सदा। तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम्।। *उपवस्त्रं समर्पयामि।*

मधुपर्क ॐ दधिमध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम्। मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदा भव शोभने।। *मधुपर्कं समर्पयामि।*

गन्ध ॐ परमानन्दसौभाग्यपरिपूर्णदिगन्तरे। गृहाण परमं गन्ध कृपया परमेश्वरी।। *गन्धं समर्पयामि।*

कुङ्कुम ॐ कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसंभवम्। कुङ्कुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरी।। *कुङ्कुमं समर्पयामि।*

आभूषण ॐ हारकङ्कणकेयूरमेखलाकुण्डलादिभिः। रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।। *आभूषणं समर्पयामि।*

सिन्दूर ॐ सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम्। पूजितासि मया देवि प्रसीद परमेश्वरि।। *सिन्दूरं समर्पयामि।*

कज्जल ॐ चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारिके। कर्पूर-ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि।। *कज्जलं समर्पयामि।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



सौभाग्यद्रव्य ॐ सौभाग्यसूत्र वरदे सुवर्णमणिसंयुते। कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा।। *सौभाग्यद्रव्यं समर्पयामि।*

सुगन्धतैल (अतर) ॐ चन्दनागरुकर्पूरैः संयुतं कुङ्कुमं तथा। कस्तूर्यादिसुगन्धाँश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम्।। *सुगन्धतैलं सम.।*

परिमलद्रव्य ॐ हरिद्रारंजिते देवि सुखसौभाग्यदायिनि। तस्मात्त्वां पूजयाम्यत्र सुखशान्तिं प्रयच्छ मे।। *परिमलद्रव्यं समर्पयामि।*

अक्षत ॐ रंजिताः कुङ्कुमौघेन अक्षताश्चातिशोभनाः। ममैषां देवि दानेन प्रसन्ना भव शोभने।। *अक्षतं समर्पयामि।*

पुष्प ॐ मन्दारपारिजातादि पाटलीकेतकानि च। जातीचम्पक-पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने।। *पुष्पं समर्पयामि।*

पुष्पमाला ॐ सुरभिपुष्पनिचयैः ग्रथितां शुभमालिकाम्। ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि।। *पुष्पमाल्यां समर्पयामि।*

विल्वपत्र ॐ अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवि प्रियः सदा। विल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि।। *विल्वपत्रं समर्पयामि।*

धूप ॐ दशाङ्गगुग्गुलं धूपं चन्दनागरुसंयुतम्। समर्पितं मया भक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम्।। *धूपमाघ्रापयामि।*

दीप ॐ घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्वलम्। दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा।। *दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)*

नैवेद्य ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्। नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।। *नैवेद्यं निवेदयामि।*

*मध्येपानीयं जलं समर्पयामि।*

ऋतुफल ॐ द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाम्रकपित्थकम्। नारिकेलेक्षु-जम्ब्वादि फलानि प्रतिगृह्यन्ताम्।। *ऋतुफलं समर्पयामि।*

आचमन ॐ कामारिवल्लभे देवि कुर्वाचमनमम्बिके। निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव चण्डिके।। *आचमनं समर्पयामि।*

अ॰ ऋतुफल ॐ नारिकेलं च नारंगं कलिंगं मंजिरं तथा। उर्वारुकञ्च देवेशि फलान्येतानि गृह्यन्ताम्।। *अखण्ड ऋतुफलं समर्प॰।*

ताम्बूलपूगीफल ॐ एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैः पुष्पवासिताम्। वीटिकां

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि।।** *ताम्बूलपूगीफलं समर्पयामि।*

दक्षिणा **ॐ पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे द्रव्यमीश्वरि। स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्।।** *द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।*

**पुस्तक-पूजन** (जल से न करें)

**ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।**
**नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।**

**ज्योति-पूजन** (पूजन करके प्रार्थना करें)

**ॐ शुभं भवतु कल्याणमारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।**
**आत्मतत्त्वप्रबोधाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।**

## कुमारी-पूजन

२ वर्ष से १० वर्ष तक की कन्या का पूजन कर भोजन कराएँ।

प्रार्थना **ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिस्वरूपिणी।**
**पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते।।**

आरती **ॐ नीराजनं सुमाङ्गल्यं कर्पूरेण समन्वितम्।**
**चन्द्रार्कवह्निसदृशं महादेवि नमोऽस्तु ते।।**

## दुर्गाजी की आरती

*जय अम्बे गौरी, मैया जयमंगल मूर्ती, मैया जय आनन्दकरणी,*
*तुमको निसिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी।। जय अम्बे गौरी।।*

*माँग सिन्दूर बिराजत टीको मृगमद को।*
*उज्वल से दोउ नैना चन्द्र बदन नीको।। जय०।।*
*कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।*
*रक्तपुष्प बनमाला कंठन पर साजै।। जय०।।*
*केहरिवाहन राजत खड्ग खप्पर धारी।*
*सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुःख हारी।। जय०।।*
*कानन कुंडल सोभित नासाग्रे मोती।*
*कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योती।। जय०।।*
*शुम्भ निशुम्भ विडारे महिषासुर घाती।*
*धूम्र विलोचन नासिनि निसिदिन मदमाती।। जय०।।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



*चौंसठ योगिनि गावत नृत्य करत भैरूँ।*
*बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू॥ जय०॥*
*भुजा चार अति सोभित खड्ग खप्पर धारी।*
*मन वांछित फल पावत सेवत नर नारी॥ जय०॥*
*कंचन थाल बिराजत अगर कपूर बाती।*
*श्रीमालकेतु में राजत कोटिरतन ज्योती॥ जय०॥*
*या अम्बेजी की आरती जो कोइ नर गावै।*
*भणत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावै॥ जय०॥*

पुष्पांजलि — **ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीवशुभां ददासि। दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥**

प्रदक्षिणा — **ॐ नमस्ते देवि-देवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे। नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्तवत्सले॥**

साष्टांगप्रणाम — **ॐ नमः सर्वहितार्थायै जगदाधारहेतवे। साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मया कृतः॥**

प्रार्थना — **ॐ पुत्रान्देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि मङ्गले। अन्याँश्च सर्वकामाँश्च देहि देवि नमोऽस्तु ते॥**

विसर्जन — **ॐ इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम्। रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्थानमनुत्तमम्॥**

## श्रीमहालक्ष्मी-पूजन

आचमन प्राणायाम करके संकल्पवाक्य के अन्त में **स्थिरलक्ष्मी-प्राप्त्यर्थं श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकसर्वाभीष्टफल-प्राप्त्यर्थम् आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं व्यापारे लाभार्थं च गणपति-नवग्रह-कलशादिपूजनपूर्वकं श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-लेखनी-कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये** कहकर जल छोड़ें। पश्चात् गणपति, कलश और नवग्रहादि का पूर्वोक्त विधि से पूजन करके महालक्ष्मी का पूजन करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



ध्यान **ॐ या सा पद्मासनस्थाविपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया। या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता।।**

आवाहन **ॐ सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनाम्। सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम्।।** *दुर्गायै नमः आवाहयामि।*

आसन **ॐ तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम्। अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।** *आसनं समर्पयामि।*

पाद्य **ॐ गङ्गादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम्। पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तु ते।।** *पाद्यं समर्पयामि।*

अर्घ्य **ॐ अष्टगन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम्। अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।** *अर्घ्यं समर्पयामि।*

आचमन **ॐ सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्ण्वादिभिः स्तुता। ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम्।।** *आचमनं समर्पयामि।*

स्नान **ॐ मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमाम्भोरुहवासितैः। स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः।।** *स्नानं समर्पयामि।*

(दुग्ध, दधि, घृत, मधु तथा शर्करास्नान विधि पृ० ५२ के अनुसार)

पञ्चामृतस्नान **ॐ पञ्चामृतसमायुक्तं जाह्नवी सलिलं शुभम्। गृहाणविश्वजननि स्नानार्थं भक्तवत्सले।।** *पंचामृतस्नानं समर्प.।*

शुद्धोदकस्नान **ॐ तोयं तव महादेवि कर्पूरागुरुवासितम्। तीर्थेभ्यः सुसमानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।** *शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।*

वस्त्र **ॐ दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम्। दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके।।** *वस्त्रं समर्पयामि।*

उपवस्त्र **ॐ कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम्। गृहाण त्वं मया दत्तं मङ्गले जगदीश्वरी।।** *उपवस्त्रं समर्पयामि।*

मधुपर्क **ॐ कपिलं दधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम्। स्वर्णपात्र स्थितं देवि मधुपर्कं गृहाण भोः।।** *मधुपर्कं समर्पयामि।*

आभूषण **ॐ स्वभावसुन्दराङ्गायै नानादेवाश्रये शुभे। भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते।।** *आभूषणं समर्पयामि।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



गन्ध **ॐ श्रीखण्डागरुकर्पूरमृगनाभिसमन्वितम्। विलेपनं गृहाणाशु नमोऽस्तु भक्तवत्सले॥** *गन्धं समर्पयामि।*

रक्तचंदन **ॐ रक्तचन्दनसम्मिश्रं पारिजातसमुद्भवम्। मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम्॥** *रक्तचंदनं समर्पयामि।*

सिन्दूर **ॐ सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूरतिलकप्रिये। भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥** *सिन्दूरं समर्पयामि।*

कुङ्कुम **ॐ कुङ्कुमं कामदं दिव्यं कुङ्कुमं कामरूपिणम्। अखण्ड कामसौभाग्यं कुङ्कुमं प्रतिगृह्यताम्॥** *कुंकुमं समर्पयामि।*

अक्षत **ॐ अक्षतान्निर्मलांछुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान्। गृहाणेमान् महादेवि देहि मे निर्मलां धियम्॥** *अक्षतं समर्पयामि।*

पुष्प **ॐ मन्दारपारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा। मरुवा मोगरं चैव गृहाणाशु नमो नमः॥** *पुष्पं समर्पयामि।*

पुष्पमाला **ॐ पद्मशङ्खजपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रिताम्। पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि॥** *पुष्पमाल्यां समर्पयामि।*

दूर्वा **ॐ विष्ण्वादिसर्वदेवानां प्रियां सर्वसुशोभनाम्। क्षीरसागरसम्भूते दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा॥** *दुर्वां समर्पयामि।*

अतर **ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि दयानिधे। सर्वलोकस्य जननि ददामि स्नेहमुत्तमम्॥** *सुगन्धतैलं समर्पयामि।*

अथाङ्गपूजा। **ॐ चपलायै नमः** *पादौ पूजयामि।* **ॐ चञ्चलायै नमः** *जानुनि पूजयामि।* **ॐ कमलायै नमः** *कटिं पूजयामि।* **ॐ कात्यायिन्यै नमः** *नाभिं पूजयामि।* **ॐ जगन्मात्रे नमः** *जठरं पूजयामि।* **ॐ विश्ववल्लभायै नमः** *वक्षस्थलं पूजयामि।* **ॐ कमलवासिन्यै नमः** *भुजौ पूजयामि।* **ॐ पद्मकमलायै नमः** *मुखं पूजयामि।* **ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः** *नेत्रत्रयं पूजयामि।* **ॐ श्रियै नमः** *शिरः पूजयामि।* इत्यङ्गपूजा।

अथ पूर्वादिक्रमेण अष्टदिक्षु अष्टसिद्धीः पूजयेत्। **ॐ अणिम्ने नमः। ॐ महिम्ने नमः। ॐ गरिम्णे नमः। ॐ लघिम्ने नमः। ॐ प्राप्त्यै नमः। ॐ प्राकाम्यै नमः।ॐ ईशितायै नमः। ॐ वशितायै नमः॥** इति अष्टसिद्धिपूजनम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



तथैवं पूर्वादिक्रमेण अष्टलक्ष्मी-पूजनम् । **ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः। ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः। ॐ कामलक्ष्म्यै नमः। ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः। ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः। ॐ योगलक्ष्म्यै नमः।।** इति अष्टलक्ष्मीपूजनम्।

धूप **ॐ वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।** *धूपमाघ्रापयामि।*

दीप **ॐ कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्। तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि।।** *दीपं दर्शयामि।*

नैवेद्य **ॐ नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम्। षड्रसैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।** *नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि।*

ऋतुफल **ॐ फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्। तस्मात्फल-प्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।।** *ऋतुफलं समर्पयामि।*

आचमन **ॐ शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम्। आचम्य-तामिदं देवि प्रसीद त्वं महेश्वरि।।** *आचमनीयं जलं समर्पयामि।*

अखण्डऋतुफल **ॐ इदं फलं मयाऽनीतं सरसं च निवेदितम्। गृहाण परमेशानि प्रसीद प्रणमाम्यहम्।।** *अखण्डऋतुफलं समर्पयामि।*

ताम्बूलपूगीफल **ॐ एलालवङ्गकर्पूरनागपत्रादिभिर्युतम्। पूगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।** *ताम्बूलपूगीफलं समर्पयामि।*

दक्षिणा **ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्य-फलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।** *द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।*

**प्रार्थना**

**ॐ सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तवपादपङ्कजम्।**
**परावरं पातु वरं सुमङ्गलं नमामि भक्त्या तव कामसिद्धये।।**

**भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी।**
**सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।**
**नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये।**
**या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## महाकाली-पूजन

दवात में मौली बाँध, तथा स्वस्तिक बनाकर नीचे लिखा ध्यान करें।

**ॐ मसि त्वं लेखनीयुक्ता चित्रगुप्ताशयस्थिता।**
**सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम ॥**
**या मया प्रकृतिः शक्तिश्चण्डमुण्डविमर्दिनी।**
**सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदा भव ॥**

**ॐ श्री महाकाल्यै नमः।** पूजन कर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

**ॐ या कालिका रोगहरा सुवन्द्या वैश्यैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः।**
**जनैर्जनानां भयहारिणी च सा देवमाता मयि सौख्यदात्री ॥**

## लेखनी-पूजन

कलम पर मौली बांध कर नीचे लिखा ध्यान करके पूजन करें।

**ॐ शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं**
**वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।**
**हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां**
**वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥**

**लेखिन्यै नमः।** पूजन कर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

**ॐ कृष्णानने द्विजिह्वे च चित्रगुप्तकरस्थिते।**
**सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम ॥**

बही, वसना आदि में केशर या रोली से स्वस्तिक बनाकर नीचे लिखा ध्यान करके पूजन करें।

**ॐ या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता**
**या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।**
**या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता**
**सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥**

**ॐ वीणापुस्तकधारिण्यै नमः।** पूजनकर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

**ॐ शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।**
**सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



### कुबेर-पूजन

संदूक आदि में सिन्दूर से स्वस्तिक बना, आवाहन करके पूजन करें।

**आवाहयामि देव त्वमिहायाहिकृपां कुरु।**
**कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर।।**

प्रार्थना **ॐ धनाध्यक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने।**
**नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने।।**

### तुला तथा मान-पूजन

सिंदूर से स्वस्तिक बनाकर पूजन करें, पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना करें।

**नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिते।**
**साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना।।**

### दीपावली-पूजन

दीपक जलाकर पात्र में रख, पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

**भो दीप त्वं ब्रह्मरूप अन्धकारनिवारक।**
**इमां मया कृतां पूजां गृहणँस्तेजः प्रवर्धय।।**

*ॐ दीपेभ्यो नमः।*

आरती **ॐ चक्षुर्दं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम्।**
**आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरी।।**

### श्रीलक्ष्मीजी की आरती

*जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।*
*तुमको निसि दिन सेवत हर विष्णु धाता।। जय० ।।*
*ब्रह्माणी रुद्राणी कमला जगमाता।*
*सूर्य चन्द्रमा ध्याता नारद ऋषि गाता।। जय० ।।*
*दुर्गा रूप निरंजनि सुख संपति दाता।*
*जो कोइ तुमको ध्यावत ऋधि सिधि धन पाता।। जय० ।।*
*तूं ही पताल बसन्ती तूं ही शुभ दाता।*
*कर्मप्रभाव-प्रकाशक जगनिधि से त्राता।। जय० ।।*
*जिस घर में थारो वासो वाहि में गुण आता।*
*कर न सकै सोइ करले मन नहि धड़काता।। जय० ।।*
*तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न होय राता।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



खान पान को विभवै तुम बिन कुण दाता॥ जय॰ ॥
शुभ गुण सुंदर युक्ता क्षीरनिधी जाता।
रत्न चतुर्दस तोकूं कोइ भी नहि पाता॥ जय॰ ॥
या आरती लक्ष्मीजी की जो कोइ नर गाता।
उर आनन्द अति उमगे पाप उतर जाता॥ जय॰ ॥
स्थिर चर जगत बचावै कर्म प्रेर ल्याता।
'रामप्रताप' मैया की शुभ दृष्टी चाहता॥ जय॰ ॥

## श्रीशंकटनाशनगणेशस्तोत्र

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये ॥१॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्टं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥३॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिश्च जायते ॥५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥६॥
जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥७॥
अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥८॥

*श्रीनारदपुराणे सङ्कटनाशननाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

## सत्यनारायणाष्टक

आदिदेवं जगत्कारणं श्रीधरं लोकनाथं विभुं व्यापकं शङ्करम्।
सर्वभक्तेष्टदं मुक्तिदं माधवं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे॥१
सर्वदा लोककल्याणपारायणं देवगोविप्ररक्षार्थसद्विग्रहम्।
दीनहीनात्मभक्ताश्रयं सुन्दरं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे॥२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



दक्षिणे यस्य गङ्गा शुभा शोभते राजते सा रमा यस्य वामे सदा।
यः प्रसन्नाननो भातिभव्यश्च तं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे।।३
सङ्कटे सङ्गरे यं जनः सर्वदा स्वात्मभीनाशनाय स्मरेत् पीडितः।
पूर्णकृत्यो भवेद् यत्प्रसादाच्च तं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे।।४
वांछितं दुर्लभं यो ददाति प्रभुः साधवे स्वात्मभक्ताय भक्तिप्रियः।
सर्वभूताश्रयं तं हि विश्वम्भरं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे।।५
ब्राह्मणः साधुवैश्यश्च तुङ्गध्वजो येऽभवन् विश्रुतायस्यभक्त्याऽमराः।
लीलया यस्य विश्वं ततं तं विभुं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे।।६
येन चाब्रह्म वालं तृणं धार्यते सृज्यते पाल्यते सर्वमेतज्जगत्।
भक्तभावप्रियं श्रीदयासागरं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे।।७
सर्वकामप्रदं सर्वदा सत्प्रियं वन्दितं देववृन्दैर्मुनीन्द्रार्चितम्।
पुत्रपौत्रादिसर्वेष्टदं शाश्वतं सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे।।८
अष्टकं सत्यदेवस्य भक्त्या नरः भावयुक्तो मुदा यस्त्रिसन्ध्यं पठेत्।
तस्य नश्यन्ति पापानि तेनाग्निना इन्धनानीव शुष्काणिसर्वाणिवै।।९

*श्रीसत्यनारायणाष्टकं सम्पूर्णम्।*

## श्रीमहालक्ष्म्यष्टक

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।१।।
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुर भयङ्करि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।२।।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।३।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।४।।
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।५।।
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।६।।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।७।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥८॥
महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यमाप्नोति सर्वदा॥९॥
एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितम्॥१०॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा॥११॥

*इन्द्रकृतं श्रीमहालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम्।*

## कनकधारा-स्तोत्र

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्। अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥१॥ मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि। मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥२॥ विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्षमानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि। ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥३॥ आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम्। आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥४॥ बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति। कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥५॥ कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदंगनेव। मातुः समस्तजगतां नमनीयमूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥६॥ प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत् प्रभावान् माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन। मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥७॥ दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारामस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे। दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरं नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥८॥ इष्टातिशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते। दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः॥९॥ गीर्देवतेति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



गरुडध्वजभामिनीति शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति। सृष्टिस्थिति-प्रलयकेलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥१०॥ श्रुत्यै नमो स्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै। शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै ॥११॥ नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्मभूत्यै। नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥१२॥ सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि। त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥१३॥ यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः। सन्तनोति वचनाङ्गमानसैस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥१४॥ सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्य-शोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरी प्रसीद मह्यम् ॥१५॥ दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्टस्वर्वाहिनीविमलचारु-जलप्लुताङ्गीम्। प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेषलोकाधिराज-गृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥१६॥ कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूर-तरङ्गितैरपाङ्गैः। अवलोकय मामकिञ्चनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः॥१७॥ स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवन-मातरं रमाम्। गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥१८॥

*श्रीभगवत्पादशंकर-विरचितं कनकधारास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

## श्रीकृष्णयजुर्वेदीय चाक्षुषोपनिषद

विनियोग ॐ अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता चक्षूरोगनिवृत्तये विनियोगः।

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथा अहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधकदुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय॥

ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणा-करायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी स्वाहा। ॐ विश्वरूपं घृणिं तं जातवेदसं, हिरण्मयं पुरुषं ज्योतीरूपं तपन्तम्। विश्वस्य योनिं प्रतपन्तम्। महान्तं पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः॥ य इमां चाक्षुष्मतीविद्यां द्विजो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति ॥

*श्रीकृष्णयजुर्वेदीया चाक्षुषोपनिषद् सम्पूर्णा॥*

इस चाक्षुषीविद्या का पाठ करने से नेत्रों के रोग दूर होते हैं एवं नेत्रों की ज्योति स्थिर रहती है। इसका पाठ नित्य करने वाले कुल में कोई अंधा नही होता। पाठके अन्त में गन्धादियुक्त जल से सूर्य को अर्घ देना चाहिये।

### श्रीगंगाष्टक

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये।
त्वत्तीरे वसतस्त्वमम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खत-
स्त्वन्नामस्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः॥ १
त्वत्तीरे तरुकोटरान्तर्गतो गङ्गे विहङ्गो वरं
त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः।
नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टघण्टारण-
त्कारत्रस्तसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः ॥ २
उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वाऽ-
वारीणः स्यां जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः।
न त्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भूमिपालः॥ ३
काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितं
स्त्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीचीभिरान्दोलितम्।
दिव्यस्त्रीकरचारुचामरमरुत्संवीज्यमानः कदा
द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः॥ ४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो-
र्मदनमथनमौलेर्मालतीपुष्पमाला ।
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपितकलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु।।
एतत्तालतमालसालसरलव्यालोलवल्लीलता-
च्छन्नं सूर्यकरप्रतापरहितं शङ्खेन्दुकुन्दोज्ज्वलम्।
गन्धर्वामरसिद्धकिन्नरवधूतुङ्गस्तनास्फालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम्।। ६
गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम्।। ७
पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि।। ८
गंङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः।
प्रक्षाल्य गात्रकलिकल्मषपङ्कमाशु
मोक्षं लभेत्पतति नैव नरो भवाब्धौ।।९

*श्रीवाल्मीकिविरचितं गङ्गाष्टकं सम्पूर्णम्।।*

## श्रीराधाकृष्णयुगलस्तोत्र

अनादिमाद्यं पुरुषोत्तमोत्तमं श्रीकृष्णचन्द्रं निजभक्तवत्सलम्।
स्वयं त्वसङ्ख्याण्डपतिं परात्परं राधापतिं त्वां शरणं ब्रजाम्यहम्।।१
गोलोकनाथस्त्वमतीवलीलो लीलावतीयं निजलोकलीला।
वैकुण्ठनाथोऽसि यदा त्वमेव लक्ष्मीस्तदेयं बृषभानुजा हि।।२
त्वं रामचन्द्रो जनकात्मजेयं भूमौ हरिस्त्वं कमलालयेयम्।
यज्ञावतारोऽसि यदा तदेयं श्रीदक्षिणास्त्रीप्रतिपत्निमुख्याः।।३
त्वं नारसिंहोऽसि रमा हृदीयं नारायणस्त्वं च नरेण युक्तः।
तदा त्वियं शान्तिरतीव साक्षाच्छायेव याता च तवानुरूपा।।४
त्वं ब्रह्म चेयं प्रकृतिस्तटस्था कालो यदेमां च विदुःप्रधानम्।
महान्यदा त्वं जगदङ्कुरोऽसि राधा तदेयं सगुणा च माया।।५

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



यदान्तरात्मा विदितश्चतुर्भिस्तदा त्वियं लक्षणरूपवृत्तिः।
यदा विराड्देहधरस्त्वमेव तदाखिलं वा भुवि धारणेयम्॥६
श्यामं च गौरं विदितं द्विधा महस्तवैव साक्षात्पुरुषोत्तमोत्तमम्।
गोलोकधामाधिपतिं परेशं परात्परं त्वां शरणं ब्रजाम्यहम्॥७
सदा पठेद्यो युगलस्तवं परं गोलोकधामं परमं प्रयाति सः।
इहैव सौन्दर्यसमृद्धिसिद्धयो भवन्ति तस्यापि निसर्गतः पुनः॥८

*श्रीगर्गसंहिताया ब्रह्मविरचितं श्रीराधा-कृष्ण-युगल-स्तोत्रं सम्पूर्णम्।*

## देव्यपराधक्षमापन-स्तोत्र

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्तदनुशरणं क्लेशहरणम्॥१
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥२
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीदोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥३
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥४
परित्यक्ता देवान् विविधविधिसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्॥५
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७
न मोक्षस्याकांङक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०
जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ॥१२

*देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम्।*

## श्रीशीतलाष्टकम्

विनियोग ॐ अस्य श्रीशीतलास्तोत्रस्य महादेवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः शीतलादेवता लक्ष्मीर्बीजं भवानिः शक्तिः सर्वविस्फोटकनिवृत्तये जपे विनियोगः।

वन्देऽहं शीतलां देवीं, रासभस्थां दिगम्बराम्।
मार्जनीकलशोपेतां, शूर्पालङ्कृतमस्तकाम् ॥१॥
वन्देऽहं शीतलां देवीं, सर्वरोगभयापहाम्।
यामासाद्य निवर्त्तेत, विस्फोटकभयं महत् ॥२॥
शीतले शीतले चेति, यो ब्रूयाद्दाहपीडितः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



विस्फोटकभयं घोरं, क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥३॥
यस्त्वामुदकमध्ये तु, धृत्वा पूजयते नरः।
विस्फोटकभयं घोरं, गृहे तस्य न जायते ॥४॥
शीतले ज्वरदग्धस्य, पूतिगन्धयुतस्य च।
प्रनष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम् ॥५॥
शीतले तनुजान् रोगान्नृणां हरसि दुस्त्यजान्।
विस्फोटकविशीर्णानां, त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ॥६॥
गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम्।
त्वदनुध्यानमात्रेण, शीतले यान्ति संक्षयम् ॥७॥
न मन्त्रो नौषधं तस्य, पाप-रोगस्य विद्यते।
त्वामेकां शीतले धात्रीं, नान्यां पश्यामि देवताम् ॥८॥
मृणालतन्तु सदृशीं, नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम्।
यस्त्वां सञ्चिन्तयेद्देवि, तस्य मृत्युर्न जायते ॥९॥
अष्टकं शीतलादेव्या, यो नरः प्रपठेत्सदा।
विस्फोटकभयं घोरं, गृहे तस्य न जायते ॥१०॥
श्रोतव्यं पठितव्यं च, श्रद्धाभक्तिसमन्वितैः।
उपसर्गविनाशाय, परं स्वस्त्ययनं महत् ॥११॥
शीतले त्वं जगन्माता, शीतले त्वं जगत्पिता।
शीतले त्वं जगद्धात्री, शीतलायै नमो नमः ॥१२॥
रासभो गर्धवश्चैव, खरो वैशाखनन्दनः।
शीतला-वाहनश्चैव, दूर्वाकन्दनिकृन्तनः ॥१३॥
एतानि खरनामानि शीतलाग्रे तु यः पठेत्।
तस्य गेहे शिशूनां च शीतला-रुङ् न जायते ॥१४॥
शीतलाष्टकमेवेदं, न देयं तस्य कस्यचित्।
दातव्यं च सदा तस्मै, श्रद्धाभक्तियुताय वै ॥१५॥

*श्रीस्कन्दपुराणोक्तं शीतलाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम्।*

## श्रीविष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

*श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीसत्यनारायणाय नमः॥ अथ मंगलाचरणम्॥*

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥१॥ नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥२॥ व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्। पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम्॥३॥ व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे। नमो वै ब्रह्मविधये वसिष्ठाय नमो नमः ॥४॥ अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः। अभाललोचनः शम्भुर्भगवान् बादरायणः ॥५॥

*अथ विष्णुसहस्रनामप्रारम्भः॥* ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥ यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्। विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे॥१॥ नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते। अनेकरूप-रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे॥२॥ वैशम्पायन उवाच॥ श्रुत्वा धर्मान-शेषेण पावनानि च सर्वशः। युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥३॥ युधिष्ठिर उवाच॥ किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम्। स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम्॥४॥ को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः। किं जपन् मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसार-बन्धनात्॥५॥ भीष्म उवाच॥ जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम्। स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः॥६॥ तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम्। ध्यायन् स्तुवन् नमस्यँश्च यजमानस्तमेव च॥७॥ अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम्। लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत्॥८॥ ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम्। लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम्॥९॥ एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः। यद् भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥१०॥ परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः। परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम्॥११॥ पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम्। दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥१२॥ यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे। यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये॥१३॥ तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते। विष्णोर्नाम-सहस्रं मे शृणु पापभयापहम्॥१४॥ यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः। ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूपते॥१५॥ विष्णोर्नाम सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः। छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः॥१६॥ विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकरूपदैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम्॥ १७ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



विनियोग ॐ अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्त्रनामस्तोत्रमहामंन्त्रस्य भगवान् वेदव्यास ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीकृष्णः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता अमृताँशूद्भवो भानुरिति बीजम्, देवकीनन्दनः स्त्रष्टेति शक्तिः, त्रिसामा सामगः सामेति हृदयम्, शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम्, शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम्, रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति कवचम्, उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः, श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे सहस्त्रनामस्तोत्रजपे विनियोगः। अथ करन्यासः ॥ ॐ उद्भवाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्षोभणाय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देवाय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ उद्भवाय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्षोभणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ देवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः॥ अथ हृदयादि षडङ्गन्यासः॥ ॐ सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः ज्ञानाय हृदयाय नमः। ॐ सहस्त्रमूर्द्धा विश्वात्मा ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा। ॐ सहस्त्रार्चिः सप्त जिह्वः शक्त्यै शिखायै वषट्। ॐ त्रिसामा सामगः साम बलाय कवचाय हुम्। ॐ रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः तेजसे नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ शार्ङ्गधन्वा गदाधरः वीर्याय अस्त्राय फट्॥ इति हृदयादि न्यासः। ऋतुः सुदर्शनः कालः भूर्भुवः स्वरोम्। इति दिग्बन्धः॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणिविलसत्सैकतैर्मौक्तिकानां मालाक्लृप्तासनस्थः स्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डिताङ्गः। शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैरुपरिविरचितैर्मुक्तपीयूषवर्षैरानन्दी नः पुनीयादरिनलिन-गदाशङ्खपाणिर्मुकुन्दः॥१॥ भूः पादौ यस्य नाभिर्वियदसुरानिल-श्चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे कर्णावाशाः शिरो द्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वासोऽयमब्धिः। अन्तःस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगगोभोगिगन्धर्व दैत्यैश्चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नमामि॥२॥ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्। लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥३॥ मेघश्यामं पीतकौशेयवासं श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम्। पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम्॥४॥ सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्। सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः। भूतकृद् भूतभृद् भावो भूतात्मा भूतभावनः॥१॥ पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः। अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च॥२॥ योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः। नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः॥३॥ सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः। सम्भवो भावनो भर्त्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः॥४॥ स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः। अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः॥५॥ अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः। विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः॥६॥ अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः। प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम्॥७॥ ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः। हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः॥८॥ ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः। अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान्॥९॥ सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः। अहः सम्वत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः॥१०॥ अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः। वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः॥११॥ वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः। अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः॥१२॥ रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः। अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः॥१३॥ सर्वगः सर्वविद् भानुर्विश्वक्सेनो जनार्दनः। वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित् कविः॥१४॥ लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः। चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः॥१५॥ भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः। अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः॥१६॥ उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरुर्जितः। अतीन्द्रः सङ्ग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः॥१७॥ वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः। अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः॥१८॥ महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः। अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक्॥१९॥ महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः। अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः॥२०॥ मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः। हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः॥२१॥ अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः। अजो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा॥२२॥ गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः। निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः॥२३॥ अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः। सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात्॥२४॥ आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः। अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः॥२५॥ सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः। सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः॥२६॥ असङ्ख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः। सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः॥२७॥ वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः। वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः॥२८॥ सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः। नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः॥२९॥ ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः। ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः॥३०॥ अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः। औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः॥३१॥ भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः। कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः॥३२॥ युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः। अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित्॥३३॥ इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः। क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः॥३४॥ अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः। अपान्निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः॥३५॥ स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः। वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः॥३६॥ अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः। अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः॥३७॥ पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत्। महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः॥३८॥ अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः। सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिञ्जयः॥३९॥ विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः। महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः॥४०॥ उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः। करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः॥४१॥ व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः। परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः सुभेक्षणः॥४२॥ रामो विरामो विरतो मार्गो नेयो नयोऽनयः। वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः॥४३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः। हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः॥४४॥ ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः। उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः॥४५॥ विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम्। अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः॥४६॥ अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः। नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः॥४७॥ यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः। सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम्॥४८॥ सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत्। मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः॥४९॥ स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्। वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः॥५०॥ धर्मगुब् धर्मकृद् धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम्। अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः॥५१॥ गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः। आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः॥५२॥ उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः। शरीरभूतभृद् भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः॥५३॥ सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित् पुरुसत्तमः। विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्वतां पतिः॥५४॥ जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः। अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः॥५५॥ अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः। आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः॥५६॥ महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः। त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत्॥५७॥ महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी। गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः॥५८॥ वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः। वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः॥५९॥ भगवान् भगहानन्दी वनमाली हलायुधः। आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः॥६०॥ सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः। दिवःस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः॥६१॥ त्रिसामा सामगः सामः निर्वाणं भेषजं भिषक्। संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम्॥६२॥ शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः। गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः॥६३॥ अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः। श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



श्रीपतिः श्रीमतां वरः॥६४॥ श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः। श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः॥६५॥ स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः। विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः॥६६॥ उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतः स्थिरः। भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः॥६७॥ अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः। अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः॥६८॥ कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः। त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः॥६९॥ कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः। अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः॥७०॥ ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविमर्दनः। ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः॥७१॥ महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः। महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः॥७२॥ स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः। पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः॥७३॥ मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः। वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः॥७३॥ सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः। शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः॥७५॥ भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः। दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः॥७६॥ विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान्। अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः॥७७॥ एको नैकः सवः कः किं यत् तत् पदमनुत्तमम्। लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः॥७८॥ सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी। वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः॥७९॥ अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्। सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः॥८०॥ तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां बरः। प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः॥८१॥ चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः। चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात्॥८२॥ समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः। दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा॥८३॥ शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः। इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः॥८४॥ उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः। अर्को वाजसनः शृङ्गी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



जयन्तः सर्वविज्जयी॥८५॥ सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः। महाह्रदो महागर्त्तो महाभूतो महानिधिः॥८६॥ कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः। अमृतांशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः॥८७॥ सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः। न्यग्रोधोऽदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः॥८८॥ सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः। अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद् भयनाशनः॥८९॥ अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभिन्निर्गुणो महान्। अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्रग्वंशो वंशवर्धनः॥९०॥ भारभृत् कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः। आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः॥९१॥ धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः। अपराजितः सर्वसहो नियन्ता नियमो यमः॥९२॥ सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः। अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत् प्रीतिवर्धनः॥९३॥ विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग् विभुः। रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः॥९४॥ अनन्तो हुतभुग् भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः। अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः॥९५॥ सनात् सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः। स्वस्तिदः स्वस्तिकृत् स्वस्ति स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः॥९६॥ अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः। शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः॥९७॥ अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः। विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः॥९८॥ उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः। वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः॥९९॥ अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः। चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः॥१००॥ अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः। जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः॥१०१॥ आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः। ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः प्रणः॥१०२॥ प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत् प्राणजीवनः। तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः॥१०३॥ भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः। यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः॥१०४॥ यज्ञभृद् यज्ञकृद् यज्ञी यज्ञभुग् यज्ञसाधनः। यज्ञान्तकृद् यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च॥१०५॥ आत्मयोनिः स्वयं जातो वैखानः सामगायनः। देवकीनन्दनः स्रष्टा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



क्षितीशः पापनाशनः॥१०६॥ शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः। रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥१०७॥ सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति॥ इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः। नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम्॥१०८॥ य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत्। नाशुभं प्राप्नुयात्किञ्चित् सोऽमुत्रेह च मानवः॥१०९॥ वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत्। वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात्॥११०॥ धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात्। कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम्॥१११॥ भक्तिमान् यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः। सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत् प्रकीर्तयेत्॥११२॥ यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च। अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यमुत्तमम्॥११३॥ न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति। भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूपगुणान्वितः॥११४॥ रोगार्तो मुच्यते रोगाद् बद्धो मुच्येत बन्धनात्। भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः॥११५॥ दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम्। स्तुवन्नाम-सहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः॥११६॥ वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः। सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम्॥११७॥ न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित्। जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥११८॥ इदं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः। युज्येतात्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः॥११९॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः। भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे॥१२०॥ द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः। वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः॥१२१॥ ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम्। जगद् वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम्॥१२२॥ इन्द्रियाणि मनोबुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः। वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च॥१२३॥ सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते। आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः॥१२४॥ ऋषयः पितरो देवाः महाभूतानि धातवः। जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥१२५॥ योगो ज्ञानं तथा साङ्ख्यं विद्या शिल्पादि कर्म च। वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत् सर्वं जनार्दनम्॥१२६॥ एको विष्णुर्महद्भूतं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



पृथग्भूतान्यनेकशः। त्रीँल्लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुंक्ते विश्वभुगव्ययः ॥१२७॥ इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम्। पठेद् य इच्छेत् पुरुषः श्रेयः प्राप्तु सुखानि च॥१२८॥ विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम्। भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम्॥१२९॥ अर्जुन उवाच॥ पद्मपत्र विशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तम। भक्तानामनुरक्तानां त्राता भवजनार्दन ।१३०॥ श्रीभगवानुवाच। ।यो मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव। सोहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः॥१३१॥ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥१३२॥ नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने। नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते॥१३३॥ वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्। सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते॥१३४॥ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥१३५॥ आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥१३६॥ एष निष्कण्टकः पन्थाः यत्र सम्पूज्यते हरिः। कुपथं तं विजानीयात् गोविन्दरहितागमम्॥१३७॥ सर्वदेवेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत् फलम्। तत् फलं समवाप्नोति स्तुत्वा देवं जनार्दनम्॥१३८॥ यो नरः पठते नित्यं त्रिकालं केशवालये। द्विकालमेककालं वा क्रूरं सर्वं व्यपोहति॥१३९॥ दह्यन्ते रिपवस्तस्य सौम्याः सर्वे सदा ग्रहाः। विलीयन्ते च पापानि स्तवे ह्यस्मिन् प्रकीर्तिते॥१४०॥ येन ध्यातः श्रुतो येन येनायं पठितः स्तवः। दत्तानि सर्वदानानि सुराः सर्वे समर्चिताः॥१४१॥ इह लोके परे वाऽपि न भयं विद्यते क्वचित्। नाम्ना सहस्रं योऽधीते द्वादश्यां मम सन्निधौ॥१४२॥ स निर्दहति पापानि कल्पकोटिशतानि च। अश्वत्थसन्निधौ पार्थ तुलसीसन्निधौ तथा॥१४३॥ पठेन्नामसहस्रन्तु गवां कोटिफलं लभेत्। देवालये पठेन्नित्यं तुलसीवनसंस्थि ॥१४४॥ नरो मुक्तिमवाप्नोति चक्रपाणेर्वचो यथा। ब्रह्महत्यादि घोरं सर्वं पापं विनश्यति॥१४५॥

*श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्याम् आनुशासनिके पर्वणि दानधर्मे भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## श्रीशिवमहिम्नस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः।। पुष्पदन्त उवाच ॥ महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः। अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन् ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।।१।। अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोरतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि। स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।।२।। मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवतस्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्। मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ।।३।। तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत् त्रयीवस्तुव्यस्तं तिषृषु गुणाभिन्नासु तनुषु। अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।।४।। किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च। अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः कुतर्कोऽयं काँश्चिन् मुखरयति मोहाय जगतः।।५।। अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगतामधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति। अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ।।६।। त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च। रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।७।। महोक्षः षट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्। सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति।।८।। ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये। समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।।९।। तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरञ्चो हरिरधः परिच्छेतुं यातावनलमन स्कन्धवपुषः। ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत् स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।।१०।। अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥११॥ अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं भुजवनं बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः। अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः॥१२॥ यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीमधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः। न तच्चित्रं तस्मिन् परिवसितरि त्वच्चरणयोर्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥१३॥ अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपाविधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः। स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः॥१४॥ असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः। स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत् स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः॥१५॥ मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्। मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥१६॥ वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते। जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः॥१७॥ रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति। दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥१८॥ हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयोर्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम्। गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥१९॥ क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते। अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः॥२०॥ क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः। क्रतुभ्रेशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः॥२१॥ प्रजानाथं नाथः प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषु मृष्यस्य वपुषा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥२२॥ स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत् पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि। यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटनादवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥२३॥ श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटीपरिकरः। अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥२४॥ मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः। यदालोक्याह्लादं हृद इव निमज्यामृतमये दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान्॥२५॥ त्वकर्मस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च। परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६॥ त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरानकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति। तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥२७॥ भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहांस्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्। अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते॥२८॥ नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः। नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः॥२९॥ बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः। जनसुखकृते सत्त्वोदृक्तौ मृडाय नमो नमः प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥३०॥ कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः। इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद् वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्॥३१॥ असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी। लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥३२॥ असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य। सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



॥३३॥ अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत् पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः। स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र प्रचुरतर-धनायुः पुत्रवान् कीर्तिमाँश्च॥३४॥ महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः। अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः पदम्॥३५॥ दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः। महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥३६॥ कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः शिशु-शशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः। स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात् स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः॥३७॥ सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः। व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३८॥ श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण। कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥३९॥ इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः। अर्पिता तेन मे देव प्रीयतां च सदाशिवः॥ ४०॥

*श्रीपुष्पदन्त-गन्धर्वराज-विरचितं श्रीशिवमहिम्नस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

## श्रीशिव-मानस-पूजा-स्तोत्रम्

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
जातीचम्पकबिल्वपत्रसहितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देवदयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥१॥
सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥२॥
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टाङ्ग प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥३॥
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥४॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥५॥

*श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं श्रीशिवमानसपूजास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

## श्रीशिवरामाष्टकम्

शिव हरे शिव राम सखे प्रभो त्रिविध ताप निवारण हे विभो।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां शिवहरे विजयं कुरु मे वरम्॥ १
कमललोचन राम दयानिधे हरगुरो गजरक्षक गोपते।
शिवतनो भव शङ्कर पाहि मां शिवहरे विजयं कुरु मे वरम्॥ २
स्वजनरंजनमङ्गलमन्दिरं भजति तं पुरुषः परमं पदम्।
भवति तस्य सुखं परमाद्भुतं शिवहरे विजयं कुरु मे वरम्॥ ३
जय युधिष्ठिरवल्लभ भूपते जय जयार्जितपुण्यपयोनिधे।
जय कृपामय कृष्ण नमोऽस्तु ते शिवहरे विजयं कुरु मे वरम्॥ ४
भवविमोचन माधव मापते सुकविमानसहंस शिवारते।
जनकजारत राघव रक्ष मां शिवहरे विजयं कुरु मे वरम्॥ ५
अवनिमण्डलमङ्गल मापते जलद सुन्दर राम रमापते।
निगमकीर्तिगुणार्णव गोपते शिवहरे विजयं कुरुमे वरम्॥ ६
पतितपावननाममयी लता तव यशो विमलं परिगीयते।
तदपि माधव मां किमुपेक्षसे शिवहरे विजयं कुरु मे वरम्॥ ७
अमरता परदेव रमापते विजयतस्तव नाम धनोपमा।
मयि कथं करुणार्णव जायते शिवहरे विजयं कुरु मे वरम्॥ ८
हनुमतः प्रियतोषकर प्रभो सुरसरिद्धृतशेखर हे गुरो।
मम विभो किमु विस्मरणं कृतं शिवहरे विजयं कुरु मे वरम्॥ ९
नरहरे रतिरंजन सुन्दरं पठति यः शिवराम-कृतस्तवम्।
वसति रामरमाचरणाम्बुजे शिवहरे विजयं कुरु मे वरम्॥ १०

*श्रीरामानन्दयति-विरचितं शिवरामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



# श्री आदित्यहृदयस्तोत्रम्

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्। रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्॥१॥ देवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्। उपागम्य ब्रवीद्राममगस्त्यो भगवाँस्तदा॥२॥ राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्। येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे॥३॥ आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्। जपावहं जपन्नित्यमक्षयं परमं शिवम्॥४॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्। चिन्ताशोक-प्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम्॥५॥ रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्। पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥६॥ सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः। एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः ॥७॥ एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः। महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपाम्पतिः॥८॥ पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः। वायुर्वह्निः प्रजाः प्राणः ऋतुकर्ता प्रभाकरः॥९॥ आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्। सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः॥१०॥ हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्ति-र्मरीचिमान्। तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान्॥११॥ हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः। अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः॥१२॥ व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुः सामपारगः। धनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथिप्लवङ्गमः॥१३॥ आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः। कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः॥१४॥ नक्षत्रग्रहताराणा- मधिपो विश्वभावनः। तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोऽस्तुते ॥५॥ नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः। ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥१६॥ जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः। नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः॥१७॥ नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः। नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते॥१८॥ ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे। भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥१९॥ तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने। कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥२०॥ तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे। नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे॥२१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः। पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥२२॥ एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः। एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥२३॥ देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च। यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः॥२४॥ एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च। कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव॥२५॥ पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्॥ एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि॥२६॥ अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जयिष्यसि। एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम्॥२७॥ एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा। धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्॥२८॥ आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान्। त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥२९॥ रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत्। सर्वयत्नेन महता यतस्तस्य वधेऽभवत्॥३०॥ अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः। निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति॥ ३१॥

*वाल्मीकिरामायणोक्तं आदित्यहृदयं सम्पूर्णम् ॥*

## अन्नपूर्णास्तोत्रम्

तप्तस्वर्णनिभा शशाङ्कमुकुटा रत्नप्रभाभासुरा
नानावस्त्रविराजिता त्रिनयना भूमीरमाभ्यां युता।
दर्वीहाटकभाजनञ्च दधती रम्योच्चपीनस्तनी
नृत्यन्तं शिवमाकलय्य मुदिता ध्येयाऽन्नपूर्णेश्वरी ॥

ॐ नमः कल्याणदे देवि नमः शङ्करवल्लभे।
नमो मुक्तिप्रदे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥१॥
नमो मायागृहीताङ्गी नमः शङ्करवल्लभे।
माहेश्वरि नमस्तुभ्यमन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥२॥
अन्नपूर्णे हव्यवाहपत्नीरूपे हरप्रिये।
कलाकाष्ठारवरूपे च अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥३॥
उद्यद्भानुसहस्राभे नयनत्रयभूषिते।
चन्द्रचूडे महादेवि अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥४॥
विचित्रवसने देवि त्वन्नदानरतेऽनघे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



शिवनृत्यकृतामोदे अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥५॥
षट्कोणपद्ममध्यस्थे षडङ्गयुवतिप्रिये।
ब्रह्माण्यादिस्वरूपे च अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥६॥
देवि चन्द्रकलापीठे सर्वसाम्राज्यदायिनि।
सर्वानन्दकरे देवि अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥७॥
साधकाभीष्टदे देवि भवदुःखविनाशिनी।
कुचभारनते देवि अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥८॥
इन्द्राद्यर्चितपादाब्जे रुद्रादिरूपधारिणी।
सर्वसम्पत्प्रदे देवि अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥९॥
पूजाकाले पठेद्यस्तु स्तोत्रमेतत्समाहितः।
तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः ॥१०॥
प्रातःकाले पठेद्यस्तु मन्त्रजापपुरःसरम्।
तस्यैवान्नसमृद्धिः स्यात् वर्धमाना दिने दिने ॥११॥

*श्री अन्नपूर्णास्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥*

## श्रीसूक्तम्

विनियोग ॐ अस्य श्रीहिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य श्री आनन्दकर्दमचिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः श्रीरग्निर्देवते आद्यत्रयस्या नुष्टुप्छन्दः कांसोऽस्मीति बृहती छन्दः चन्द्रां प्रभासामिति द्वयोस्त्रिष्टुप्छन्दः अन्त्यायाः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दो व्यंजनानि बीजानि स्वराः शक्तयः विन्दुः कीलकं ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे धन-धान्य-सकलसमृद्ध्यर्थे श्रीमहालक्ष्मीप्रीतिद्वारा चतुर्विधपुरुषार्थसम्पत्तये श्रीमहालक्ष्मीसूक्तमहामन्त्रजपे विनियोगः।

*अथ षडङ्गन्यासः ॥* ॐ हिरण्यायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चन्द्रायै तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रजतस्रजायै मध्यमाभ्यां नमः। ॐ हिरण्य-स्रजायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हिरण्यजायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ हिरण्यवर्णायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। *एवं हृदयादिन्यासः।*

अथ ध्यानम् अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा
करयुगलधृतेष्टा-ऽभीतियुग्मांम्बुजा च।
मणिमयमुकुटाढ्याऽलङ्कृता कल्पजालै-
र्भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रीयै नः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि। ॐ वं अमृतात्मकं अमृतनैवेद्यं समर्पयामि। (श्रीमहालक्ष्म्यै नमः द्वादशगुणितताम्बूलं समर्पयामि) ॐ सं सर्वात्मकं श्रीमहालक्ष्म्यै नमः सर्वराजोपचारान् समर्पयामि। *एवं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पाठान्तेऽपि षडङ्गन्यासं कुर्यात्॥ पाठान्ते च लक्ष्मीगायत्रीं (१०८) जपेत्।* ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ *इति लक्ष्मीगायत्री मन्त्रः।*

ॐ हिरण्यवर्णां हिरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥१॥ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देविमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥३॥ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥४॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणं प्र पद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥५॥ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥८॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥९॥ मनसः काममाकूतीं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥१०॥ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११॥ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥१२॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥१३॥ आर्द्रां यः करणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥१४॥ ता म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



दारयोऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥१५॥ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥ पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि। विश्वप्रिये विष्णुमनो नुकूले त्वत्पादपद्मं पयि सं नि धत्स्व॥ पद्मानने पद्म ऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे। तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥१७॥ अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने। धनं मे जुषतां देवि सर्वकामाँश्च देहि मे॥१८॥ पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवे रथम्। प्रजानां भवसी माता आयुष्मन्तं करोतु मे॥१९॥ धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः। धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना॥२०॥ वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा। सोमं धनस्य सोमीनो मह्यं ददातु सोमिनः॥२१॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः। भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम्।२२॥ सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक-गन्धमाल्यशोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्र सीद मह्यम्॥२३॥ विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्। लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युतवल्लभाम्॥२४॥ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्र चोदयात्॥२५॥ पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि। विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं हृदि सन्निधत्स्व॥२६॥ आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः। ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः ॥२७॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते। धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥२८॥ ऋणरोगादि दारिद्र्य पापक्षुदपमृत्यवः। भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥२९॥

*ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं सम्पूर्णम् ॥*

## श्रीनवग्रहस्तोत्रम्

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥ १॥
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥ २॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥ ३॥
प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥ ४॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥ ५॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥ ६॥
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ ७॥
अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥ ८॥
पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥ ९॥
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितम्।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥ १०॥
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्॥ ११॥

*महर्षिव्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

## गजेन्द्रमोक्षस्तोत्रम्

श्रीशुकोवाच एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम्॥ १

गजेन्द्रोवाच ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम्।
पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि॥ २
यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम्।
योऽस्मात् परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम्॥ ३
यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं, क्वचिद्विभातं क्व च तत्तिरोहितम्।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः॥ ४
कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु।
तमस्तदाऽऽसीद्गहनं गभीरं यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः॥ ५

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



न यस्य देवा ऋषयः पदं विदुर्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम्।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु॥ ६
दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं विमुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः॥ ७
न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा।
तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति॥८

तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे॥ ९
नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि॥ १०
सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे॥ ११
नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च॥ १२
क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः॥ १३
सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः॥ १४

नमो नमस्तेऽखिलकारणाय निष्कारणायाद्भुतकारणाय।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय नमोऽपवर्गाय परायणाय॥१५
गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागमस्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि॥१६
मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीत प्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते॥१७
आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तैर्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय॥१८
यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम्॥१९
एकान्तिनो यस्य न कञ्चनार्थं वांछन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः॥२०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



तमक्षरं ब्रह्म परं परेशमव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूरमनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे॥२१

यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः।
नामरूपविभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः॥ २२

यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो निर्यान्ति संयान्त्यसकृत्स्वरोचिषः।
तथा यतोऽयं गुणसम्प्रवाहो बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः॥२३

स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ् न स्त्री न षण्ढो न पुमान्न जन्तुः।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन्निषेधशेषो जयतादशेषः॥२४

जिजीविषे नाहमिहामुया किमन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या।
इच्छामि कालेन न यस्यविप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम्॥२५

सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम्।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम्॥ २६

योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभावते।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम्॥ २७

नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेगशक्तित्रयायाऽखिलधीगुणाय।
प्रपन्न-पालाय दुरन्त-शक्तये कदिन्द्रियाणामनवाप्य वर्त्मने॥२८

नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहं धिया हतम्।
तं दुरत्यय-माहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम्॥ २९

॥ श्रीशुक उवाच॥

एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं
ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः।
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात्
तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत्॥३०॥

तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्निवासः
स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः।
छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमान-
श्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः॥३१॥

सोऽन्तः सरस्युरुबलेन गृहीत आर्त्तो
दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरिमाह कृच्छ्रा-
न्नारायणाखिलगुरो भगवन्नमस्ते॥३२॥
तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य
सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार।
ग्राहाद्विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं
सम्पश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम्॥३३॥

*श्रीमद्भागवते अष्टमस्कन्धे गजेन्द्रमोक्षस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

## श्रीमच्छंकराचार्यविरचिता दशश्लोकी

न भूमिर्न तोयं न तेजो न वायुर्न खं नेन्द्रियं वा न तेषां समूहः।
अनैकान्तिकत्वात् सुषुप्तेकसिद्धस्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम्॥
न वर्णा न वर्णाश्रमाचारधर्मा न मे धारणाध्यानयोगादयोऽपि।
अनात्माश्रयाहं ममाध्यासहानात् तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलो॰॥
न माता पिता वा न देवा न लोका न वेदा न यज्ञा न तीर्थं ब्रुवन्ति।
सुषुप्तौ निरस्तातिशून्यात्मकत्वात् तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलो॰॥
न साङ्ख्यं न शैवं न तत्पाञ्चरात्रं न जैनं न मीमांसकादेर्मतं वा।
विशिष्टानुभूत्या विशुद्धात्मकत्वात् तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलो॰॥
न चोर्ध्वं न चाधो न चान्तर्न बाह्यं न मध्यं न तिर्यङ् न पूर्वाऽपरा दिक्।
वियद्व्यापकत्वादखण्डैकरूपस्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलो॰॥
न शुक्लं न कृष्णं न रक्तं न पीतं न कुब्जं न पीनं न ह्रस्वं न दीर्घम्।
अरूपं तथा ज्योतिराकारकत्वात् तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलो॰॥
न शास्ता न शास्त्रं न शिष्यो न शिक्षा न च त्वं न चाहं न चायं प्रपञ्चः।
स्वरूपावबोधो विकल्पासहिष्णुस्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलो॰॥
न जाग्रन्न मे स्वप्नको वा सुषुप्तिर्न विश्वो न वा तैजसः प्राज्ञको वा।
अविद्यात्मकत्वात् त्रयाणां तुरीयस्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलो॰॥
अपि व्यापकत्वाद्धितत्त्वप्रयोगात् स्वतस्सिद्धभावादनन्याश्रयत्वात्।
जगत्तुच्छमेतत् समस्तं तदन्यत् तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलो॰॥
न चैकं तदन्यद् द्वितीयं कुतस्स्यात् न वा केवलत्वं न चाऽकेवलत्वम्।
न शून्यं न चाशून्यमद्वैतकत्वात् कथं सर्ववेदान्तसिद्धं ब्रवीमि॥

*श्रीशङ्कराचार्यविरचिता दशश्लोकी॥*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## श्रीहनुमान-चालीसा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुवर बिमल जस जो दायक फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानि कै सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं हरहु कलेस विकार॥

जय हनुमान ज्ञान गुनसागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
रामदूत अतुलित बलधामा। अंजनिपुत्र पवनसुत नामा॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरन विराज सुवेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा॥
हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजै। कांधे मूज जनेऊ साजै॥
संकर सुवन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जगबन्दन॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिवे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे॥
लाय सँजीवन लखन जियाए। श्रीरघुवीर हरषि उर लाए॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। कहा भरत सम तुम प्रिय भाई॥
सहस बदन तुमरो जस गावै। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥
यम कुबेर दिगपाल जहाँ तें। कवि कोविद कहि सकैं कहाँ तें॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुखमाही। जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा विन पैठारे॥
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना॥
आपन तेज सम्हारौ आपै। तीनों लोक हाँकते काँपै॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन्ह के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोइ लावै। तासु अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकन्दन राम दुलारे ॥
अष्टसिद्धि नवनिधि के दाता। अस वर दीन्हि जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सादर तुम रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै। जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥
अन्त काल रघुपति पुर जाई। जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरत हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गुसाईं। कृपा करौ गुरुदेव की नाईं ॥
यह सतबार पाठ कर जोई। छूठहि बन्दि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै सदा हृदय महँ डेरा ॥

पवन-तनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुरभूप॥

श्रीहनुमान चालिसा सम्पूर्ण॥

## श्रीसंकटमोचन-हनुमानाष्टक

बाल समै रवि भक्ष लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सो त्रास भयो जगको यह संकट काहु सो जात न टारो।
देवन जाय करी बिनती तब छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥ १
बालि के त्रास कपीस बसे गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महामुनि साप दियो तब चाहिय कौन उपाय बिचारो।
कै द्विज रूप ले आए महाप्रभु सो तुम तासु के संकट टारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥ २

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



अंगद के सँग कीस अनेक गये सिय खोज कपीस उचारो।
जीवित ना बचिहौ हमसों जु बिना सुधि लै इत को पगु धारो।
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब लाय सिया सुधि प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥ ३
रावन त्रास दयी सिय को तब रक्षक है करि सोक निवारो।
ताहि समै हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो।
माँगत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥ ४
बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तज्यो सुत रावन मारो।
लै गृह वैद्य सुषेन समेत तवै गिरि द्रोन सुबीर उपारो।
लाय सँजीवन श्रीहनुमानजु लछिमन के तुम प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥ ५
रावन जुद्ध अयान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल देखिके मोह भयो अति भारो।
आनि खगेस तबै हनुमान सुबंधन काटि कलेस निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥ ६
बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देविहिं पूजि भली विधि सों बलि देन दोऊ जन मंत्र विचारो।
जाय सहाय भयो तबहीं अहिरावन सैन्य समेत संहारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥ ७
काज किये बड़ देवन के कई बार महाप्रभु देखि विचारौ।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहि जात है टारो।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥ ८

लाल देह लाली लसै, अरु धरि लाल लँगूर।
बज्रदेह दानव दलन, जय जय जय कपिसूर॥

श्रीसंकटमोचन-हनुमानाष्टक सम्पूर्ण॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## सप्तश्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम्॥ १॥
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत् प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः॥ २॥
सर्वतःपाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति॥ ३॥
कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्॥ ४॥
ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्॥ ५॥
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्॥ ६॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः॥ ७॥

*श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे कृष्णार्जुनसंवादे सप्तश्लोकी गीता सम्पूर्णा॥*

## चतुःश्लोकी भागवत

ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम्।
सरहस्यं तदङ्गं च गृहाण गदितं मया॥
यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्मकः।
तथैव तत्त्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात्॥
अहमेवासमेवाग्रे नान्यद्यत् सदसत्परम्।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्यते सोस्म्यहम्॥ इति माहात्म्यम्।
ऋतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः॥ १॥
यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु।
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम्॥ २॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात्सर्वत्र सर्वदा॥ ३॥
एतन्मतं समातिष्ठ परमेण समाधिना।
भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित्॥ ४॥

*श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वितीयस्कन्धे चतुःश्लोकी भागवतं सम्पूर्णम्॥*

### एकश्लोकी रामायण

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धि रामायणम्॥

### गरुड स्तुति

श्रीविष्णुवाहं प्रणमामि भक्त्या सर्पाशनं दुःखहरं खगेशम्।
मनोहरं वायुसमानवेगं छन्दोमयं ज्ञानघनं प्रशान्तम्॥
विष्णुपत्राय शान्ताय बलबुद्धियुताय च।
पक्षीन्द्रायातिवेगाय गरुडाय नमो नमः॥

### श्रीहनुमत् स्तुति

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥
उल्लङ्घ्यसिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥

### अन्नपूर्णास्तुति

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे।
ज्ञान-वैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति॥

### कालिका स्तुति

कालि कालि महाकलि कालिके परमेश्वरि।
सर्वानन्दकरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

### शीतला स्तुति

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता।
शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


### पीपल स्तुति

अश्वत्थ हुतभुग्वाम गोविन्दस्य सदाप्रिय।
अशेषं हर मे पापं वृक्षराज नमोऽस्तु ते॥

### तुलसी स्तुति

देवैरस्त्वं निर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनीश्वरैः।
नमो नमस्ते तुलसि पापं हर हरप्रिये॥

## बलिवैश्वदेव

रसोई तैयार होने पर प्रथम बलिवैश्वदेव के निमित्त पाक ले मण्डल बनाकर संकल्पवाक्य के अन्त में **मम गृहे पञ्चसूनाजनितसकल-दोषपरिहारपूर्वकनित्यकर्मानुष्ठानसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं बलिवैश्वदेवाख्य-महायज्ञं करिष्ये** कहकर संकल्प करें। पश्चात् अग्निपात्र में ७, जलपात्र के समीप ३, और मण्डल में २० आहुतियां अंकों के स्थान पर दें। (यजमान के लिये करें तो अपना गोत्र तथा नाम उच्चारण कर **मम** की जगह यजमान का गोत्र तथा नाम कहकर संकल्प के अन्त में **करिष्ये** की जगह **करिष्यामि** कहें)।

**अग्निपात्र में** (नमक रहित दें)

**ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम १। ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम २। ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा, इदं गृह्याभ्यो न मम ३। ॐ कश्यपाय स्वाहा, इदं कश्यपाय न मम ४। ॐ अनुमतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ५। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा, इदं विश्वेभो देवेभ्यो न मम ६। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदं अग्नये स्विष्टकृते न मम ७।** (जलपात्र के समीप) **ॐ पर्जन्याय नमः, इदं पर्जन्याय न मम १। ॐ अद्भ्यो नमः, इदं अद्भ्यो न मम २। ॐ पृथिव्यै नमः, इदं पृथिव्यै न मम ३॥**

**मण्डल में**

**ॐ धात्रे नमः, इदं धात्रे न मम १। ॐ विधात्रे नमः, इदं विधात्रे न मम २। ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम ३। ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम ४। ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम ५। ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम ६। ॐ प्राच्यै नमः, इदं प्राच्यै न मम ७।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


अग्निकोण दक्षिण नैर्ऋत्यकोण

पूर्व

अग्निपात्र

१ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। २ ॐ प्रजापतये स्वाहा। ३ ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा। ४ ॐ कश्यपाय स्वाहा। ५ ॐ अनुमतये स्वाहा। ६ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। ७ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।

(मण्डल)
७ प्राच्यै नमः
३ वायवे नमः

१ धात्रे नमः
१३ सूर्याय नमः
१२ अन्तरिक्षाय नमः
११ ब्रह्मणे नमः
१५ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः
१४ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः
४ वायवे नमः
८ अवाच्यै नमः
१६ पितृभ्यः स्वधा नमः
(अपसव्य)
५ वायवे नमः
९ प्रतीच्यै नमः

विधात्रे नमः २
(कण्ठी कृत्य) हन्त ते १८
सनककादि मनुष्येभ्यो नमः
भूतानां पतये नमः १७
उषसे नमः १६
वायवे नमः ६
उदीच्यै नमः १०
यक्षमेतत्ते निर्णेजनं नमः २०
(सव्य)

जलपात्र
१ पर्जन्याय नमः
२ अद्भ्यो नमः
३ पृथिव्यै नमः

पश्चिम

गोग्रास, श्वान, काक, अतिथि, पिपीलिकादि पंचबलि

**ॐ अवाच्यै नमः, इदम् अवाच्यै न मम ८। ॐ प्रतीच्यै नमः, इदं प्रतीच्यै न मम ९। ॐ उदीच्यै नमः, इदम् उदीच्यै न मम १०। ॐ ब्रह्मणे नमः, इदं ब्रह्मणे न मम ११। ॐ अन्तरिक्षाय नमः, इदम् अन्तरीक्षाय न मम १२। ॐ सूर्याय नमः, इदं सूर्याय न मम १३। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम १४। ॐ**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


**विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः, इदं विश्वेभ्यो भूतूभ्यो न मम १५। ॐ उषसे नमः, इदम् उषसे न मम १६। ॐ भूतानां पतये नमः, इदं भूतानां पतये न मम १७।** (अपसव्य) **ॐ पितृभ्यः स्वधा नमः, इदं पितृभ्यः स्वधा न मम १८।**(सव्य होकर बचे हुए अन्न से) **ॐ यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः, इदं यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं न मम १९।** (कण्ठी कर के) **ॐ हन्त ते सनकादि मनुष्येभ्यो नमः, इदं हन्त ते सनकादि मनुष्येभ्यो न मम २० ॥**

## पञ्चबलि (सव्य होकर करें)

*गोबलि* (पत्ते पर) **सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः। प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः॥** *इदमन्नं गोभ्यो न मम।*

*श्वानबलि* (पत्ते पर) **द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ॥** *इदमन्न श्वभ्यां न०।*

*काकबलि* (पृथ्वी पर) **ऐन्द्रवारुणवायव्या सौम्या वै नैर्ऋतास्तथा। वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमावन्नं मयार्पितम्॥** *इदमन्न वायसेभ्यो न०।*

*अतिथिबलि* (पत्ते पर) **देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाश्च यक्षोरगदैत्यसङ्घाः। प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्॥** *इदमन्नं देवादिभ्यो न मम।*

*पिपीलिकादि बलि* (पत्ते पर) **पिपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः। तृप्त्यर्थमन्नं हि मया प्रदत्तं तेषामिदं ते मुदिता भवन्तु॥** *इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम।*

## श्राद्ध-विधि

श्राद्धकर्त्ता श्राद्ध के उपयुक्त ब्राह्मणों को पहले दिन निमन्त्रित करे। वार्षिक तिथि को एकोद्दिष्ट और महालय तथा पर्व में पार्वणादि श्राद्ध करें। यदि इस प्रकार न कर सकें तो पितृ-तृप्ति के लिये सांकल्पिक श्राद्ध तथा तर्पण अवश्य करें। श्राद्ध के समय लोहे के पात्र में पाकादि न रखें तथा लोहे का पात्र किसी काम में न लें।

**न जातीकुसुमैर्विद्वान् विल्वपत्रैश्च नार्चयेत्। सुरभिर्नागकर्णाद्यैर्हयारिकाञ्चनारकैः॥ बिल्वपत्रैर्नार्चयेत्तान् पितॄन् श्राद्धविगर्हितैः। तद् भुंजन्त्यसुराः श्राद्धं निराशैः पितृभिर्गतम्॥ सर्वाणि रक्तपुष्पाणि निषिद्धान्यपराणि तु। वर्जयेत् पितृश्राद्धेषु केतकी कुसुमानि च॥**

श्राद्ध में बिल्वपत्र, मालती, चम्पा, नागकेशर, कर्ण, जवा, कनेर,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


कचनार, केतकी और समस्त रक्तपुष्प वर्जित हैं। इन पुष्पों से पूजन पितरों को नही मिलता। उसे राक्षस ग्रहण कर लेते हैं।(बृ.पा. स्मृ.)

**खंजो वा यदि वा काणो दातुः प्रेष्योऽपि वा भवेत्। हीनातिरिक्तगात्रो वा तमप्यपनयेत् पुनः ॥**

लंगड़ा, काना, दाता का दास, अंगहीन और अधिक अंग वाला ब्राह्मण श्राद्ध में भोजन आदि के लिये निषिद्ध है।(मनुस्मृति)

**अस्रून् गमयति प्रेतान् कोपोऽरीननृतं शुनः। पादस्पर्शस्तु रक्षांसि दृष्कृतीनवधूननम् ॥**

श्राद्ध के समय आँसू आने से पाक प्रेतों को, क्रोध से शत्रुओं को, झूठ बोलने से कुत्तों को, पैर से छूने से राक्षसों को और पाक को उछालने से पापियों को मिलता है।(मनुस्मृति)

**यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे। तत्फलं पाण्डवश्रेष्ठ विप्राणां पादशौचने ॥**

हे पाण्डवश्रेष्ठ! कार्तिक पूर्णिमा को पुष्करतीर्थ में कपिला गौ के दान का जो फल होता है, वह ब्राह्मण के पैर धोने से मिलता है।

## पितृ-श्राद्ध

आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ दूसरा वस्त्र ले बाईं अनामिका की जड़ में तीन और दाहिनी में दो कुशाओं की पवित्री धारण कर आचमन, प्राणायाम कर के, तीन कुशाओं को सीधी बाँटकर ग्रन्थि लगा अग्रभाग पूर्व में रखते हुए आगे लिखे मन्त्र से पाक तथा सामग्री को पवित्र करें।

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।**
**यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥**

*दृष्टिस्पर्शनदोषात् पाकादीनां पवित्रतास्तु।*

बायें हाथ में पीली सरसों ले नीचे लिखा मन्त्र बोलें।

**ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम।**
**इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥**

पश्चात् उस सरसों को दाहिने हाथ से **ॐ प्राच्यै नमः** (पूर्व में) **ॐ अवाच्यै नमः** (दक्षिण में) **ॐ प्रतीच्यै नमः** (पश्चिम में) **ॐ उदीच्यै नमः** (उत्तर में) **ॐ अन्तरिक्षाय नमः** (ऊपर) **ॐ भूम्यै नमः** (नीचे) छोड़ें। जौ और पुष्पों से **ॐ भूम्यै नमः** मन्त्र से तीन बार पृथ्वी का पूजन करें। गायत्री तथा आगे लिखा मन्त्र तीन बार जपें।

**ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।**
**नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



### पिता के श्राद्ध का प्रतिज्ञा-संकल्प

पितुः की जगह दादा को **पितामहस्य,** परदादा को **प्रपितामहस्य** कहें। **ॐ अद्य विक्रमसम्वत्सरे** *(अमुक)* **सङ्ख्यके** *(अमुक)* **मासे** *(अमुक)* **पक्षे** *(अमुक)* **तिथौ** *(अमुक)* **वासरे** *(अमुक)* **गोत्रस्य अस्मत्पितुः** *(अमुक)* ( पितरों के नाम के अन्त में ब्राह्मण को **शर्मणः,** क्षत्रिय को **वर्मणः,** वैश्यको **गुप्तस्य** कहें) **साङ्कल्पिक-श्राद्धं तदङ्गत्वेन बलिवैश्वदेवाख्यं पञ्चबलिकर्म च करिष्ये ॥**

(बलिवैश्वदेव पृ॰ १२८ तथा पञ्चबलि पृ॰ १३० से करें)

आसन, पत्ता आदि दक्षिण में रखें। अपसव्य तथा दक्षिणाभिमुख हो बायाँ घुटना मोड़, पितृलोक से आते हुए पिता का ध्यान कर नीचे लिखा संकल्प आसन पर छोड़ें। **पितुः** की जगह दादा को **पितामहस्य**, परदादा को **प्रपितामहस्य** कहें।

**अद्य** *(अमुक)* **गोत्रस्य पितुः** (*अमुक*—शर्मणः, वर्मणः, गुप्तस्य) **साङ्कल्पिक श्राद्धे इदं आसनं ते स्वधा ।**

### गन्धादि

आसन पर गन्ध, पुष्प, तांबूल, सिन्दूर और वस्त्रादि रखें। पाक लेकर आगे लिखे मन्त्र से बाईं ओर भूस्वामि के निमित्त पृथ्वी पर रखें।

**ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः ।**

पात्र में पाकादि परोस, पाक के ऊपर मधु लगा, पितृ आसन के सम्मुख रखें। उस पात्र के पूर्व में जलपात्र आदि तथा पत्ते पर घृत रखें। पश्चात् पितृ-आसन तथा अन्नपात्रादि के चारों ओर जल के मण्डल करें। फिर पात्र का स्पर्श करते हुए बायाँ हाथ अपनी दाईं ओर उलटा रख कर नीचे लिखा मन्त्र बोलें।

**ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽ अमृतेऽ अमृतं जुहोमि स्वाहा॥ ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा ॥ ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम् ।**

बाएँ हाथ को वैसे ही रखते हुए दाहिने हाथ के अंगूठे से अन्नादि का स्पर्श करें। **ॐ इदमन्नम्** (पाक स्पर्श), **ॐ इमा आपः** (जल स्पर्श), **ॐ इदमाज्यम्** (घृतस्पर्श), **ॐ इदं कविः** (पुनः पाक स्पर्श)। पाक की रक्षा के लिये आगे लिखे वाक्य से पात्र के बाहर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


तिल छोड़ें। **ॐ अपहताऽ असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।**

### पाक का संकल्प

**पित्रे** की जगह दादा को **पितामहाय,** परदादा को **प्रपितामहाय** कहें। **ॐ अद्य** (अमुक) **गोत्राय पित्रे** (अमुक शर्मणे, वर्मणे, गुप्ताय) **साङ्कल्पिक-श्राद्धे इदमन्नं परिविष्टं परिविष्यमाणं ब्राह्मणभोजन-तृप्तिपर्यन्तं सोपस्करं ते स्वधा।**

सव्य तथा पूर्वाभिमुख होकर आशीर्वाद के लिये प्रार्थना करें।

**ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु॥ अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु।**

अपसव्य तथा दक्षिणाभिमुख होकर नीचे लिखे संकल्प से वस्त्र पर दक्षिणा रखें।

**कृतैतत् श्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।**

सव्य तथा पूर्वाभिमुख होकर आगे लिखी प्रार्थना करें।

**अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्।**
**तत्सर्वमछिद्रमस्तु पित्रादीनां प्रसादतः॥**
**प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।**
**स्मरणादेव तद्विष्णो सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥**
**ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः।**

काक और श्वान बलि को छोड़कर बाकी सभी बलि गौ को दें। पश्चात् ब्राह्मण के पैर धोकर आसन पर बैठा, पाक परोस कर भोजन के लिये प्रार्थना करें। श्राद्धकर्ता पाक का गुण-वर्णन करते हुए नम्रता पूर्वक बार-बार परोसे। ब्राह्मण पाक की प्रसंशा न करे। भोजन के बाद तिलक करके दक्षिणा देकर उनसे पूछे—**शेषान्नं किं कर्तव्यम्?** ब्राह्मण कहे—**इष्टैः सह भोक्तव्यम्।** पश्चात् पितृतृप्ति के लिये तर्पण करके काकबलि कौवे को और श्वानबलि कुत्ते को देकर इष्ट-मित्रों सहित भोजन करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**मातृ-श्राद्ध**

आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ दूसरा वस्त्र ले बाईं अनामिका की जड़ में तीन और दाहिनी में दो कुशाओं की पवित्री धारण कर आचमन प्राणायाम कर के, तीन कुशाओं को सीधी बाँटकर ग्रन्थि लगा अग्र भाग पूर्व में रखते हुए नीचे लिखे मन्त्र से पाक तथा सामग्री को पवित्र करें।

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।**
**यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।**
*दृष्टिस्पर्शनदोषात् पाकादीनां पवित्रतास्तु।*

बायें हाथ में पीली सरसों ले आगे लिखा मन्त्र बोलें।

**ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम।**
**इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः।।**

पश्चात् उस सरसों को दाहिने हाथ से **ॐ प्राच्यै नमः** (पूर्व में) **ॐ अवाच्यै नमः** (दक्षिण में) **ॐ प्रतीच्यै नमः** (पश्चिम में) **ॐ उदीच्यै नमः** (उत्तर में) **ॐ अन्तरिक्षाय नमः** (ऊपर) **ॐ भूम्यै नमः** (नीचे) छोड़ें।

जौ और पुष्पों से **ॐ भूम्यै नमः** बोलते हुए तीन बार पृथ्वी का पूजन करें। गायत्री तथा नीचे लिखा मन्त्र तीन बार जपें।

**ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।**
**नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः।।**

**माता के श्राद्ध का प्रतिज्ञा-संकल्प**

मातुः की जगह दादी को **पितामह्याः**, परदादी को **प्रपितामह्याः** कहें। **ॐ अद्य विक्रमसम्वत्सरे** *(अमुक)* **सङ्ख्यके** *(अमुक)* **मासे** *(अमुक)* **पक्षे** *(अमुक)* **तिथौ** *(अमुक)* **वासरे** *(अमुक)* **गोत्रायाः मातुः** *(अमुकी)* **देव्याः साङ्कल्पिक-श्राद्धं तदङ्गत्वेन बलिवैश्वदेवाख्यं पञ्चबलि-कर्म च करिष्ये।** (बलिवैश्वदेव तथा पञ्चबलि पृ० १२८-१३० से करें)

आसन, पत्ता आदि दक्षिण में रखें। अपसव्य तथा दक्षिणाभिमुख हो बायाँ घुटना मोड़, पितृलोक से आती हुई माता का ध्यान कर नीचे लिखा संकल्प आसन पर छोड़ें। **मातुः** की जगह दादी को **पितामह्याः** परदादी को **प्रपितामह्याः** कहें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**अद्य** *(अमुक)* **गोत्रायाः मातुः** *(अमुकी)* **देव्याः साङ्कल्पिक श्राद्धे इदं आसनं ते स्वधा ।**

**गन्धादि**—आसन पर गन्ध, पुष्प, तांबूल, सिन्दूर और वस्त्रादि रखें।

**मातः** की जगह दादी को **पितामही**, परदादी को **प्रपितामही** कहें।

**अद्य** *(अमुक)* **गोत्रे मातः** *(अमुकि)* **देवि एतानि गन्ध-पुष्प-ताम्बूल-पूगीफल-सिन्दूर-वासांसि ते स्वधा ।**

पाक लेकर आगे लिखे मन्त्र से बाईं ओर भूस्वामी के निमित्त पृथ्वी पर रखें। **ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः।**

पात्र मे पाकादि परोस, पाक के ऊपर मधु लगा, मातृ आसन के सम्मुख रखें। उस पात्र के पूर्व में जलपात्र आदि तथा पत्ते पर घृत रखें। पश्चात् मातृ आसन तथा अन्न-पात्रादि के चारों ओर जल से मण्डल बनाएँ। फिर पात्र का स्पर्श करते हुए बायाँ हाथ अपनी दाईं ओर उलटा रख कर नीचे लिखा मन्त्र बोलें।

**ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽ अमृतेऽ अमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा ॥ ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम् ।**

बाएँ हाथ को वैसे ही रखते हुए दाहिने हाथ के अंगूठे से अन्नादि का स्पर्श करें। **ॐ इदमन्नम्** (पाकस्पर्श), **ॐ इमा आपः** (जलस्पर्श), **ॐ इदमाज्यम्** (घृतस्पर्श), **ॐ इदं कविः** (पुनः पाकस्पर्श)। पाक की रक्षा के लिये नीचे लिखे वाक्य से पात्र के बाहर तिल छोड़ें। **ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः ।**

### पाक का संकल्प

**मात्रे** की जगह दादी को **पितामह्यै**, परदादी को **प्रपितामह्यै** कहें।

**ॐ अद्य** (अमुक) **गोत्रायै मात्रे** (अमुकी) **देव्यै इदमन्नं परिविष्टं परिविष्यमाणं ब्राह्मणभोजनतृप्तिपर्यन्तं सोपस्करं ते स्वधा ।**

सव्य तथा पूर्वाभिमुख होकर आशीर्वाद के लिये प्रार्थना करें।

**ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु ॥ अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन ॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु ।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



अपसव्य तथा दक्षिणाभिमुख होकर नीचे लिखे संकल्प से वस्त्र पर दक्षिणा रखें।

**कृतैतद्श्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।**

सव्य तथा पूर्वाभिमुख होकर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

**अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्।**
**तत्सर्वमछिद्रमस्तु पित्रादीनां प्रसादतः।।**
**प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।**
**स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।**
**ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः।**

काक और श्वान बलि को छोड़कर बाकी सभी बलि गौ को दें। पश्चात् ब्राह्मण के पैर धो कर आसन पर बैठा, पाक परोस कर भोजन के लिये प्रार्थना करें। श्राद्धकर्ता पाक का गुण-वर्णन करते हुए नम्रतापूर्वक बार-बार परोसें। ब्राह्मण पाक की प्रसंशा न करें। भोजन के बाद तिलक करके दक्षिणा देकर उनसे पूछे—**शेषान्नं किं कर्तव्यम् ?** ब्राह्मण कहे—**इष्टैः सह भोक्तव्यम्**। पश्चात् पितृतृप्ति के लिये तर्पण करके काकबलि कौवे को और श्वानबलि कुत्ते को देकर इष्ट-मित्रों सहित भोजन करें।

*श्राद्धकर्म सम्पूर्णम्।।*

## भोजन-विधि

**आयुः सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्द्धनाः। रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः।।**

आयु, सात्त्विकभाव, बल, आरोग्य, सुख तथा रुचिवर्धक, घी-दूध आदि युक्त सात्त्विक अन्न का तथा फल आदि का भोजन करना चाहिये।

**एक पंक्त्युपविष्टानां विप्राणां सह भोजनम्। यद्येकोऽपि त्यजेत् पात्रं शेषमन्नं न भुज्यते।।**

एक पंक्ति में बैठ कर भोजन करते हुए ब्राह्मणों में से कोई एक भी उठ जाए तो औरों को भी भोजन नहीं करना चाहिये। अर्थात् औरों के भोजन करते समय बीच में उठना निषिद्ध है।

**उपलिप्ते शुचौ देशे पादौ प्रक्षाल्य वाग्यतः। प्राङ्मुखोऽन्नं तु भुंजीत शुचिः पीठमधिष्ठितः।।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



शुद्ध स्थान में, पैर धोकर आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर मौन हो भोजन करें।

**नृणां भोजनकाले तु यदि दीपो निवर्त्तते। तदन्नं पाणिना स्पृष्ट्वा सावित्रीं मनसा स्मरेत्। पुनर्दीपं ततो लब्ध्वा शेषं भुंजीत वाग्यतः ।।**

भोजन करते समय दीपक (या बिजली बत्ती आदि) बुझ जाये तो भोजन करना बन्द कर दें। पुनः प्रकाश होने पर भोजन करें।

भोजन के पहले भगवद् दर्शन कर तुलसी-चरणामृत आदि लेना चाहिये। दूसरा वस्त्र लेकर बलिवैश्वदेव करके भोजन पात्र के चारों ओर जल से ब्राह्मण चतुष्कोण, क्षत्रिय त्रिकोण और वैश्य गोल मण्डल बनाएँ। बाएँ हाथ से भोजन न करें। यदि ऊपर लिखा समस्त विधान न कर सकें तो प्रत्येक मनुष्य को **आपोशान** के तीन ग्रास अवश्य देने चाहिये।

### आपोशान

नीचे लिखे प्रत्येक मन्त्र से एक-एक ग्रास देकर जल छोड़ें।

**ॐ भूपतये स्वाहा १। ॐ भुवनपतये स्वाहा २। ॐ भूतानाम्पतये स्वाहा ३।** पश्चात् नीचे लिखा मन्त्र बोल कर आचमन करें। **ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ४।**

नीचे लिखे प्रत्येक मन्त्र से ग्रास लेकर आचमन कर भोजन करें। **ॐ प्राणाय स्वाहा १। ॐ अपानाय स्वाहा २। ॐ व्यानाय स्वाहा ३। ॐ उदानाय स्वाहा ४। ॐ समानाय स्वाहा ५।** भोजन के पश्चात् **ॐ अमृतपिधानमसि स्वाहा** बोल कर आचमन करके उच्छिष्ट अन्न को नीचे लिखे मन्त्र से दक्षिण में फेंक दें।

**मद्भुक्तोच्छिष्टशेषं ये भुञ्जते पितरोऽधमाः।**
**तेषामन्नं मया दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतु।।**

मुखशुद्धि के लिये सोलह कुल्ले करके नीचे लिखे मन्त्र बोलें।

**अगस्त्यं कुम्भकर्णं च शनिं च बडवानलम्।**
**आहारपरिपाकाय संस्मरामि वृकोदरम्।।**
**आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः।**
**समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु।।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



### प्रार्थना

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति।।
माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्।।

### सायं-दीपस्तुति

जिसके घर में सूर्यास्त से सूर्योदय तक दीपक जलता है उसके घर में दरिद्रता नहीं रहती। दीपक जला कर नीचे लिखी प्रार्थना करके भजनादि करें।

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं सन्ध्यादीप नमोऽस्तु ते।।
शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुखसम्पदाम्।
मम बुद्धिप्रकाशं च दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

## शयन-विधि

रात्रि में शयन के समय दिन में किये हुए कर्मों का स्मरण करें। यदि त्रुटि हो गई हो तो उसके निमित्त यथाशक्ति भगवान् का नाम लेकर क्षमा-प्रार्थना करें और मन में दृढ संकल्प करें जिससे फिर त्रुटि न हो। नीचे लिखे मन्त्र बोल पूर्व या दक्षिण की ओर सिर कर भगवत् स्मरण करते हुए निद्रा लें।

जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः।
अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशवः।।
अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः।
कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः।।
सर्पापसर्प भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष।
जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर।।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णुरतुलां तेजसः प्रभुः।।
तिस्रो भार्य्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती।
तासां स्मरणमात्रेण चौरो गच्छति निष्फलः।।

कफल्लम्। कफल्लम्। कफल्लम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

# विवाह–पद्धति

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

**गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।**
**उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥**

न पूर्वदिनमाचरेत् त्रिनवषण्मिते वासरे–विवाह के दिन से पूर्व नौवें, छठे और तीसरे दिन को छोड़ कर विवाह के लिये उपयुक्त नक्षत्र मे कन्या या पुत्र का वैवाहिक कार्य आरम्भ करना चाहिये।

## कन्या पक्ष की पूर्वांग विधि

विवाह के पहले दिन या उसी दिन सपत्नीक कन्या का पिता या कन्यादानकर्ता नित्यक्रिया कर के मांगलिक स्नान, शिखा बन्धन, तिलक, बलिवैश्वदेवादि कर के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ, **रक्षा-दीप** (पृ॰ ४६) प्रज्वलित कर, आचमन प्रणायामादि करके ब्राह्मण द्वारा **शान्तिपाठ** करावे। इसके बाद कन्या के गर्भाधानादि संस्कारों के अकरण निमित्त कन्या का पिता हाथ में कुशादि लेकर (पृ. ६) संकल्प करें। देशकालादि का स्मरण कर **नामाहं** के आगे–**मम अस्याः** *(अमुक)* **नाम्नाः कन्यायाः गर्भाधान-पुंसवन-सीमन्तोन्नय-जातकर्म-नामकरण-निष्क्रमण-अन्नप्राशन-चूडाकरण-संस्काराणाम-करणजन्यप्रत्यवायपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रतिसंस्कारं पादकृच्छ्रं चूडायाः अर्द्धकृच्छ्रं प्रायश्चित्तं तत्प्रत्याम्नाय गोनिष्क्रय द्रव्यदानेन आचरिष्यामि।**

कन्या का पिता हाथ में गोनिष्क्रयद्रव्य (गाय खरीदने योग्य धन) लेकर, पूर्व की तरह निम्नलिखित संकल्प कर ब्राह्मण को दे।

**मम अस्याः कन्यायाः गर्भाधानाद्यकरणजन्य प्रत्यवायपरि-हारार्थं इदं नव गोनिष्क्रयद्रव्यं ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

इसके बाद प्रधान संकल्प करे। देशकालादि का स्मरण कर–

**मम अस्याः** (अमुक) **नाम्नाः कन्यायाः बीजगर्भसमुद्भवैनो-निवर्हणद्वारा भर्त्रासह धर्म्यप्रजोत्पादनगृह्यपरिग्रहधर्माचरणेष्व-धिकारसिद्धिद्वारा च श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं ब्राह्मविवाहविधिना विवाहाख्यसंस्कारं करिष्ये।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



पुनः निम्न संकल्प कर स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन, मात्रिका पूजन, गणेशाम्बिका पूजन, नवग्रह पूजन आदि (पृ. ४७-६४) करें।

**तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं निर्विघ्नता-सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः नवग्रहादि पूजनं च करिष्ये।**

## वरपक्ष की पूर्वांग विधि

वर का पिता विवाह के पूर्वदिन या उसी दिन सपत्नीक नित्य-क्रियादि कर के अपने दक्षिण में अपनी पत्नी एवं पत्नी के दक्षिण में पुत्र के साथ पूर्वाभिमुख बैठ कर रक्षा-दीप प्रज्वलित कर आचमन, प्राणायामादि कर, ब्राह्मण द्वारा शान्ति-पाठ आदि के बाद प्रधान संकल्प करे–*(अमुक)* **नामाहं सपत्नीकोऽहं ममास्य पुत्रस्य देवपितृऋणापाकरणहेतु - धर्म्यप्रजोत्पादनगृह्यपरिग्रहसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतये विवाहाख्यं संस्कारं करिष्ये।**

पुनः निम्न संकल्प कर स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन, गणेश-अम्बिका पूजन, नवग्रह पूजन आदि करें।

**तत्पूर्वांगत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशा-म्बिकयोः पूजनं च करिष्ये।**

वर अनाश्रमस्थिति प्रयुक्त दोष के प्रायश्चित्त के निमित्त गोनिष्क्रयद्रव्य लेकर निम्न संकल्प कर ब्राह्मण को दे।

**मम समावर्तनदिनमारभ्य अद्यदिनं यावत् अनाश्रमस्थिति-जन्यदोषपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्राजापत्यकृच्छ्रभूतैक गोनिष्क्रयद्रव्यं ब्राह्मणाय सम्प्रददे।** ब्राह्मण **ॐ स्वस्ति** कहे।

इसके बाद वर अपने बान्धवों के साथ वाद्य आदि का उद्घोष करता हुआ कन्या के पिता के घर जाए। कन्या का पिता तिलक, माला आदि से सब का पूजन करे तथा बैठाए।

वर विवाह-स्थल में जाकर पूर्वाभिमुख बैठे और कन्या का पिता सपत्नीक उत्तराभिमुख बैठ गणपत्यादि पूजन कर देश-कालादि का उच्चारण कर निम्न संकल्प से अपनी शाखा के अनुसार मधुपर्क करे।

**कन्यादानप्रतिग्रहार्थं गृहागतं स्नातकं वरं मधुपर्केणार्हयिष्ये।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## मधुपर्क

यजमान (कन्या का पिता) पीठासन[१] को पकड़ कर वर से कहे–**ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्।** वर कहे–**ॐ अर्चय।** यजमान पक्ष का ब्राह्मण कहे–**ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः।** यजमान विष्टर[२] हाथ मे लेकर–**विष्टरः प्रतिगृह्यताम्।** वर के हाथ में दे। वर–**विष्टरं प्रतिगृह्णामि** कहकर **ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः। इमं तमभि तिष्टामि यो मा कश्चाभिदासति।।** इस मन्त्र से विष्टर को आसन पर उत्तराग्र रख उस पर बैठे।

यजमान पाद्य ले। ब्राह्मण–**ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यम्।** यजमान–**पाद्यः प्रतिगृह्यताम्।** वर–**पाद्यं प्रतिगृह्णामि** कहकर उस पात्र को लेकर भूमि पर रख अंजलि में जल लेकर **ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः।।** इस मन्त्र से स्वयं दक्षिण पैर धोकर इसी मन्त्र से वाम पैर धोए[३]। यजमान चंदन, अक्षत, पुष्पमाला आदि से वर का पूजन करे।

यजमान द्वितीय विष्टर ले। ब्राह्मण–**ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः।** यजमान–**विष्टरं प्रतिगृह्यताम्।** वर–**विष्टरं प्रतिगृह्णामि** कहकर **ॐ वर्ष्मोऽस्मि...** इस मन्त्र से विष्टर को अपने पैरों के नीचे उत्तराग्र रखे।

यजमान अर्घ[४] ले। ब्राह्मण–**ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः।** यजमान–**अर्घः प्रतिगृह्यताम्।** वर–**अर्घं प्रतिगृह्णामि।** अर्घ लेकर **ॐ आपःस्थ युष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानि।।** इस मन्त्र से अर्घ के अक्षतादि को सिर में लगा **ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत ।।** इस मन्त्र से अर्घ का जल ईशान कोण में छोड़ दे।

यजमान जल ले। ब्राह्मण–**ॐ आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयम्।** यजमान–**आचमनीयं प्रतिगृह्यताम्।** वर–**आचमनीयं प्रतिगृह्णामि।** आचमनीय लेकर **ॐ आमाऽगन्यशसा सꣳ सृज**

---

१. लकड़ी का पीढ़ा–वर के बैठने का स्थान।

२. **पंचविंशति दर्भाणां वेण्यग्रे ग्रन्थिभूषितम्।** २५ कुशाओं की वेणी में ग्रंथि लगा कर विष्टर बनाएँ।

३. यदि वर क्षत्रिय या वैश्य हो तो पहले वाम फिर दक्षिण पैर धोए।

४. दूर्वा, चंदन, अक्षत, पुष्प, फल सहित जलपूर्ण–अर्घपात्र।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**वर्चसा। तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम् ॥** मन्त्र से आचमन करें। पुनः दो बार आचमन करे।

यजमान मधुपर्क[1] ले। ब्राह्मण—**ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः।** यजमान—**मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम्।** वर—**मधुपर्कं प्रतिगृह्णामि** कह कर यजमान के हाथ में ही मधुपर्क को देखता हुआ **ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे** बोले। पुनः **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥** मन्त्र से **प्रति गृह्णामि** कहकर मधुपर्क ले बाएँ हाथ में रखकर दक्षिण हाथ को फैलाकर अनामिका से **ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने यत्तऽ आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि ॥** मन्त्र से मधुपर्क मिला कर, अंगुष्ठ और अनामिका से एक बार मौन होकर मिला कर पहले ऊपर या बाहर फेके पुनः इसी मन्त्र से मिला कर दो बार निरीक्षण कर उस पात्र को भूमि पर रख दे। **ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यम्। तेनाऽहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणाऽन्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि॥** इस मन्त्र को पढ़ते हुए अंगुष्ठ एवं अनामिका से तीन बार प्राशन करे। शेशान्न को पूर्व दिशा में फेंक दे। इसके बाद दो बार (३-३ बार) आचमन कर के अपने अंगों का आगे लिखे मन्त्रों द्वारा स्पर्श करे। **ॐ वाङ्मऽ आस्येऽस्तु**—तर्जनी, मध्यमा, अनामिका से मुख स्पर्श, **ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु**—तर्जनी, अंगुष्ठ से नासिका स्पर्श, **ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु**—अनामिका, अंगुष्ठ से दोनों आँखों का स्पर्श, **ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु**—दक्षिण हाथ से दोनो कानों का स्पर्श, **ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु**—दोनो बाहु का स्पर्श, **ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु**—दोनो हाथों से घुटनों का स्पर्श, **ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु**—दोनों हाथों से सर्वांग स्पर्श करे।

यजमान कुशा और गोनिष्क्रयद्रव्य हाथ में ले। ब्राह्मण—**ॐ गौर्गौर्गौः।** यजमान—**आलभ्यताम्** कहकर वर के हाथ में देदे। वर—**ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनाꣳ स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभिः। प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागादितुं वधिष्ट ॥**

---

१. **संशोधितं दधिमधु कांस्यपात्रे स्थितं घृतम्। कांस्येनान्येन संछन्नं मधुपर्कमितीर्यते॥** कांसे के पात्र में दधि, मधु तथा घृत, मिलाकर कांसे के अन्य पात्र से ढक दें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


**मम चाऽमुष्य च पाप्मा हतः॥** इस मन्त्र से गौ का ध्यान कर **ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु** उच्चस्वर में बोल कर कुशा का त्याग कर दे और द्रव्य हाथ में ले संकल्प–**ब्राह्मणाय सम्प्रददे**–कर ब्राह्मण को दे। इसके बाद वर की अनुमति से वरपक्षीय ब्राह्मण कन्या के हाथ से २४ अंगुलि विस्त्रित वेदी का पञ्चभूसंस्कार करे।

### पञ्चभू-संस्कार

२४ अंगुलि विस्तृत चौकोर वेदी बनाकर, कुशाओं से सम्मार्जित कर इन कुशाओं को ईशानकोण में रख दें। गोमय से वेदी का लेपन करें। वेदी में दक्षिण से उत्तर की ओर स्रुवमूल से तीन रेखाएँ बनाएँ। उसी क्रम में अंगुष्ठ और अनामिका मिलाकर रेखाओं से मिट्टी उठाकर ईशान में त्याग दें। पुनः जल छिड़कें। अग्नि को कांसे के पात्र में रख, दूसरे पात्र से ढककर मौन हो, **ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँऽ आसादयान्त्विह ॥** इस मन्त्र से अपने सम्मुख अग्निस्थापन करें। अग्नि की रक्षा के लिये उसके ऊपर कुछ लकड़ियां रख दें।

कन्या को बुलाकर पश्चिमाभिमुख बैठाएँ। गणपत्यादि पूजन करें। यजमान वर को ४ वस्त्र दे। वर उसमें से दो वस्त्र कन्या को दे। आगे लिखे मन्त्रों से कन्या वस्त्र पहने। (अधोवस्त्र) **ॐ जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाऽऽकृष्टीनामभिशस्ति पावा। शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्राननु संव्ययस्वाऽऽयुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ॥** (उत्तरीय) **ॐ याऽ अकृतन्नवयन् याऽ अतन्वत। याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततन्थ। तास्त्वा देवीजरसे संव्ययस्वाऽऽयुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ॥** आगे लिखे मन्त्रों से वर वस्त्र पहने। (अधो.) **ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषमभि संव्ययिष्ये ॥** (उप.) **ॐ यशसा मा द्यावा पृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पतिः। यशो भगश्च माऽविदद्यशो मा प्रतिपद्यताम् ॥** फिर वर और कन्या दो-दो बार आचमन करें। कन्या का पिता **परस्परं समञ्ज्यातम्** कहकर कन्या और वर का मुख एक-दूसरे की तरफ करे। वर आगे लिखे मन्त्र से कन्या का मुख देखे। **ॐ समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**हृदयानि नौ। सं मातरिश्वा सन्धाता समुद्रेष्ट्री दधातु नौ ।।** फिर कन्या का पिता अपनी पत्नी के साथ ग्रन्थिबन्धन करे।

### कन्या-दान

लग्नदान के लिये वर का पिता हाथ में जल-द्रव्यादि लेकर देश-कालादि का स्मरण कर *(अमुक)* **प्रवरो** *(अमुक)* **गोत्रो** *(अमुक)* **शर्माऽहं** *(अमुक)* **शर्मणो वरस्य दशायामन्तरदशायां गोचरे अष्टवर्गे वर्षफलेऽपि वा विवाहलग्नात् यत्र-कुत्र स्थाने स्थितानामादित्यादिनवग्रहाणां दुष्टफलनिरासपूर्वकं शुभानां शुभफलाधिकप्राप्तये आदित्यादिनवग्रहाणां प्रीतये च इदं सुवर्णं तन्निष्क्रयीभूतं द्रव्यं वा ब्राह्मणाय दास्ये।।** ऐसा संकल्प कर ब्राह्मण को दे। इसी प्रकार कन्या के लिये भी करे (कन्यादाता वर द्वारा दिये गए वस्त्र-अलंकारादि से रहित अपने द्वारा दिये हुए वस्त्र कन्या को पहनाकर कन्यादान करे)। कन्यादाता पवित्र हो आचमन-प्राणायामादि करके, **ॐ मम अस्याः कन्यायाः अनेन वरेण धर्मप्रजया उभयोर्वंशयोर्वृद्ध्यर्थं मम समस्तपितृणां निरतिशयानन्दब्रह्मलोकावाप्त्यादिकन्यादानकल्पोक्तफलप्राप्तयेऽनेन वरेणास्यां कन्यायामुत्पादयिष्यमाणसन्तत्या दशपूर्वान् दशपरान् मां च एकविंशतिपुरुषान् उद्धर्त्तुकामः श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये ब्राह्मविवाहविधिना कन्यादानमहं करिष्ये।** ऐसा संकल्प कर वर का पूजन करे। वर के दाहिने हाथ पर कन्या का दाहिना हाथ रखे। अपनी रीति के अनुसार लोकाचार करे। दोनों पक्ष के ब्राह्मण शाखोच्चार करें।

### शाखोच्चार

वरपक्ष का प्रथम शाखोच्चार—**ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।।**

**कौपीनं परिधाय पन्नगपतिं गौरीपते श्रीपते-**
**रभ्यर्णं समुपागते कमलया सार्धं स्थितास्याऽऽसने।**
**आयाते गरुडेऽथ पन्नगपतौ त्रासाद्बहिर्निर्गते**
**शम्भुं वीक्ष्य दिगम्बरं जलभुवः स्मेरं स्मितं पातु वः।।**

**अस्यां रात्रावस्मिन् मङ्गलमण्डपाभ्यन्तरे स्वस्तिश्रीमद्विविधविद्या-**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



विचारचातुर्यविनिर्जितसकलवादिवृन्दोपरिविराजमानपदपदार्थसाहित्य-रचनामृतायमानकाव्यकौतुकचमत्कारपरिणतविनिसर्गसुन्दरसारस्वत-सहजानुगुणानुभावगुणानिकरगुम्फितयशः सुरभीकृतमङ्गल-मण्डपस्य स्वस्ति श्रीमतः शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेय-माध्यन्दिनीयशाखाऽध्येतुः कात्यायनसूत्रिणः *अमुक* गोत्रस्य *अमुक* प्रवरस्य *अमुक* शर्मणः वर्मणः, गुप्तस्य प्रपौत्रः, शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाऽध्येतुः कात्यायनसूत्रिणः *अमुक* गोत्रस्य *अमुक* प्रवरस्य *अमुक* शर्मणः पौत्रः, शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाऽध्येतुः कात्यायनसूत्रिणः *अमुक* गोत्रस्य *अमुक* प्रवरस्य *अमुक* शर्मणः पुत्रः प्रयतिपाणिः शरणं प्रपद्ये स्वस्ति संवादेषु उभयोर्वृद्धिर्वरकन्ययोर्मङ्गलमास्तां वरश्चिरञ्जीवी भवतात् कन्या च सावित्री भूयात् ।

कन्यापक्ष का प्रथम शाखोच्चार—ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्यः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥

ईशानो गिरिशो मृडः पशुपतिः शूली शिवः शङ्करः
भूतेशः प्रमथाधिपः स्मरहरो मृत्युञ्जयो धूर्जटिः।
श्रीकण्ठो वृषभध्वजो हरभवो गङ्गाधरस्त्र्यम्बकः
श्रीरुद्रः सुरवृन्दवन्दितपदः कुर्यात् सदा मङ्गलम् ॥

यस्यां रात्रावस्मिन् मङ्गलमण्डपाभ्यन्तरे स्वस्तिश्रीमद्विविधविद्याऽलङ्कारशरद्विमलरोहिणीरमणरमणीयोदारसुन्दरदामोदरपादमकरन्द-वृन्दशेखरप्रचण्डाखण्डपूर्णपूरेन्दुनन्दनचरणकमलभक्तितदुपरिमहानु-भावसकलविद्याविनीतनिजकुलकमलकलिकाप्रकाशनैकभास्करसदा-चारसच्चरितसकलसत्प्रतिष्ठाश्रेष्ठविशिष्टवरिष्ठस्य स्वस्ति श्रीमतः शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाऽध्येतुः कात्यायन-सूत्रिणो *अमुक* गोत्रस्य *अमुक* प्रवरस्य *अमुक* शर्मणः वर्मणः, गुप्तस्य प्रपौत्री, शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाऽध्येतुः कात्यायनसूत्रिणो *अमुक* गोत्रस्य *अमुक* प्रवरस्य *अमुक* शर्मणः पौत्री, शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनीयशाखाऽध्येतुः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



कात्यायनसूत्रिणः *अमुक* गोत्रस्य *अमुक* प्रवरस्य *अमुक*शर्मणः पुत्री प्रयतिपाणिः शरणं प्रपद्ये स्वस्ति संवादे उभयोर्वृद्धिर्वरकन्ययोर्मङ्गलमास्तां वरश्चिरञ्जीवी भवतात् कन्या च सावित्री भूयात् ।

वरपक्ष का द्वितीय शाखोच्चार—ॐ आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्योऽतिव्याधि महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जीष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवाऽस्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः कल्पताम् ।।

रासोल्लासभरेण विभ्रमभृतामाभीरवामभ्रुवा-
मभ्यर्णं परिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमान्धया राधया।
साधु त्वद्वदनं सुधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति-
र्व्याजालिङ्गनचुम्बितः स्मितमनोहारी हरिः पातु वः।।

अद्य अस्यां रात्रावस्मिन् ... कन्या च सावित्री भूयात् ।

कन्यापक्ष का द्वितीय शाखोच्चार—ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

देयं वारि कथं यतः सुरधुनी मौलै कथं पावके
देवस्तद्धि विलोचनं, कथमहिर्देव्यः स चाङ्के तव।
तस्माद् द्यूतविधौ त्वयाऽद्य मुषितो हारःपरित्यज्यता-
मित्थं शैलसुता विहस्य लपितः शम्भुः शिवायास्तु वः।।

अद्य अस्यां रात्रावस्मिन् ... कन्या च सावित्री भूयात् ।

वरपक्ष का तृतीय शाखोच्चार—ॐ आयुष्यं वर्चस्यꣳ रायस्वोषमौद्भिदम्। इदꣳ हिरण्यं वर्चस्व जैत्रायाऽऽविशतादु माम् ।।

देवक्यां यस्य सूतिस्त्रिजगति विदिता रुक्मिणी धर्मपत्नी
पुत्राः प्रद्युम्नमुख्याः सुरनरजयिनो वाहनं पक्षिराजः।
वृन्दारण्यं विहारो व्रजपुरवनिता वल्लभा राधिकाद्याः
चक्रं विख्यातमस्त्रं स जयति जगतां स्वस्तये नन्दसूनुः।।

अद्य अस्यां रात्रावस्मिन् ... कन्या च सावित्री भूयात्।

कन्यापक्ष का तृतीय शाखोच्चार—ॐ यथेमां वाचं कल्याणी-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



मावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्याँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चरणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप माऽदो नमतु ॥

कौशल्याविशदालवालजनितः सीतालताऽऽलिङ्गितः
सिक्तः पंक्तिरथेन सोदरमहाशाखाऽभिसंवर्द्धितः।
रक्षस्तीव्रनिदाघपाटनपटुच्छायाश्रितानन्दकृद्
युस्माकं स विभातयेऽस्तु भगवान् श्रीरामकल्पद्रुमः ॥

अद्य अस्यां रात्रावस्मिन् ... कन्या च सावित्री भूयात् ।

**प्रार्थना**

कन्यां कनकसम्पन्नां कनकाभरणैर्युताम्।
दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोकजिगीषया ॥१॥
गौरीं कन्यां शुशीलां तां यथाशक्तिविभूषिताम्।
कन्यार्थिने श्रीवराय तुभ्यं दत्तां समाश्रय ॥२॥
कन्ये ममाग्रतो भूताः कन्या मे देवि पार्श्वयोः।
कन्ये मे पृष्ठतो भूत्वास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयात् ॥३॥
मम वंशकुले जाता पालिता वहुवत्सरम्।
तुभ्यं वर मया दत्ता पुत्रपौत्रविवर्द्धिनी ॥४॥
विश्वम्भरः सर्वभूताः साक्षिण्यः सर्वदेवताः।
इमां कन्यां प्रदास्यामि पितृणां तारणाय च ॥५॥

**पाणिग्रहण**

कन्यादाता कन्या के दाहिने हाथ का अंगूठा पकड़ कर तथा शंख में जल, अक्षत, दूर्वा, पुष्प, चन्दन, जौ, तुलसी, कुशा, स्वर्ण, फल आदि लेकर नीचे लिखा संकल्प करे।

**ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय सच्चिदानन्दरूपिणोऽनिर्वाच्यमायाशक्तिविजम्भिताविद्यात् काल-कर्मस्वभावाविर्भूतमहत्तत्त्वोदिताऽहङ्कारत्रितयोद्भूतवियदादिपञ्च-केन्द्रियदेवतानिर्मितोडुकटाहे चतुर्दशलोकात्मके लोके धरित्र्यां जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बौद्धावतारे** *(अमुक)* **संवत्सरे** *(अमुक)* **अयने**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



*(अमुक)* ऋतौ *(अमुक)* मासे *(अमुक)* पक्षे *(अमुक)* तिथौ *(अमुक)* वासरे *(अमुक)* नक्षत्रे *(अमुक)* राशिस्थिते श्रीसूर्ये *(अमुक)* राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणविषेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ *(अमुक)* गोत्रः सपत्नीकोऽहं *(अमुक)* गोत्रस्य *(अमुक)* प्रवरस्य शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनशाखाऽध्यायिनो *(अमुक)* शर्मणः प्रपौत्राय *(अमुक)* गोत्रस्य *(अमुक)* प्रवरस्य शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनशाखाऽध्यायिनो *(अमुक)* शर्मणः पौत्राय *(अमुक)* गोत्रस्य *(अमुक)* प्रवरस्य शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनशाखाऽध्यायिनो *(अमुक)* शर्मणः पुत्राय आयुष्मते श्रीधररूपिणे कन्यार्थिने *(अमुक)* गोत्राय *(अमुक)* प्रवराय *(अमुक)* शर्मणे वराय *(अमुक)* गोत्रस्य *(अमुक)* प्रवरस्य शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाजसनेयमाध्यन्दिनशाखाऽध्यायिनो *(अमुक)* शर्मणः पुत्रीमायुष्मतीं श्रीरूपिणीं वरार्थिनीं *(अमुक)* नाम्नीं इमां कन्यां सालङ्कारां यथाशक्त्यलङ्कृतां यथाशक्त्युपकल्पितयाक्तकयुतः प्रजापतिदैवत्यां पुराणोक्तशतगुणीकृतज्योतिष्टोमातिरात्रसमफलप्राप्तिपूर्वकं मम समस्तपितॄणां निरतिशयानन्दब्रह्मलोककन्यादानकल्पोक्तफलावाप्तिपूर्वकं च श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये अनेन वरेण अस्यां कन्यायां उत्पादयिष्यमाणसन्तत्यां द्वादशावरान् द्वादशपरान् पुरुषान् आत्मानं च पवित्रीकर्तुम् अस्याः कन्यायाः अनेन वरेण धर्मप्रजया उभयोर्वंशयोर्वृद्ध्यर्थं देवाऽग्निगुरुब्राह्मणसन्निधौ अग्न्यादिसाक्षिकतया सहधर्माचरणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

पश्चात् कन्या के दाहिने हाथ को वर के दाहिने हाथ में दे। वर ॐ स्वस्ति कहकर ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु इस मन्त्र से ग्रहण करे। कन्या का पिता वर की प्रार्थना करे—

गौरीं कन्यामिमां पूज्य यथाशक्ति विभूषिताम्।
गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां विप्र समाश्रय ॥१॥
कन्ये ममाग्रतो भूयाः कन्ये मे देवि पार्श्वयोः।
कन्ये मे पृष्ठतो भूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयाम् ॥२॥
कन्या लक्ष्मीः समाख्याता वरो नारायणः स्मृतः।
तस्मात्कन्याप्रदानेन कृष्णो मे प्रीयतामिति ॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


**त्रैलोक्यनाथ देवेश सर्वभूतदयानिधे।**
**दानेनानेन सुप्रीतः सदा शान्तिं प्रयच्छ मे ॥४॥**
**कन्या मम कुले जाता पालिता वत्सरैः शुभैः।**
**तुभ्यं पूज्य मया दत्ता पुत्रपौत्रविवर्द्धिनी ॥५॥**
**धर्मस्याचरणं सम्यक् क्रियतामनया सह।**
**धर्मे चार्थे च कामे च यत्तं नातिचरे विभो ॥६॥**

**यस्त्वया धर्मश्चरितव्यः सोऽनया सह, धर्मे चार्थे च कामे च नातिचरितव्या त्वयेयम्।** (वर यदि क्षत्रिय हो तो प्रथम श्लोक में शर्मणे की जगह वर्मणे, विप्र की जगह राजन् कहे।)

**ॐ नातिचरामि** – ३ ऐसा वर कहे। कन्या का पिता स्वर्णादि लेकर देशकालादि का उच्चारण कर निम्न संकल्प से वर को दे।

**कृतस्य कन्यादानकर्मणः फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं सुवर्णमग्निदैवतं दक्षिणात्वेन वराय तुभ्यमहं सम्प्रददे।** वर **ॐ स्वस्ति** से ग्रहण करे। **ॐ कोऽदात्कस्माऽ अदात्कामोऽदात्कामायादात्। कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते ॥** –वर बोले और कन्या का पिता एवं बन्धु-बान्धव यथाशक्ति सुवर्ण, चांदी, तांबा, पीतल आदि के पात्र तथा गाय, भैंस, घोड़ा, शैया, नौकर-नौकरानी और भूमि आदि वर-कन्या को दें।

**ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोऽनु पवमानो वा। हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वां मन्मनसां करोतु** (कन्या का नाम) **देवी ॥** इस मन्त्र से वर कन्या का नाम ग्रहण करे। तदनन्तर वेदी के दक्षिण में जल से भरे एवं आम के पत्तों से सुसज्जिम घड़े को कन्धे पर लेकर ब्राह्मण मार्जनपर्यन्त खड़ा रहे। अपने आचारानुसार यहां पुरोहित आदि वर-कन्या का ग्रन्थिबन्धन करें। कन्या का पिता **परस्परं समीक्षेताम्** कहे। वर-कन्या एक-दूसरे को देखें। वर निम्नलिखित मन्त्रों से कन्या को अनुरागपूर्वक देखे।

**ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्नेधि शिवाः पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः। वीरसूर्देवकामाः स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१॥ ॐ सोमः प्रथमो विविदो गन्धर्वो विविदऽ उत्तरः। तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ॥२॥ ॐ सोमोऽददद्गन्धर्वाय गन्धर्वोऽ-**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**ददद्ग्न्ये। रयींश्च पुत्राँश्चादादग्निर्मह्यमथोऽ इमाम् ॥३॥ ॐ सा नः पूषा शिवतमामैरय सा नऽ ऊरूऽ उषती विहर। यस्यामुशन्तः प्रहराम शेषं यस्मामु कामा बहवो निविष्ट्यै ॥४॥**

कन्या का पिता ब्राह्मण-भोजन एवं दीन, अनाथ, नट-नर्तक आदि के भोजन के निमित्त–**सपत्नीकोऽहं कन्यादानकर्मणः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तसाङ्गफलप्राप्तिद्वारा श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये इमां भूयसीं दक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यो नटनर्तकगायकेभ्यश्च विभज्य दास्ये।** ऐसा संकल्प कर भूयसी दान करे। फिर हाथ जोड़ कर स्तुति करे।

**प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।**
**स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥**
**यस्य स्मृत्वा च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।**
**न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥**
**ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णवे नमः।**

## विवाह-होम

वर अपने आगे बधू को कर अग्नि की प्रदक्षिणा करके, अपने दक्षिण में बधू को कर उसके साथ एक ही आसन पर बैठे। तदुपरान्त आचमन-प्राणायामादि कर निम्न संकल्प करे–

*(अमुक)* **शर्माऽहं मत्प्रतिगृहीतवधूद्देश्यकभार्यात्वसिद्धिपूर्वक-धर्मार्थकामसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतये ब्राह्मविधिना पितृदत्ता-मिमां कन्यां विवाहयिष्ये।** पुनः ब्रह्मवरण के निमित्त संकल्प करे–

**तत्पूर्वाङ्गतया विवाहहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणादि ब्रह्मकर्म कर्तुं** *(अमुक)* **शर्माऽणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।** कहकर ब्रह्मा को दे। ब्रह्मा **ॐ ब्रतोऽस्मि** कहे। पश्चात् वर प्रार्थना करे–

**यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरः प्रभुः।**
**तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥**

## कुशकण्डिका

अग्नि के दक्षिण में ब्रह्मा के लिये कुशा का आसन रखें। अग्नि के उत्तर में प्रणीता के लिये दो कुशाओं का आसन रखें। अग्नि की प्रदक्षिणा कर, रखे हुए आसन पर ब्रह्मा को बैठाएँ। ब्रह्मा के अभाव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



में ५० कुशाओं पर मौली बांध कर ब्रह्मा की जगह रखें। हाथ जोड़ कर **यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं ब्रह्माभव** कहें। ब्रह्मा **भवामि** कहे। ब्रह्मा की आज्ञा लेकर प्रणीतापात्र को अपने आगे रखें। उसे जल से भर कर कुशापत्रों से ढंक दें। फिर प्रणीता को पहले आसन पर रख कर ब्रह्मा के मुख को देख कर दूसरे आसन पर रखें। ६४ कुशाएँ लें। उसमें से १६ कुशा अग्निकोण से ईशानकोण तक 'उत्तराग्र' बिछाएँ। १६ कुशा अग्निकुण्ड से ब्रह्मा के आसन तक 'पूर्वाग्र' बिछाएँ। १६ कुशा नैऋत्य से वायव्यकोण तक 'उत्तराग्र' बिछाएँ। १६ कुशा अग्निकुण्ड से प्रणीतापात्र तक 'पूर्वाग्र' बिछाएँ। अग्नि के उत्तर में, पश्चिम से पूर्व की ओर आगे लिखी वस्तुएँ क्रमशः रखें। पवित्री के लिये तीन कुशाएँ। पुनः दो कुशाएँ। प्रोक्षणीपात्र। घृत पात्र। चावल पकाने का पात्र। सम्मार्जन के लिये ५ कुशाएँ। उपयमन के लिये ७ कुशाएँ। ३ समिधा। श्रुचि। श्रुवा। घृत। चावल। पूर्णपात्र। हवन के लिये पलाश और शमी मिश्रित लावा। पत्थर। सूप। यह सब क्रमशः रखें। फिर पवित्री बनाने के लिये आसादन में रखी हुई दो कुशाओं को ले उस पर तीन कुशाओं को रखें। दो कुशाओं के मूल को तीन कुशाओं के ऊपर से घुमाकर तीन कुशाओं को तोड़ कर त्याग दें। बची हुई दो कुशाओं की पवित्री बनाएँ। पवित्री को दाहिने हाथ में ले कर प्रणीता के जल को उससे प्रोक्षणीपात्र में छोड़ें। अनामिका एवं अंगुष्ठ से पवित्री को पकड़ कर उससे प्रोक्षणी के जल को ३ बार ऊपर उछालें। प्रणीतोदक से प्रोक्षणीपात्र का प्रोक्षण करें (अर्थात् छिड़कें)। प्रोक्षणी के जल से आसादन किये हुए पात्रों एवं पदार्थों का सेचन करें। प्रणीता एवं अग्नि के मध्य में प्रोक्षणी पात्र को रख दें। घृतपात्र में घी भरें। चावल पकाने के पात्र में प्रणीता का जल छोड़ कर जल एवं चावल डाल दें। ब्रह्मा अग्नि में घृतपात्र रखें। चावल को घृतपात्र के उत्तर में स्वयं आचार्य रखे। १ समिधा जला कर चावल एवं घृतपात्र के चारों ओर प्रदक्षिणाक्रम से घुमाकर अग्नि में डालकर प्रदक्षिणाक्रम से उलटा हाथ घुमाएँ। चावल के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


आधा पक जाने पर श्रुचि एवं श्रुवा को पकावें। ५ संमार्जक-कुशा लेकर श्रुचि एवं श्रुवा के नीचे से ऊपर क्रम से घुमाएँ। प्रणीता के जल से इसका प्रोक्षण करें। मार्जनकुशा को अग्नि में छोड़ दें। श्रुवा एवं श्रुचि को तपा कर अग्नि के दक्षिण में रख दें। घृत को अग्नि से उतारें। चावल पूर्व से उसे घुमाकर प्रणीता के पश्चिम में रख दें। चावल को उतार कर उसे घृत के पूर्व से घुमाकर उसके उत्तर में रख दें। अनामिका एवं अंगूठे से पवित्री पकड़ कर उससे घृत को उछालें। तदनन्तर अग्नि के पश्चिम में घृत रख कर, उपयमन संज्ञक ७ कुशाएँ लें। ३ समिधाएँ घृत में डुबोकर, खड़े होकर मौन हो प्रजापति का ध्यान कर अग्नि में छोड़ें। फिर बैठ कर पवित्री हाथ में ले प्रोक्षणीपात्र का जल ईशानकोण से प्रदक्षिणक्रम में घुमाते हुए जल छिड़ककर इतरथावृत्ति करें (अर्थात् हाथ उलटा घुमाएँ)। प्रणीता एवं पवित्री को रख दें। विधिवत् अग्नि का पूजन कर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

**ॐ भूर्भुवः स्वः थोकजनाम्ने अग्नये नमः।**
**अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।**
**सुवर्णवर्णममलमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥**
**सर्वतः पाणिपादश्च सवितोऽक्षिसिरोमुखः।**
**विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु ॥**

**ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयोऽ अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽ अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँऽ२ आ विवेश ॥**

उपर्युक्त मन्त्र से ब्रह्मा अग्नि का पूजन करे। पुनः आचमन कर, मौन हो दाहिने हाथ से स्रुवा को मूल और मध्यभाग के मध्य से पकड़ कर. नीचे लिखे मन्त्रों का मन में उच्चारण कर, हर मन्त्र के अन्त में स्रुवा में स्थित घी थोड़ा-थोड़ा प्रोक्षणीपात्र में डालें।

### आज्य होम

**ॐ प्रजापतये स्वाहा** *इदं प्रजापतये न मम।* **ॐ इन्द्राय स्वाहा** *इदं इन्द्राय न मम।* **ॐ अग्नये स्वाहा** *इदं अग्नये न मम।* **ॐ सोमाय स्वाहा** *इदमग्नये न मम।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


### महाव्याहृति होम

**ॐ भूः स्वाहा** *इदं अग्नये न मम।* **ॐ भुवः स्वाहा** *इदं वायवे न मम।* **ॐ स्वः स्वाहा** *इदं सूर्याय न मम।*

### प्रायश्चित्त होम

**ॐ त्वं नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽ अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥** *इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।*

**ॐ स त्वं नोऽ अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽ अस्याऽ उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणᳬ रराणो वीहि मृडीकᳬ सुहवो नऽ एधि स्वाहा ॥** *इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।*

**ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयाऽ असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजᳬ स्वाहा ॥** *इदमग्नये अयसे न०।*

**ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽ अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥** *इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०।*

**ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमᳬ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽ अदितये स्याम स्वाहा ॥**

*इदं वरुणायादित्यायादितये न मम॥*

### राष्ट्रभृद् होम

अन्वारब्ध के बिना आहुति डालें।

**ॐ ऋतषाड् ऋतधामाऽग्निर्गन्धर्वः स नऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्।** *इदमृतासाहे ऋतधाम्नेऽग्नये गन्धर्वाय न मम।*

**ॐ ऋतषाड् ऋतधामाऽग्निर्गन्धर्वः तस्योषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा।** *इदमौषधिभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यश्च न मम।*

**ॐ सᳬहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः स नऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्।** *इदᳬ सᳬ हिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय न०।*

**ॐ सᳬ हितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरसऽ आयुषो नाम ताभ्यः स्वाहा।** *इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्यऽ आयुभ्यो न मम।*

**ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स नऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


**पातु तस्मै स्वाहा वाट्।** *इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय.।*

**ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा।** *इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरसो भेकुरिभ्यो न मम।*

**ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः स नऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्।** *इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गन्धर्वाय न मम।*

**ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वस्तस्यापोऽ अप्सरसऽ ऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा।** *इदमद्भ्योऽप्सरोभ्यऽ ऊर्ग्भ्यो न मम।*

**ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स नऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्।** *इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय न मम।*

**ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणाऽप्सरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा।** *इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरसोभ्यस्तावाभ्यो न मम।*

**ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स नऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्।** *इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय॰।*

**ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वस्तस्यऽ ऋक्सामान्यप्सरसऽ एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा।** *इदमृक्सामेभ्योऽप्सरोभ्यऽ एष्टिभ्यो॰।*

### जया होम

**ॐ चित्तं च स्वाहा** *इदं चित्ताय न मम।* **ॐ चित्तिश्च स्वाहा** *इदं चित्यै॰।* **ॐ आकूतं च स्वाहा** *इदमाकूताय॰।* **ॐ आकूतिश्च स्वाहा** *इदमाकूत्यै॰।* **ॐ विज्ञातं च स्वाहा** *इदं विज्ञाताय॰।* **ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा** *इदं विज्ञात्यै॰।* **ॐ मनश्च स्वाहा** *इदं मनसे॰।* **ॐ शक्वरीश्च स्वाहा** *इदं शक्वरीभ्यो॰।* **ॐ दर्शश्च स्वाहा** *इदं दर्शाय॰।* **ॐ पौर्णमासं च स्वाहा** *इदं पौर्णमासाय॰।* **ॐ बृहच्च स्वाहा** *इदं बृहते॰।* **ॐ रथन्तरं च स्वाहा** *इदं रथन्तराय॰।* **ॐ प्रजापतिर्जयानिद्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतनाजयेषु। तस्मै विशः समनमन्त सर्वाः सऽ उग्रः सऽ इ हव्यो बभूव स्वाहा।** *इदं प्रजापतये न मम।*

### अभ्यातान होम

**ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा।** *इदमग्ने भूतानामधिपतये न मम।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा। *इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये न मम।*

ॐ यमः पृथिव्याऽ अधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा। *इदं यमाय पृथिव्याऽ अधिपतये न मम।*

ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा। *इदं वायवे अन्तरिक्षस्याधिपतये न मम।*

ॐ सूर्यो दिवोऽधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा। *इदं सूर्याय दिवोऽधिपतये न मम।*

ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा। *इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये न मम।*

ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा। *इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये न मम।*

ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा। *इदं मित्राय सत्यानामधिपतये न मम।*

ॐ वरुणोऽपाधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा। *इदं वरुणायापामधिपतये न मम।*

ॐ समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा। *इदं समुद्राय स्रोत्यानामधिपतये न मम।*

ॐ अन्नꣳ साम्राज्यानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


**स्वाहा।** *इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये न मम।*

**ॐ सोमऽ ओषधीनामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा।** *इदं सोमायौषधीनामधिपतये न मम।*

**ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा।** *इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये न मम।*

**ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा।**(ईशान में अन्य पात्र रख कर उसमें छोड़ें) *इदं रुद्राय पशूनामधिपतये न मम।*

**ॐ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा।** *इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये न मम।*

**ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा।** *इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये न मम।*

**ॐ मरुतो गणानामधिपतयस्ते माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा।** *इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो न मम।*

**ॐ पितरः पितामहाः परेऽवरे ततामहाः। इह माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा।** *इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्तता-महेभ्यश्च न मम।*

(प्रणीतोदक स्पर्श करें)

**पंचाहुति**

**ॐ अग्निरैतु प्रथमो देवतानाꣳ सोऽस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्यु-पाशात्। तदयꣳ राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेयꣳ स्त्री पौत्रमघं न रोदात् स्वाहा।** *इदमग्नये न मम।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


**ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः। अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभिविबुध्यतामियꣳ स्वाहा।** *इदमग्नये न मम।*

**ॐ स्वस्ति नोऽ अग्ने दिवऽ आ पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथा यजत्र। यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रꣳ स्वाहा।** *इदमग्नये न मम।*

**ॐ सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्नऽ एहि ज्योतिष्मद्वेह्यजरन्नऽ आयुः। अपैतु मृत्युरमृतं नऽ आगाद्वैवस्वतो नोऽ अभयं कृणोतु स्वाहा।** *इदं वैवस्वताय न मम।*

अगली आहुति वर आंखों को वस्त्र से ढक कर डाले। इसे वर एवं कन्या देखें न इस लिये अग्नि और उनके बीच पर्दा कर दें।

**ॐ परं मृत्योऽ अनुपरेहि पन्थां यस्तेऽ अन्यऽ इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳ रीरिषो मोत वीरान्त्स्वाहा।** *इदं मृत्यवे न मम।*

वर प्रणीतोदकस्पर्श करे। पर्दा हटा दें।

### लाजा होम

कन्या का भाई शमीपत्र एवं घृत से मिश्रित (धान का) लावा लेकर नये सूप में ४ भागों में विभक्त कर प्रत्येक भाग को अपनी अंजली से कन्या की अंजली में डाले। कन्या लाजा को लेकर अगले मन्त्रों से अग्नि में कायतीर्थ से (दोनों हाथों के बीच से) तीन बार हवन करे।

**ॐ अर्यमणं देवं कन्याऽ अग्निमयक्षत। स नोऽ अर्यमा देवः प्रेतामुञ्चन्तु मा पतेः स्वाहा।** *इदमर्यम्णे न मम।*

**ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा।** *इदमग्नये न मम।*

**ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियꣳ स्वाहा।** *इदमग्नये न मम।*

बचा हुआ लावा अग्नि में डाल दे। शेष तीन भाग सूप में रहने दे। सूप को रख दे। वर बधू का दाहिना हाथ अंगूठे के सहित पकड़ कर नीचे लिखे मन्त्र पढ़े।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया .पत्या जरदष्टिर्यथाऽऽसः। भगोऽ अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वाऽदुर्गार्हपत्याय देवाः।। ॐ अमोऽहस्मि सा त्वꣳ सा त्वमस्यमोऽ अहम्। सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम्।। ॐ तावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै। प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान्विन्द्यावहै बहून्।। ते सन्तु जरदष्टयः सं प्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम्।।**

वर कन्या के साथ अग्नि के उत्तर में रखे हुए पत्थर के पास उसी स्थिति में जाए और अगले मन्त्र से कन्या के दक्षिण पैर को अपने दाहिने हाथ से पत्थर पर रखे। **ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्वꣳ स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः।।**

फिर पत्थर पर पैर रख वर आगे लिखे मन्त्र से गाथा-गान करे।

**ॐ सरस्वती प्रेदमव सुभगो वाजिनीवति। यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः। यस्यां भूतꣳ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत्। तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः।।**

तदनन्तर वर कन्या को आगे करके ब्रह्मा और अग्नि के मध्य से अग्नि की प्रदक्षिणा करे। **ॐ तुभ्यमग्रे पर्यवहन्त्सूर्या वहतु ना सह। पुनः पतिभ्यो जायां दाऽग्ने प्रजया सह।।**

इस तरह लाजाहोम, पाणिग्रहण, शिलारोहण, गाथागान, एवं परिक्रमा दो बार और करें। इस प्रकार कुल तीन बार करना चाहिये। तीसरी परिक्रमा के बाद कन्या का भाई सूप के कोने से सारा बचा हुआ लावा कन्या की अंजली में दे। कन्या **ॐ भगाय स्वाहा** इस मन्त्र से आहुती करे। फिर वर आगे और कन्या पीछे हो चुपचाप अग्नि की परिक्रमा करें। (चौथी परिक्रमा में वर-बधू पहले की तीन परिक्रमाओं की तरह ब्रह्मा और अग्नि के मध्य से न जाएँ अपितु ब्रह्मा आदि सब की परिक्रमा करें।) दोनो अपने स्थान पर आकर बैठें। वर मन में प्रजापती का ध्यान कर **ॐ प्रजापतये नमः,** *इदं प्रजापतये न मम।* इस मन्त्र से आहुती दे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## सप्तपदी

अग्नि के उत्तर में उत्तरोत्तर सात स्थानों में चतुष्कोण मण्डल बना कर आगे लिखे मन्त्रों से वर प्रत्येक मण्डल पर कन्या का पैर रखवाए। कन्या पहले दाहिना पैर रखे फिर बांया रखें।

**ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वा नयतु।** *प्रथम*

**ॐ द्वेऽ ऊर्ज्जे विष्णुस्त्वा नयतु।** *द्वितीय*

**ॐ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु।** *त्रितीय*

**ॐ चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु।** *चतुर्थ*

**ॐ पञ्चपशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु।** *पञ्चम*

**ॐ षड्ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु।** *षष्ट*

**ॐ सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता विष्णुस्त्वा नयतु।** *सप्तम*

दोनो यथास्थान बैठ जाएँ। निष्क्रमण के समय से जो घड़ा ब्राह्मण के कन्धे पर रखा है उसमें से जल ले कर दूर्वा या आम के पत्ते से आगे लिखे प्रथम मन्त्र से बधू के मस्तक पर शेष मंत्रों से स्वयं पर छिड़के।

**ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्॥ ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नऽ ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ ॐ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥ ॐ तस्माऽ अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥**

यदि दिन में विवाह होता हो तो वर कन्या से **सूर्यमुदीक्षस्व** कहे। कन्या आगे लिखे मन्त्र से सूर्य को देखे। **ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं पब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥**

वर कन्या के दाहिने कन्धे पर अपना दाहिना हाथ रखे।

**ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं तेऽ अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्॥**

आगे लिखे मन्त्र से वर कन्या को देखे। **ॐ सुमङ्गलीरियं**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**वधूरिमाꣳ समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्वा यथाऽस्तं विपरेत न ॥**

शिष्टाचार से वर के वामभाग में कन्या को बैठाएँ। उसे सिन्दूर आदि भी दें[1]।

तदनन्तर वधू के लिये आगे लिखे श्लोक पढ़ें।

**तीर्थव्रतोद्यापनदानयज्ञान् मया सह त्वं यदि कान्त कुर्याः।**
**वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत वाक्यं प्रथमं कुमारी ॥१**
**हव्यप्रदानैरमरान् पितॄंश्च कव्यप्रदानैर्यदि पूजयेथाः।**
**वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत कन्या वचनं द्वितीयम् ॥२**
**कुटुम्बरक्षाभरणे यदि त्वं कुर्याः पशूनां परिपालनं च।**
**वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत कन्या वचनं तृतीयम् ॥३**
**आयव्ययौ धान्यधनादिकानां दृष्ट्वा गृहे चेदुचितं निदध्याः।**
**वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत कन्या वचनं चतुर्थम् ॥४**
**देवालयारामतडागकूपवापीर्विदिध्या अथ पूजयेथाः।**
**वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत सा पञ्चमवाक्यमेतत् ॥५**
**देशान्तरे वा स्वपुरान्तरे वा यदि प्रकुर्याः क्रयविक्रयौ त्वम्।**
**वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत षष्ठं वचनं कुमारी ॥६**
**न सेवनीया परपूर्विका स्यात् काले त्वया भाविनि भामिनीति।**
**वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं भाषेत सा सप्तमवाक्यमेतत् ॥७**

वर के लिये आगे लिखे श्लोक पढ़ें--

**उद्याने सोमपाने च पितुर्गृहगमेऽपि च।**
**मदाज्ञां लङ्घयित्वा तु न गच्छेद्यदि सुन्दरी ॥**
**मदीयचित्तानुगतं च चित्तं सदा मदाज्ञा परिपालनं च।**
**पतिव्रता धर्मपरायणत्वं कुर्यास्तदा सर्वमिदं प्रपन्नम् ॥**

आगे लिखे मन्त्र से अग्नि के पूर्व या उत्तर में पहले से ही बने गुप्तगृह में कोई ब्राह्मण या वर वधू को उठाकर उस में बैठाए। ॐ **इह गावो निषीदन्विहाश्वाऽ इह पूरुषाः। इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञऽ इह पूषा निषीदतु ॥** वधू पुनः वेदी में आ जाए।

---

१. मण्डपं मधुपर्कं च लाजाहोमस्तथैव च।
यावत् कन्या न वामाङ्गे तावत् कन्या कुमारिका॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## स्विष्टकृद् होम

**ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा** *इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।* इस मन्त्र से हवन कर के प्रोक्षणीपात्र वाले घृत से आचमन कर और पवित्री से मस्तक का मार्जन कर पवित्री को **स्वाहा** कहकर अग्नि में डाल दें। फिर अग्नि के पश्चिम में प्रणीता का त्याग करें। ब्रह्मा की ग्रन्थि खोल दें (इसके बाद मौन होकर बहिर्होम करें)। आगे लिखे संकल्प से ब्रह्मा को पूर्णपात्र दान करें।

*(अमुक)* **शर्मा सवधूकोऽहं विवाहहोमकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं साद्गुण्यार्थं च इदं पूर्णपात्रं सद्रव्यं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।**

वर आचार्य को गौ, अन्न, वस्त्रादि दे। इसके अभाव में द्रव्य लेकर आगे लिखे संकल्प से दान करे–

**सवधूकोऽहं विवाहकर्मणः साद्गुण्यार्थं सम्पूर्णफलप्राप्तये च गोप्रत्याम्नायीभूतद्रव्यं वरत्वेन आचार्याय तुभ्यं सम्प्रददे ।।**

यदि रात्रि में विवाह होता हो तो वर वधू से **ध्रुवमुदीक्षस्व** कहे। वधू आगे लिखे मन्त्र से ध्रुव को देखे। **ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्ये मयि मह्यं त्वाऽऽदात्। बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती सञ्जीव शरदः शतमिति ।।** वधू (न दिखने पर भी) **पश्यामि** कहे।

**ॐ अद्येह सवधूकोऽहं विवाहकर्मणः साद्गुण्यार्थमिमां भूयसीं दक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नटनर्तकगायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च विभज्य दास्ये ।** इस संकल्प से भूयसी दान करें।

ब्राह्मण निम्न मन्त्रों से वर एवं वधू को हवन की भस्म लगाए।

**ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः**–मस्तक पर,

**ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्**–गले में,

**ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्**–दक्षिण बाहु के मूल में,

**ॐ तन्नोऽ अस्तु त्र्यायुषम्**–हृदय में।

(वधू के लिये **तन्नो** की जगह **तत्ते** कहें)।

*।। इति विवाह होम प्रयोगः।।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



बन्धु-बान्धवों एवं वधू के साथ वर अपने घर जाए। वधू का पिता सभी आवाहित देवताओं का विसर्जन कर कर्मेश्वर को अर्पण करे। (वर एवं वधू तीन रात तक नमक आदि न खाएँ। शय्या पर न सोएँ और न ही एक साथ रहें।)

## चतुर्थीकर्म

विवाह के चौथे दिन वर अरुणोदय काल में उठकर स्नानादि नित्यक्रिया से निवृत्त हो आसन पर बैठे। अपने दक्षिण में बधू को बैठाकर आचमन-प्राणायामादि कर संकल्प करे–**अमुकोऽहं ममास्य वध्वाः सोमगन्धर्वाऽग्न्युपभुक्तत्वदोषपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विवाहाङ्गं चतुर्थीहोमं करिष्ये।**

वर गणपत्यादि पूजन करे। होमवेदी बना कर वर की अनुमति से (वरपक्षीय) ब्राह्मण कन्या के हाथ से विधिपूर्वक वेदी बनवा कर, पञ्चभूसंस्कार, अग्निस्थापन आदि करे। वर ब्रह्मा का वरण करे। चन्दन, अक्षत, पुष्प, द्रव्य आदि लेकर–**अद्येह** *(अमुक)* **शर्माऽहं करिष्यमाणचतुर्थीकर्माङ्गहोमकर्मणि ब्रह्मकर्म कर्तुमेभिर्वरणद्रव्यैस्वामहं वृणे।** ऐसा संकल्प कर ब्रह्मा को दे। फिर विधिवत् कुशकण्डिका सहित अग्निस्थापन करें।

**ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिनाम्ने अग्नये नमः। अग्निं प्रज्वलितं वन्दे...। चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽ अस्य पादाः...।** इत्यादि (पृ० १५७) से पूर्वोक्त् विधि से पूजन करें। पश्चात् कुशा से मार्जन कर दाहिने हाथ से श्रुवा पकड़ कर आगे लिखे मन्त्रों को मन में उच्चारण कर हर मन्त्र के अन्त में श्रुवा में स्थित घृत थोड़ा-थोड़ा प्रोक्षणीपात्र में छोड़ें। **ॐ प्रजापतये स्वाहा** *इदं प्रजापतये न मम।* **ॐ इन्द्राय स्वाहा** *इदमिन्द्राय न मम।* **ॐ अग्नये स्वाहा** *इदमग्नये न मम।* **ॐ सोमाय स्वाहा** *इदं सोमाय न मम।* तदनन्तर (आज्य से) प्रधान होम करें।

**ॐ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽ उपधावामि याऽस्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा॥** *इदमग्नये न मम।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**ॐ वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽ उपधावामि याऽस्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा ॥** *इदं वायवे न मम।*

**ॐ सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽ उपधावामि याऽस्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा ॥** *इदं सूर्याय न मम।*

**ॐ चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽ उपधावामि याऽस्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा ॥** *इदं सोमाय न मम।*

**ॐ गन्धर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽ उपधावामि याऽस्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा ॥** *इदं गन्धर्वाय न मम।*

(स्थालीपाक से आहुति दें) **ॐ प्रजापतये स्वाहा** *इदं प्रजापतये न मम।* **ॐ अग्नसे स्विष्टकृते स्वाहा** *इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।* (आज्य से) **ॐ भूः स्वाहा** *इदमग्नये न मम।* **ॐ भुवः स्वाहा** *इदं वायवे न मम।* **ॐ स्वः स्वाहा** *इदं सूर्याय न मम।* **ॐ त्वन्नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽ अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥** *इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।*

**ॐ स त्वन्नोऽ अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽ अस्याऽ उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणᳬ रराणो व्वीहि मृडीकᳬ सुहवो नऽ एधि स्वाहा ॥** *इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।*

**ॐ अशश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽ असि। अया ना यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजᳬ स्वाहा ॥** *इदमग्नये अयसे न मम।*

**ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽ अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥** *इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



**ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽ अदितये स्याम स्वाहा ॥**

*इदं वरुणायादित्यायादितये न मम।*

इसके बाद वर संस्रवप्राशन करे (प्रोक्षणीपात्र के घृत को अंगुष्ठ और अनामिका से सूँघे) फिर आचमन करे। अग्नि में पवित्री का त्याग करे। संकल्प कर ब्रह्मा को पूर्णपात्र का दान करे–**सवधूकोऽहं कृताकृतस्य चतुर्थीकर्मांग होमकर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं इदं पूर्णपात्रं सद्रव्यं ब्रह्मणे तुभ्यं सम्प्रददे।**

अग्नि के पश्चिम में प्रणीता-विमोक करे। पूर्वस्थापित ताम्र-घट से जल लेकर वर निम्न मन्त्र से वधू के सिर पर छिड़के।

**ॐ या ते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दता तनूर्जारघ्नीं ततऽ एनां करोमि सा जीर्य त्वं मया सह श्री** (वधू का नाम लेकर) **देवी ॥**

वर-वधू हविष्यान्न से प्राशन करें–**ॐ प्राणैस्ते प्राणान्सन्दधाम्य-स्थिभिरस्थीनि माꣳसैस्ते माꣳसानि त्वचाते त्वचम् ॥**

वधू के दाहिने कन्धे पर वर हाथ रखे–**ॐ यत्ते सुशीम हृदयं दिवि चन्द्रमासि स्थितम्। वेदाहं तन्मा तद्विदद्यात्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतमिति ॥**

**कंकण मोचन**

**कङ्कणं मोचयाम्यद्य रक्षोघ्नं रक्षणं मम।**
**मयिरक्षां स्थिरां कृत्वा स्वस्थानं गच्छ कङ्कण ॥**

कंकण मोक्ष करें। आचार्य को दक्षिणा देकर ब्राह्मणों को भोजन का संकल्प कर भूयसीदान करें।

*॥ इति चतुर्थीकर्मप्रयोगः॥*

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेवतद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



## संक्षिप्त व्रत तिथि–निर्णय

व्रतादि में साधारणतः दो प्रकार की तिथि मानी जाती है–*शुद्धा* तथा *विद्धा*। इन दोनो प्रकार में जो तिथि सूर्योदय से प्रथम आरम्भ होकर दूसरे सूर्योदय तक अथवा व्रतनियतकालपर्यन्त हो, वह शुद्धा है। उसमें कोई निर्णय की आवश्यकता नहीं। जो तिथि आदि अथवा अन्त में अर्थात् तिथि के आरंभ या समाप्ति में दूसरी तिथि से संस्पृष्ट हो, वह विद्धा कहलाती है और उसके निर्णय की आवश्यकता होती है। यह *तिथिवेध* कहलाता है। यह वेध प्रातः सूर्योदय से पहले और सायंकाल में ३ मुहूर्त या २ मुहूर्त का माना जाता है। मुहूर्त २ घटिका का नाम है। अन्य सभी कार्यों में स्व-स्व-कालव्यापिनी तिथि का ग्रहण करना चाहिये। एकाहारी व्रत में मध्याह्न-व्यापिनी तिथि ग्रहण करनी चाहिये। दो दिन हो अथवा तिथिक्षय हो तो भी पूर्वदिन ही लेना चाहिये। रात्रिव्रत में प्रदोषकाल–व्यापिनी तिथी ग्रहण की जाती है (सूर्यास्त के बाद ३ मुहूर्त प्रदोषकाल कहलाता है)। दो दिन प्रदोष-व्यापिनी हो तो परतिथि ग्रहण करनी चाहिये। यह अतिसंक्षिप्त निर्णय है। इस सम्बन्ध में कुछ विशेष ज्ञातव्य है। यथा–

**प्रतिपदा** शुक्लपक्ष की मध्याह्नोत्तरकालपर्यन्त की एवं कृष्णपक्ष की पूर्वाह्न-व्यापिनी श्रेष्ठ है।

**द्वितीया** *हेमाद्रि* के मत से कृष्णपक्ष की पूर्वाह्नव्यापिनी और शुक्ल–पक्ष की पराह्नव्यापिनी श्रेष्ठ है। *माधवाचार्य* के मत से परा ही श्रेष्ठ है।

**तृतीया** दोनो ही पक्षों में मध्याह्नोत्तरकालपर्यन्त की, दो दिन हो तो पर दिन की एवं *गौरी व्रत* में परा श्रेष्ठ है।

**चतुर्थी** गणेशव्रत में *तृतीया विद्धा* पूर्वा अर्थात् चन्द्रोदयकाल–व्यापिनी, दो दिन हो तो पूर्वा एवं अन्य व्रतों में परा श्रेष्ठ है।

**पञ्चमी** *माधव* के मत से दोनो पक्षों की पूर्वा और *हेमाद्रि* के मत से कृष्णपक्ष में पूर्वा तथा शुक्लपक्ष में उत्तरा श्रेष्ठ है। *निर्णयसिन्धु* के मत से *नागपञ्चमी* परा ही श्रेष्ठ है।

**षष्ठी** *स्कन्दषष्ठी* व्रत में पूर्वा, अन्य व्रतों में परा, षष्ठी व्रत में अर्धकाल व्यापिनी और दोनों दिन अर्धकालव्यापिनी के अभाव में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


पूर्वा अन्यथा परा श्रेष्ठ है।

**सप्तमी** सदा पूर्वाह्नव्यापिनी ही श्रेष्ठ है।

**अष्टमी** (कृष्णजन्माष्टमी-निर्णय आगे देखें) कृष्णपक्ष की पूर्वा, शुक्ल-पक्ष की उत्तरा श्रेष्ठ है। देवी व्रत में कृष्णपक्ष की परा ही श्रेष्ठ है।

**नवमी** दोनो पक्षों में पूर्वा ही ग्राह्य है।

**दशमी** *हेमाद्रि* के मत से परा, *माधव* के मत से कृष्णा-पूर्वा और उत्तरा-शुक्ला एवं *कमलाकर भट्ट* के मत से पूर्वा ग्राह्य है। सूर्योदयी श्रेष्ठ है।

**एकादशी** एकादशीव्रत-निर्णय पृ० १८८ पर देखें।

**द्वादशी** दोनो पक्षों में पूर्वा ही ग्राह्य है।

**त्रयोदशी** शुक्लपक्ष की पूर्वा तथा कृष्णपक्ष की परा, उपवासरूपव्रत में दोनों पक्षों की परा तथा शिवरात्रिव्रत में रात्रिव्यापिनी ही ग्राह्य है।

**चतुर्दशी** कृष्णपक्ष में पूर्वा, शुक्लपक्ष में परा, उपवास व्रत में दोनो पक्षों की परा तथा शिवरात्रि में पूर्वा ही ग्राह्य है।

**पूर्णिमा तथा अमावस्या** व्रत दान तथा पितृकार्य में कार्यकाल-व्यापिनी अथवा अपराह्नव्यापिनी, दो दिन अपराह्नव्यापिनी हो तो परदिन की और क्षयतिथि पूर्वदिन की ग्राह्य है।

## कुछ मुख्य व्रतों का संक्षिप्त-निर्णय

### एकादशी-निर्णय

दशम्यर्कोदये चेत् स्यात् स्मार्तानां वेध इष्यते। वैष्णवानां तु पूर्वं स्यात् घटिकानां चतुष्टये।।
वल्लभाः पञ्चनाडीषु केचिद्यामद्वयं जगुः। पूर्वं सूर्योदयाद्वेधं, निर्णये वैष्णवैः समाः।।
यो द्वादशी विरामाहः स्मार्तैस्तत्प्रथमं दिनम्। उपोष्यमितिहेमाद्रिर्माधवस्य मतं शृणु।।
द्वादश्यां बुद्धिगामिन्यां अविद्धैकादशी यदि। लभ्यते सा व्रते ग्राह्याऽन्यत्र हेमाद्रिनिर्णयः।।
केचिदाहुर्विष्णुभक्तैः स्मार्तैः कार्यं व्रचद्वयम्। विद्धायां वाविवृद्धायां एकादश्यां परेऽह्ण च।।
समाप्येत परेऽह्ण्यस्मिन् द्वादशी यदि नान्यथा। माधवीय-व्रतस्यैव प्रचारो व्रतनिर्णये।।
एकादशी द्वादशी व वृद्धिगा चेत् तदा व्रते। शुद्धात्येकादशी त्याज्या सदा विद्धापि वैष्णवैः।।
एकादशव्रतं कार्यं परेह्णि त्याज्यवासरान्। असूयानुगमे नात्र कार्या विद्वद्भिरर्थये।।

### विद्धा और शुद्धा एकादशी

१. एकादशी के दिन सूर्योदयकाल में दशमी हो तो स्मार्त सम्प्रदाय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


के मत से *विद्धा* है।

२. सूर्योदय से ४ घड़ी पहले अरुणोदय काल होता है, उसमें दशमी हो तो वैष्णव सम्प्रदाय के मत से *विद्धा* है।

३. सूर्योदय से पूर्व ५ घड़ी, किसी मत से अर्द्धरात्रि के बाद तक दशमी हो तो वल्लभसम्प्रदाय के मत से *विद्धा* होती है। *विद्धा* एकादशी का त्याग और *शुद्धा* का ग्रहण करना चाहिये।

४. द्वादशी जिस दिन समाप्त होती हो उसके प्रथम दिन व्रत करना चाहिये। यह प्रभाकर का मत है।

५. द्वादशी यदि दूसरे दिन भी (प्रथम सूर्योदय से द्वितीय सूर्योदय तक एक दिन) हो तो सूर्योदयी वेधरहित एकादशी को व्रत करना चाहिये।

६. कुछ आचार्यों के मत से सूर्योदय वेधवाली एकादशी के दिन तथा दूसरे दिन भी, अथवा दो एकादशी हों तो दूसरी एकादशी और द्वादशी दोनो दिन व्रत कर सकते हैं। परन्तु यह निर्णय वहीं लागू होता है जहां दूसरे दिन द्वादशी समाप्त होती है। परन्तु आजकल *माधवीयमत* की ही प्रधानता देखी जाती है।

७. एकादशी या द्वादशी वृद्धि हो तो *वैष्णवमत* के अनुसार एकादशी छोड़ कर दूसरे दिन व्रत करना चाहिये।

## श्रावणी–निर्णय

**श्रावण शुक्ल पूर्णिमा** ऋग्वेदियों के लिये श्रवण और हस्त नक्षत्र तथा पञ्चमी तिथि उत्तम मानी गई है परन्तु प्रधानता श्रवण नक्षत्र की ही है। यदि पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र न हो तो पञ्चमी या हस्त नक्षत्र लेना चाहिये। यजुर्वेदियों के लिये पूर्णिमा श्रेष्ठ है। सामवेदियों की श्रावणी का समय भाद्रपद शुक्लपक्ष का हस्त नक्षत्र उत्तम माना गया है। ऐसा धर्मसिन्धु के मत का सारांश है। तथापि आजकल श्रावण पूर्णिमा को ही उपाकर्म करते हैं। इसमें श्रवणपूजा तथा रक्षाबन्धन भाद्रपदरहित पूर्णिमा में ही किया जाता है। सत्यनारायणव्रत भी प्रायः इसी दिन होता है। बलदेव जयन्ती का उत्सव प्रायः प्रदोष-काल में किया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


## श्रीकृष्णजन्माष्टमी

१. अर्धरात्रि में अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र हो तो सर्वोत्तम है।

२. यदि रोहिणी नक्षत्र न हो तो निशीथ-व्यापिनी अष्टमी को ही श्रीकृष्ण- जन्मोत्सव मनाना चाहिये।

३. धर्मसिन्धुकार के मत में उदयव्यापिनी अष्टमी को भी ग्रहण किया है।

४. रोहिणी नक्षत्रयुक्ता अष्टमी अतिश्रेष्ठा तथा जयन्ती नामक होती है। मिले जहां तक अर्धरात्रिव्यापिनी ही लेनी चाहिये। सामान्यतया इसके भी चार भेद हैं—१.सप्तमी को अर्धरात्रि में अष्टमी का होना, २. अष्टमी को अर्धरात्रि में अष्टमी का होना, ३. दोनों दिन अर्धरात्रि में अष्टमी का होना, ४. दोनों दिन अर्धरात्रि में अष्टमी का न होना।

पूर्वदिन यदि रोहिणीयुक्ता निशीथव्यापिनी अष्टमी हो तो सर्वश्रेष्ठ है। नहीं तो अष्टमी को व्रत करना चाहिये। दोनो दिन निशीथव्यापिनी न हो तो परदिन और दोनो दिन अर्धरात्रिव्यापिनी न मिले तो उदयकालव्यापिनी ग्रहण करनी चाहिये। इसमें भी सप्तमी तथा नवमी के वेध और न्यून, सम तथा अधिक भेद से अनेक भेद होते हैं। जिन्हे विस्तार-भय से नही लिखा गया।

## होलिका—दहन

१- पूर्णिमा के दिन प्रदोषव्यापिनी, २- यदि दो दिन प्रदोषव्यापिनी हो तो परदिन की, ३- यदि प्रदोषकाल में भद्रा हो तो भद्रा का मुख भाग(आरम्भ की पांच घटिका) त्याग कर, ४- यदि प्रथम दिन दिनार्ध के बाद भद्रा हो तथा दूसरे दिन प्रदोषकाल में पूर्णिमा न हो तो भद्रा के बाद सूर्योदय से प्रथम, ५- रात्रि भर भद्रा हो तो भद्रा के शेष (पुच्छ) भाग की ३ घटिका में और ६- यदि प्रथम दिन रात्रि भर भद्रा और दूसरे दिन प्रदोषकाल में *चन्द्रग्रहण* हो तथा भद्रा का पुच्छ दिन में सूर्योदय के बाद पड़ता हो तो भद्रा का मुख भाग छोड़ कर बाकी भाग में भद्रा में ही होलिका-दहन करना चाहिये।

## मन्वादि—तिथि

चैत्र शुक्ल में तृतीया और पूर्णिमा, ज्येष्ठ में पूर्णिमा, आषाढ़ में दशमी और पूर्णिमा, श्रावण में कृष्णपक्ष की अष्टमी, भद्रपद में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


तृतीया, आश्विन में नवमी, कार्तिक में द्वादशी और पूर्णिमा, पौष में एकादशी, माघ में सप्तमी, फाल्गुन में अमावस्या और पूर्णिमा ये चौदह तिथियां मन्वादि हैं। वैशाख, मार्गशीर्ष में मन्वादि तिथि नहीं होती। शुक्लपक्ष की पूर्वाह्नव्यापिनी और कृष्णपक्ष की अपराह्नव्यापिनी तिथि लेनी चाहिए। इन तिथियों में पिण्डरहित श्राद्ध करने से भी पितरों को तृप्ति होती है।

## जयन्ती–निर्णय

जयन्तियों के प्रसंग में दश-अवतारों की जयन्ती तिथियां लिखी जाती हैं। जिस देवता की जयन्ती-तिथि हो उस दिन चक्र में लिखे गए समय में उस देवता का बड़े समारोह से पूजन तथा भजन-कथा-उपदेश आदि के द्वारा महोत्सव मनाना चाहिये। जयन्ती महोत्सव मनाने से मनुष्य की सम्पूर्ण कामनाएँ सिद्ध होती हैं।

### जयन्ती–तिथि–चक्रम्

| मास | पक्ष | तिथि | अवतार | समय |
|---|---|---|---|---|
| चैत्र | शुक्ल | ३ | श्रीमत्स्य | अपराह्ण |
| चैत्र | शुक्ल | ६ | श्रीरामचन्द्र | मध्याह्न |
| वैशाख | कृष्ण | ३० | श्रीकूर्म | सायंकाल |
| वैशाख | शुक्ल | १४ | श्रीनृसिंह | सायंकाल |
| वैशाख | शुक्ल | ३ | श्रीपरशुराम | मध्याह्न |
| श्रावण | शुक्ल | ६ | श्रीवाराह | अपराह्ण |
| श्रावण | शुक्ल | ६ | श्रीकल्कि | सायंकाल |
| भाद्रपद | कृष्ण | ८ | श्रीकृष्ण | अर्द्धरात्रि |
| भाद्रपद | शुक्ल | १२ | श्रीवामन | मध्याह्न |
| आश्विन | शुक्ल | १० | श्रीबुद्ध | सायंकाल |

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



# सामग्री–संग्रह

## सन्ध्या–सामग्री

आसन १, माला १, गोमुखी १, पञ्चपात्र २ ,आचमनी २, जलपात्र १, अर्घा १, त्रष्टा १, कुशा, पवित्री, चन्दन, पुष्प।

## तर्पण–सामग्री

आसन १, जलपात्र १, टोपिया १, अर्घा १, पवित्री २, मोटक १, तिल, जौ, चावल, कुशा, पुष्प, चन्दन।

## देवपूजा–सामग्री :

**घर की-** शंख १, घण्टा १, पञ्चपात्र १, आचमनी १, अर्घपात्र १, जलकलश १, आसन २, दीपपात्र १, धूपपात्र १, रोली, नाल (मौली), चन्दन, घी, चीनी, यज्ञोपवीत, चावल, काजल, सोने की टिकड़ी, वस्त्र–श्वेत, वस्त्र–लाल, गेहूँ।

**हलवाई की-** दूध, दही, लड्डू , शिव पूजन में भाँग।

**माली की-** पुष्प, पुष्पमाला, दूर्वा, पञ्चपल्लव, तुलसी, बिल्वपत्र, शमीपत्र।

**पंसारी की-** शहद, सिन्दूर, अबीर, गुलाल, धूप, सुपारी, सफेद तिल, सप्तधान्य, सर्वौषधि, सप्तमृत्तिका, पञ्चरत्न, पीली सरसों, कपूर, केसर, अतर, लौंग, इलायची।

**फुटकर-** नारियल, फल, पान, कलश, सरांई, सिकोरा।

## वसनापूजन–सामग्री

**घर की-** थाली १, कटोरा २, लोटा १, रोली २ तोला, नाल नग २, घी १ छटांक, चावल १ पाव, चीनी १ छटांक, रूई, दियासलाई, पाटा १, गंगाजल, मृत्तिका।

**कपड़े वाले की-** स्वेत वस्त्र सवा गज, लाल वस्त्र एक गज, गुलाबी रेशमी वस्त्र पाव गज, वरण वस्त्र २।

**माली की-** केला-खंभा २, आम का पत्ता १००, पञ्चपल्लव, पुष्प। पुष्पमाला ५, कमल, दूर्वा, बिल्वपत्र, तुलसी।

**कुम्हार की-** कलश १, भाण्ड २, सिकोरा २१।

**हलवाई की-** लड्डू। दूध १ पाव। दही २ छटांक।

**पंसारी की-** सुतली, पञ्चरत्न १, सेर्वौषधि, सिन्दूर, अबीर, गुलाल, केसर, कपूर, चन्दन, धूप, अगरबत्ती, सुपारी २५, लौंग, इलायची, धनिया, हल्दी, मजीठ, कमलगट्टा, पीलीसरसों, शहद, अतर, सप्तमृत्तिका।

**विशेष-** नारियल १, डाभ २, पान २५, फल २५, गेहूं ५ छ०, जनेऊ ५-७, गुड़, मूर्ति- गणेश, लक्ष्मी, वसना, चांदी या तांबे की घंटी १, तामड़ी १, सोने की टिकड़ी २, रुपया, पैसा, खेरज।

**खाते वाले की-** बही ५-७-९-११-१३-१५-२१, दवात, कलम, स्याही, पाट, सोरठा, रेती आदि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


## विशिष्ट सामग्रियों का विवेचन

**पञ्चपल्लव-** बड़, पीपल, आम, पाकर, गूलर।

**पञ्चरत्न** सोना, हीरा, मोती, पुखराज, नीलम। (अथवा सोना, चांदी, तांबा, मूंगा, मोती।)

**पञ्चगव्य** १ भाग गोबर, २ भाग गोमूत्र, ४ भाग दूध, २ भाग घी, २ भाग दही।

**पञ्चामृत-** गौ का दूध (यथेच्छ) तथा दही, घी, मधु व चीनी (समभाग)।

**पञ्चधान्य-** तिल, मूग, जौ, उरद, चावल।

**सप्तधान्य-** तिल, मूङ्ग, जौ, उरद, चावल, गेहूं, काङ्गनी।

**सप्तमृत्तिका-** घोड़ा, हाथी, राजद्वार, गौ, नदीसंगम, चौरस्ता, तालाब, बल्मीक–इन स्थानों की मृत्तिका।

**सर्वौषधि-** मुरा, जटामांसी, बच, कूट, शिलाजीत, हल्दी, दारुहल्दी, आमला, श्वेतचन्दन, नागरमोथा।

**नवसमिधा-** आक, ढाक, खैर, ऊंगा, पीपल, गूलर, जांट दूर्वा, कुशा।

**नवरत्न-** माणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया–ये रत्न क्रमशः नौ ग्रहों के हैं।

**दीपावली पूजन में विशेष सामग्री-** दीपक, बाती, तेल, नैवेद्य, चक, बतासा, धान की खील।

## नवरात्र में दुर्गापूजा की विशेष सामग्री

देवता के वस्त्र तथा पूजा के वस्त्र, कलश- तांबे या मृत्तिका का १, तामड़ी १, पुण्याहवाचन के लिये घण्टी १, कांसे की कटोरी २, ब्राह्मण-वरण के लिये- धोती, दुपट्टा, अंगोछा, आसन, माला, गोमुखी, पञ्चपात्र, आचमनी, तष्टा, अर्घा, अंगूठी, देवपूजा के वस्त्र- स्वेत वस्त्र, लाल वस्त्र, रेशमी वस्त्र, धोती, दुपट्टा, चूनड़ी, केलाखंभ ४। उपर्युक्त सामग्री इच्छानुसार लें।

## सांकल्पिक श्राद्ध सामग्री

कुशा, दो कुशाओं की पवित्री १, तीन कुशाओं की पवित्री १, तीन कुशाओं का मोटक १, अक्षत, तिल, पीली सरसों, चन्दन, श्वेत पुष्प, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, यज्ञोपवीत, वस्त्र (धोती, अङ्गोछा) मधु, दक्षिणा, भोजन-सामग्री।

## नित्य हवन सामग्री

ताम्र कुण्ड या वेदी, घृत, चरु (तिल, चावल, जौ उत्तरोत्तर अर्द्धभाग) घी, चीनी, मेवा, सुगन्धित द्रव्य यथेच्छ, कुशा तथा दूर्वा, अग्नि स्रुव, घृतपात्र, सामान्य पूजन सामग्री।

## विवाह सामग्री

**घर की-** सिकोरा २०, लोढ़ी १, वर के वस्त्र २, कन्या के वस्त्र २, मेंहदी १ छंटाक, आटा १ छ०, रोली १ तोला, घृत आधा सेर, मिठाई आधा सेर, नाल ४-५, चावल आधा सेर, पाटा बड़ा २, छोटा १, गंगाजल, मृत्तिका, दियासलाई, रूई, दही १ छ०।

**कुम्हार की-** कलश १, गमला १, वारुंडा ४।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh


**खाती की-** खूंटी ४, पाटा १, स्रुवा १, तोरण १।

**माली की-** वर-कन्या का हार २, पुष्प, पुष्पमाला, दूर्वा, आम का पत्ता, पञ्च पल्लव।

**बर्तनवाले की-** पीतल की लुटिया २, पीतल का लोटा १, कांसे की कटोरी ४, कांसे का कटोरा १, तांबे की घंटी १।

**पंसारी की-** सर्वौषधि १ पुड़िया, पञ्चरत्न १ पु०, हल्दी की गांठ ४, सिन्दूर, शहद, केसर, सुपारी २५, धूप, लौंग, इलायची, पीलीसरसों।

**विशेष-** जनेऊ ५, नारियल १, सांठी ४, कूकड़ी १, जांट की पत्ती, धान की खील, छाज १, गोबर, श्वेतवस्त्र १ गज, लालवस्त्र आधा गज, शंख १, गेहूं १ छ०, पान २५, फल, आम्रकाष्ठ १ सेर।

**ब्राह्मण वरण सामग्री-** धोती, अंगोछा, लोटा, अंगूठी, जनेऊ।

## उपनयन सामग्री

**घर की-** नाल ३-४, रोली २ तोला, घृत आधा सेर, रूई, दियासलाई, चीनी आधा सेर, गोबर, गोमूत्र, मूंज की रस्सी(तागड़ी), आरण ५-७, आभूषण, उबटन, चौकी १, पाटा १, दर्पण १, लाठी १, छाता १, काजल, ५ वस्त्र गुरु के, शिष्य के वस्त्र, आरती की थाली, पानी की घंटी, चौपड़ा १, सूत की आंटी १, आटा, गंगाजल, मृत्तिका।

**पंसारी की-** केसर, कपूर धूप, पञ्चमेवा, सुपारी ४०, लौंग इलायची, अबीर-गुलाल, अतर, शहद, सिन्दूर, सर्वौषधि, पीली सरसों, तुलसी, लाल रङ्ग, पीला रंग, हरा रंग, काला रंग, सिरयाई, गूगल, छाडछबीला, कपूरकाचरी, बेलगिरी, चन्दन चूरा, काला तिल, पञ्चरत्न १ पु०।

**माली की-** पुष्प, पुष्पमाला, तुलसी, दूर्वा, कुशा, आम का पत्ता १००, बड़ का ७, पीपल का ७, पाकर का ७, गूलर का ७, जामुन का ७, ढाक का दंड १, समिधा, आक १, ढाक १, खैर १, उंगा १, पीपल १, गूलर १, जांट १, दूर्वा, कुशा, केले का खंभा ४, ऊँगा की दातुन १।

**बर्तन-** ताम्र कलश १, ताम्र घंटी १, कांसे की कटोरी ४, कांसे का कटोरा १, छायापात्र १, टोपिया पीतल का १, गिलास ८, पञ्चपात्र २, चमची २, अर्घा २, तामड़ी २, लोटा २।

**कुम्हार की-** कलश १, सराईं २०।

**कपड़े वाले की-** रेशमी दुपट्टा १, श्वेत वस्त्र १० गज, लाल वस्त्र १ गज, धोती २, अङ्गोछा २, चूनरा १, रेशमी वस्त्र पाव गज।

**हलवाई की-** लड्डू, पेड़ा, दूध, दही।

**साग गोला की-** नारियल ५, गुड़, पान ४०-५०, केला १२, फल पत्तल १५।

**अन्न-** चावल, गेहूं, उरद, तिल, जौ।

**फुटकर-** मृगछाला १, खड़ाऊं १ जोड़ा, मखाना, तिल, तेल २ छ०, जनेऊ २०, गोमुखी २, माला २, आसन २, काठ की पट्टी १, सोने की टिकड़ी ३-४।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

# रुद्राष्टक

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं ।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकालकालं कृपालं गुणागारसंसारपारं नतोहं ।
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरं ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा लसद्भालबालेंदु कंठे भुजंगा ।
चलत्कुंडलं भ्रूसु नेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ।
मृगाधीशचर्मांबरं मुंडमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।
त्रयःशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ।
कलातीतकल्याणकल्पांतकारी सदा सज्जनानंददाता पुरारी ।
चिदानंदसंदोहमोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ।
न यावद् उमानाथपादारविंदं भजंतीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शांतिसंतापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीशशंभो ।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठंति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति ॥

श्रीगोस्वामी तुलसीदास विरचितं रुद्राष्टकस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥८

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमच्छटा
विडम्बिकण्ठकन्धरारुचिप्रबन्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥९

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥१०

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमस्फुर-
द्धगद्धगद्विनिर्गमत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥११

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदा शिवं भजे ॥१२

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।
विमुक्तलोललोचनाललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथागतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ॥१४

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः॥

॥ श्रीरावणविरचितं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh